

Outlook  
group

IN ASSOCIATION WITH

D A P  
Production House  
तस्वीर बनते भारत की  
DINESH ANAND PRODUCTION

₹1050/-

EARSH SE ARSH TAK

Outlook

Outlook  
group

आउटलुक

बिहार की  
शख्तियतें

फर्श से  
अर्श  
तक



# आउटलुक





चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर  
इंद्रनील रॉय

संपादक- आउटलुक अंग्रेजी  
रूबेन बनर्जी

संपादक- आउटलुक हिंदी  
हरवीर सिंह

प्रकाशक  
संदीप कुमार घोष

प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेशन  
प्रदीप रावत

एडिटोरियल कोऑर्डिनेशन  
शशिधरन कोलरी

मार्केटिंग  
श्रुतिका दीवान

लेखन  
दिनेश आनंद

प्रोजेक्ट सहयोग  
दिनेश आनंद प्रोडक्शन

फोटोग्राफ  
दीपक कुमार, सुरेश कुमार पांडे

डिजाइनर  
प्रवीन कुमार

विजुअलाइजर  
रंजीत सिंह

प्रोडक्शन  
शशांक दीक्षित

प्रकाशन कार्यालय  
आउटलुक पब्लिशिंग (इंडिया) प्रा. लि.  
ए.बी.-10 सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-110029

प्रिंटिंग प्रेस  
गैलेक्सी ऑफसेट (इंडिया) प्रा. लि.  
184 सैक्टर-8 आइएमटी मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा, 2019 में प्रकाशित

Disclaimer

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form, or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the publisher.

Edited and Designed by Outlook Publishing (India) Pvt Ltd

आउटलुक







## प्रस्तावना

बिहार का लंबा और समृद्ध इतिहास रहा है। दुनिया का पहला गणतंत्र वज्जी, यहीं था। वैशाली इसकी राजधानी थी। यह गणतंत्र ईसा पूर्व छठी सदी में ही बन गया था। बिहार के मगध का मौर्य साम्राज्य भारत का पहला साम्राज्य था। दरअसल, मगध करीब एक हजार वर्षों तक भारत की सत्ता, शिक्षा और संस्कृति का केंद्र रहा। बिहार बुद्ध और महावीर जैसे धर्म गुरुओं की भी भूमि है।

लेकिन बाकी भारत की तरह बिहार भी अंधकार के युग में चला गया। दुख की बात है कि यहां अंधेरा भारत के दूसरे कई हिस्सों की तुलना में ज्यादा समय तक रहा। 11 करोड़ आबादी वाला बिहार तीसरा बड़ा राज्य है। झारखंड के अलग होने से यहां आबादी का घनत्व भी बढ़ा है। यह 1,106 है जो पूरे देश में सबसे ज्यादा है। इस भीड़ में स्वास्थ्य और शिक्षा की बुरी तरह अनदेखी हुई।

लेकिन अब यहां उम्मीद की किरण दिखने लगी है। यह कॉफी टेबल बुक बिहार के उन प्रतिष्ठित लोगों को सामने लाने का प्रयास है जो इसकी महिमा को पुनर्स्थापित करने और राज्य को भारत के मुकुट में एक बेशकीमती हीरे के रूप में स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

रिसर्च बताती है कि आम लोगों को स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराने में बिहार निजी अस्पतालों पर निर्भर है। राज्य में स्वास्थ्य पर निजी और सरकारी खर्च का अनुपात भारत में दूसरे नंबर पर है। दिल्ली के सुपर-स्पेशलिटी अस्पतालों से बिहार के गरीबों को आयुष्मान भारत स्कीम के तहत इलाज करने के लिए कहा जाता है क्योंकि राज्य में ऐसे अस्पताल पर्याप्त संख्या में नहीं हैं।

ऐसे परिदृश्य में उन डॉक्टरों के बारे में जानना जरूरी है जो राज्य में बदलाव ला रहे हैं। इस कॉफी टेबल बुक में आधुनिक युग के ऐसे कई चरक और सुश्रुत की चर्चा है। इसमें न सिर्फ एलोपैथी के डॉक्टरों के काम को सराहा गया है, बल्कि होम्योपैथी जैसी वैकल्पिक विधा का भी जिक्र है। किताब में फिजिशियन और सर्जन, दोनों की पहचान की गई है।

नालंदा और विक्रमशिला के स्वर्णिम युग को वापस लाने के लिए बिहार को शिक्षा क्षेत्र से उम्मीदें हैं। कॉफी टेबल बुक में उन शिक्षाविदों के बारे में बताया गया है जो बिहार का चेहरा बदल रहे हैं। कोई भी राज्य संगीत, साहित्य और समाज सेवा के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। बुक में इन क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोगों को भी उचित स्थान दिया गया है।

कुल मिलाकर यह कॉफी टेबल बुक बिहार के उन लोगों को सराहने की एक कोशिश है जिनका योगदान अतुलनीय है। ऐसे लोग हम सबके लिए रोल मॉडल हैं, खासकर बिहार के उन युवाओं के लिए जिनके कंधों पर राज्य के भविष्य की जिम्मेदारी है।

*Indranil*  
इंद्रनील राय



CONTENTS

प्रस्तावना ..... 6

अजय मैतिन ..... 8

डॉ. अनिल कुमार ..... 12

डॉ. अभय नारायण राय ..... 16

अशोक अग्रवाल ..... 20

आनंद कुमार ..... 24

डॉ. आशुतोष शरण ..... 28

डॉ. आशुतोष त्रिवेदी ..... 32

प्रो. के.सी. सिन्हा ..... 36

क्लेमेन्ट फ्लोरियन ..... 40

पद्मश्री गोदावरी दत्त ..... 44

डॉ. गौतम मोदी ..... 48

डॉ. ( कैप्टन ) दिलीप कुमार सिन्हा ..... 52

डी.एन.सिंह ..... 56

पद्मश्री डॉ. नरेंद्र प्रसाद ..... 60

डॉ. नवनीत कुमार ..... 64

प्रियम्बद सिंह ..... 68

डॉ. प्रवीण आनंद ..... 72

एम.के. झा..... 76

स्व. डॉ. आर.पी. सिंह ..... 80

पद्मश्री प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा ..... 84

ई.रबींद्र कुमार सिंह ..... 88

पद्मश्री डॉ. रबींद्र नारायण सिंह ..... 92

डॉ. रविशंकर सिंह ( बच्चन सिंह ) ..... 96

डॉ. रिदु कुमार शर्मा ..... 100

पद्मश्री डॉ. विजय प्रकाश सिंह ..... 104

डॉ. वरुण कुमार ..... 108

विशाल आदित्य ..... 112

श्यामली नारायण ..... 116

डॉ. श्रवण कुमार ..... 120

संजय चौधरी ..... 124

डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह ..... 128





अजय मैतिन

## मुश्किलों में भी नहीं मानी हार

साधना और संघर्ष भरी यह कथा एक अद्भुत जीवन यात्रा का प्रतिबिम्ब है। कोई व्यक्ति आत्म प्रेरणा और दुर्गम परिगम के द्वारा कैसे निरंतर प्रगति कर सकता है, यह गाथा उसी का दुर्लभ उदाहरण है। साधना और समृद्धि के प्रस्तुत प्रतीक हैं अजय मैतीन जिन्होंने शून्य से शिखर तक उपलब्धि अर्जित की है। अजय की संघर्ष यात्रा मात्र तीस वर्षों की कहानी है। उनका कहना है कि उन्होंने अपने जीवन में जो कुछ और जितना भी प्राप्त किया, वह निरंतर परिष्कृत होते विचारों, लक्ष्य प्राप्ति के लिए वेगपूर्ण प्रवाह और समाज की सर्वोच्च सत्ता के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक है। अपने मार्ग के प्रचंड प्रवाह के बीच आई सशक्त बाधाओं को पराजित कर अपने पूर्व- निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करना, इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। जीवन एक आत्म निर्माण की प्रक्रिया है, आज अजय मैतीन एक लोकप्रिय मित्र कर्मठ व्यापारी समाधान प्रस्तुतकर्ता विशेष परामर्शदाता और एक विश्वसनीय प्रतिष्ठान ही नहीं बल्कि एक सुसंगठित संस्था के समर्पित और निष्ठावान नेता भी हैं। स्वाभाविक है कि उनके अधिकांश गुण और विलक्षण प्रतिभा उनके स्वर्गीय पिता विश्वनाथ मैतीन का वरदान है जो स्वयं भी एक ख्याति प्राप्त प्रिंटिंग व्यवसायी रहे हैं। सच तो यह है कि विपरीत परिस्थितियों के बीच भी एक परिवार मात्र साधना और संघर्ष के सहयोग से कैसे उन्नाति कर सकता है, कार्यकुशलता के नए मापदंड स्थापित कर सकता है, यह अजय मैतीन की पारिवारिक पृष्ठभूमि से स्पष्ट है





बिहार के गया में जन्मे अजय मैतिन की प्रारंभिक शिक्षा बाँकीपुर स्थित संत जोसेफ कॉन्वेंट हाई स्कूल में हुई। तत्पश्चात कक्षा 2 में इनका नामांकन पटना के प्रसिद्ध संत जेवियर्स स्कूल में हुआ और इसी विद्यालय से अजय ने 1979 में मैट्रिक की परीक्षा पास की! 1980 में अजय ने पटना विश्वविद्यालय के अधीन पटना कॉलेज में अपना नामांकन करवाया और 1982 में आई.ए की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। 1984 में पटना कॉलेज से राजनीति विज्ञान में ऑनर्स करने के पश्चात 1985 में अजय पटना विश्वविद्यालय के एम.बी.ए कार्यक्रम से जुड़े और पढ़ाई के साथ-साथ रोजगार की तलाश शुरू की। एक मेधावी छात्र के रूप में पहचान रखने वाले अजय के चाचा तारकेश्वर मैतिन पटना वाणिज्य महाविद्यालय के विश्वविख्यात प्रोफेसर हैं और पिता विश्वनाथ प्रसाद मैतिन प्रिंटिंग के कारोबार की नामी शख्सियत थे। 50 के दशक में अजय के पिता ने मुंबई जाकर द टाइम्स ऑफ़ इंडिया में प्रिंटिंग से संबंधित कामों का प्रशिक्षण हासिल किया और फिर गया वापस आकर

तारा प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। बदलते समय के साथ कारोबार भी बढ़ता चला गया और फिर विश्वनाथ मैतिन ने अपने प्रिंटिंग व्यवसाय को पटना शिफ्ट कर लिया।

बातचीत के दौरान अजय बताते हैं कि उस दौर में मेरे पिता ने प्रिंटिंग जगत में जो मुकाम हासिल किया था, लोग आज भी उसकी मिसाल देते हैं। हमने वो दौर भी देखा है जब पिता के व्यवसाय से जुड़कर 75 से अधिक लोग काम

**अजय के अनुसार  
“भविष्य में कठिनाइयाँ आएंगी।  
नई चुनौतियों को मेरा इंतजार होगा।  
मेरा संकल्प है कि मैं पूरी निष्ठा एवं  
सच्चाई से लक्ष्य को प्राप्त करूंगा।”**

करते थे और वह वक्त भी देखा जब घर के सारे जेवर बिक गए और हमारा प्रेस बंद हो गया। पिता जी कहा करते थे कि कठिन परिश्रम के साथ ईमानदारी के बूते आगे बढ़ने वाले न केवल अपनी मंजिल खुद तय करते हैं बल्कि उन्हें सफलता अवश्य मिलती है।

प्रिंटिंग के पारिवारिक व्यवसाय होने के कारण अजय को प्रिंटिंग व्यवसाय की अच्छी जानकारी थी। ऐसे में अजय ने 1985 में पटना से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक द टाइम्स ऑफ़ इंडिया के अधिकारियों से संपर्क किया और प्रिंटिंग सलूशन प्रोवाइडर के तौर पर काम करने की इच्छा जाहिर की। अंग्रेजी अखबार के प्रबंधन को यह प्रस्ताव पसंद आया और अजय की कंपनी ग्राफिक ट्रेड्स ने टाइम्स ऑफ़ इंडिया के साथ काम शुरू किया! कम खर्च में अच्छी छपाई और प्रिंटिंग के तकनीकी ज्ञान को देखकर बिहार के प्रायः सभी हिंदी और अंग्रेजी दैनिक ग्राफिक ट्रेड्स से जुड़ते चले गए और अजय की शोहरत तेजी से बढ़ने लगी। अजय

बताते हैं कि 1987-88 तक हमने करीब-करीब बिहार से प्रकाशित होने वाले सभी समाचार पत्रों के साथ काम किया। और तो और, 1990 के आसपास बिहार के जितने भी प्रमुख प्रिंटिंग प्रेस थे उन सभी के सलूशन प्रोवाइडर के तौर पर हमने काम किया।

90 के दशक में प्रिंटिंग व्यवसाय करवट बदल रहा था साथ ही कंप्यूटर युग का आरम्भ हो चुका था। ऐसे में अजय मैतिन ने बड़ा फैसला लिया और आई.टी क्षेत्र में काम करने का मन बनाया, इस काम के लिए अजय पूरी तरह तैयार नहीं थे लेकिन उन्हें इस क्षेत्र में संभावनाएँ दिखाई दे रही थीं। ऐसे में मैतिन को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अजय कहते हैं कि शुरुआती कई महीनों में यदि किसी जिले से माउस में खराबी की खबर भी मिलती तो मैं अपनी गाड़ी से लम्बी दूरी तय कर खुद वहां जाता ताकि उन्हें संतुष्ट कर सकूँ! मेरी इस सोच के कारण अधिकारियों का भरोसा मुझपर बढ़ने लगा, साथ ही उन्हें यह भी महसूस हुआ कि हमारा उद्देश्य केवल आर्थिक नहीं बल्कि सरकारी कामों में उत्पन्न बाधाओं को दूर करना भी है। गुजरते समय के साथ मैंने देखा कि मेरी प्रतिस्पर्धा, ईमानदारी, समर्पण, मेहनत के चलते अधिकारियों के भरोसे को कायम रखने का मेरा हर प्रयास सफल रहा।

राज्य एवं केंद्र की सरकारों के साथ काम के लम्बे

अनुभव के बीच 2003-07 में अजय मैतिन को राष्ट्रीय स्तर पर कई अवार्ड्स मिले। 2006 में वे इंडियन एक्सप्रेस के एंटरप्राइस वार इमर्जिंग ईस्ट के पुरस्कार से सम्मानित हुए। इसके अलावा 2008 में उन्हें भारत सरकार के माइक्रो, स्मॉल एवं मीडियम एंटरप्राइज द्वारा स्पेशल रेकग्निशन राष्ट्रीय अवार्ड से, माननीय मुख्य अतिथि एवं तत्कालीन प्रधानमन्त्री डॉ.मनमोहन सिंह की मौजूदगी में नवाजा गया। इसके अलावा उन्हें 2009 में संत जेवियर्स अल्मुनि एसोसिएशन द्वारा सिग्नीफिकेंट अचीवमेंट अवार्ड और 2011 में स्वीडन की प्रसिद्ध कंपनी एक्सिस कम्युनिकेशन द्वारा बेस्ट इमर्जिंग



सिस्टम इंटीग्रेटर अवार्ड और 2007,2008 एवं 2013 में प्रसिद्ध पत्रिका सी.आर.एन द्वारा सी.आर.एन एक्सेलेंस अवार्ड से नवाजा जा चुका है। आई.टी क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि अजय जिस प्रकार का कार्य आज कर रहे हैं उस स्तर का कार्य कौशल एवं क्षमता बिहार से बाहर की कंपनियों के पास है ही नहीं लेकिन अपने दम पर, जटिल समस्याओं एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में संयम, विवेक, धैर्य से इस प्रकार का काम करने वाले अजय संभवतः प्रदेश के पहले और अकेले ऐसे व्यक्ति हैं।

बिहार सरकार के करीब करीब सभी विभागों के लिए काम कर चुकी अजय की कंपनी ने अब तक अपने राज्य और देश की कई महत्वपूर्ण संस्थाओं और कंपनियों के साथ काम किया है। ऐसी सरकारी एवं निजी संस्थाएं कंपनियों की टेक्नीकल योग्यताओं के आधार पर ही चयन करती है और ऐसी कुछ बड़ी कंपनियों में एक नाम आज ग्राफिक ट्रेड्स प्राइवेट लिमिटेड का भी लिया जाता है।

अजय मैतिन कहते हैं कि जिन्दगी में अच्छे और अनुभवी लोगों से मुलाकात काफी अहमियत रखती है जिनके साथ बिताये कुछ पल आपको अनुभवों से भर देते हैं। मेरे जीवन में पटना से प्रकाशित हिंदी दैनिक हिन्दुस्तान के मुखिया आदरणीय वाई.सी.अग्रवाल और मेरे चाचा तारकेश्वर मैतिन का बहुमूल्य योगदान रहा है और इन्हे मैं अपना पथ प्रदर्शक मानता हूँ अजय अपने पथप्रदर्शकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इस यात्रा में उन्होंने निडरता और साहस से जीवन जीने एवं अनुशासनबद्ध कर्मयोगी बने रहने को निरंतर प्रेरित किया है।

एक मुलाकात के दौरान अजय की पत्नी ममता ने कहा कि उन्होंने हमेशा कुछ बड़ा करने की सोची। इसकी यह बानगी ही है कि 2014 एवं 2019 के लोकसभा चुनाव में झारखण्ड राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा उन्हें एक बड़ी जिम्मेवारी सौंपी गई जिसके तहत अजय की कंपनी ने प्रदेश के 7 हजार बूथों पर पोलिंग के लाइव वेबकास्टिंग के कार्य को संपन्न किया। इसके अलावा बिहार सरकार, पटना स्मार्ट सिटी से अत्याधुनिक, अभूतपूर्व एवं उच्च तकनीक ओपन एयर थिएटर का काम भी अजय की कंपनी को मिला है जिसमें बिहारवासियों के लिए सिनेमा, वर्ल्ड कप मैच आदि के इतेजाम तो होंगे ही, साथ ही कई प्रकार के इवेंट्स के प्रसारण की भी व्यवस्था होगी। लॉ की पढ़ाई की तैयारियों में जुटी अजय मैतिन की पुत्री अनन्या और इंजीनियरिंग की तैयारियों में जुटे पुत्र प्रांशु अजय कहते हैं कि हमारी दादी जानकी देवी बताती थीं कि अजय कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति के दूरदर्शी इंसान हैं ... और आज हमें लगता है कि हमारे पापा ने दादी जी की बातों को सच कर दिखाया।





डॉ. अनिल कुमार

## औरों से अलग चलकर बनाई पहचान

हममें से कितने लोग ऐसे हैं जो कैरिअर के रूप में चमकदार भविष्य को छोड़कर एक अनिश्चित राह पर चलने का हौसला करते हैं? निश्चित रूप से ऐसे लोगों की संख्या उंगलियों पर गिने जाने योग्य होती है। हालांकि यह भी सच है कि समाज में पहचान बनाने में ऐसे ही लोग कामयाब होते हैं जो कि कुछ अलग करने का हौसला रखते हैं। प्रस्तुत आलेख के नायक ऐसे ही व्यक्ति हैं जिनके पिता चाहते थे कि बेटा पढ़-लिखकर गांव का नाम रौशन करे और बेटे ने पिता को निराश नहीं किया। उसने न सिर्फ गांव और अपने राज्य का नाम रौशन किया बल्कि







देश की बहुमूल्य धरोहर आयुर्वेद को जन-जन के बीच लोकप्रिय बनाने में पूरा जीवन लगा दिया। हम बात कर रहे हैं डॉक्टर अनिल कुमार की, जो देश में एचआईवी के बारे में शोध एवं इसके सफल इलाज के क्षेत्र में देश के चुनिंदा नामों में शामिल हैं। भगवती आयुर्वेद प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन के रूप में मेडिसीन के क्षेत्र में उनकी यात्रा वाकई शानदार रही है।

बिहार के नालंदा जिले के सोहसराय में 1967 में जन्मे डॉक्टर अनिल कुमार की शुरुआती शिक्षा गांव के ही प्रयाग लाल साहू हाई स्कूल में हुई। उनके पिता सोहसराय स्थित बरारा ग्राम पंचायत के मुखिया और व्यापारी थे। उनकी इच्छा थी कि उनका बेटा अच्छी शिक्षा पाकर कुछ नया करे और गांव एवं परिवार का नाम रौशन करे। स्कूल की पढ़ाई के बाद अनिल कुमार ने इंटर और बीएससी करने के लिए बिहार शरीफ के किसान कॉलेज को चुना। अपने भविष्य को लेकर अनिल पहले से स्पष्ट थे इसलिए बीएससी करने के बाद कुछ भी सोचे बिना उन्होंने आयुर्वेद के क्षेत्र में काम करने का फैसला लिया और 1998 में आयुर्वेदिक चिकित्सक की डिग्री हासिल की।

दरअसल उन्होंने बहुत ही कम उम्र से यह देखा था कि लोगों को इलाज के लिए अपना घर-बार तक गिरवी रखना या बेचना पड़ता है और इसके बावजूद बीमारी फिर लौटकर आ सकती है। ऐसे में उन्होंने एलोपैथी के बजाय आयुर्वेद पर ध्यान केंद्रित किया। बुजुर्गों में पाचन और जोड़ों के दर्द जैसी बीमारियां तो बार-बार उभर आती हैं। इसी वजह से डॉक्टर अनिल ने इन बीमारियों के स्थाई समाधान के लिए आयुर्वेद पर अपना ध्यान केंद्रित किया। आयुर्वेद के अपने शुरुआती अध्ययन में उन्होंने पाया कि भारत की इस पारंपरिक चिकित्सा विधि में ढंग से कोई शोध ही नहीं हुआ है जबकि इसमें बीमारियों के टिकाऊ इलाज की अनंत संभावनाएं छिपी हैं। यही सोच कर जन साधारण की सेवा में प्रभावी आयुर्वेद के प्रयोग के लिए 2004 में उन्होंने भगवती आयुर्वेद की स्थापना की। आयुर्वेदिक विज्ञान में उनके अनुभव और गहरी अभिरुचि एवं विभिन्न औषधीय पौधों की जानकारी ने उन्हें उसी साल आयुर्वेदिक दवा निर्माण का लाइसेंस भी दिलवा दिया।

इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने राजगीर के निकट एक प्रयोगशाला स्थापित की। कफ क्योर, रूमागोल्ड कैप्सूल, डी क्योर टेबलेट, लिक्वेक्स सीरप और लिटोन सीरप जैसी दवाओं के जरिये भगवती आयुर्वेद ने बाजार में कदम रखा। इन दवाओं को बाजार से बेहद सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। लिक्वेक्स जैसी दवा लंबी अवधि में प्रभावी इलाज मुहैया कराती है क्योंकि यह शरीर के संपूर्ण रासायनिक कंस्ट्रिक्ट्यूशन पर काम करती है और शरीर के तीन दोषों-वात, कफ और पित्त को संतुलित करती है।



डॉक्टर अनिल ने अपनी प्रैक्टिस के दौरान पाया कि उनकी कई दवाएं जैसे कि लिटोन, एनीमिया तथा अन्य संबंधित बीमारियों से जुड़ रहे उनके मरीजों की रोग प्रतिरक्षा प्रणाली और ब्लड काउंट को बेहतर करने में बहुत ही कारगर हैं। इस तथ्य ने उन्हें आयुर्वेद के जरिये दुनिया के सबसे घातक रोगों में से एक एचआईवी का इलाज खोजने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने पाया कि एचआईवी के रोगी सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में बढ़ रहे हैं। मगर उन्हें जिस तरह का इलाज मिल रहा है, उसे देखकर उन्हें दुख हुआ। उन्होंने अक्सर कई एचआईवी रोगियों को दयनीय जीवन जीते देखा है। इन रोगियों में से ज्यादातर एलोपैथिक चिकित्सा पर निर्भर हैं, जो केवल कुछ समय के लिए वायरस को दबा रहा था और धीरे-धीरे उनकी प्रतिरक्षा क्षमता को कमजोर कर रहा था। इससे वे कई प्रकार के कम प्रतिरक्षा-संबंधी बीमारियों के से ग्रस्त हो गए। इसके बाद उन्होंने शरीर की प्रतिरक्षा-क्षमता को मजबूत बनाने वाले औषधीय पौधों को लेकर गंभीर आयुर्वेदिक शोध आरंभ कर दिया।

यह एक लंबी और कठिन यात्रा थी क्योंकि डॉक्टर अनिल को वित्तीय कठिनाइयों के साथ-साथ सामाजिक सोच की वजह से एचआईवी मरीजों के साथ काम करने को लेकर भी कठिनाइयों से जूझना पड़ा। मगर इस बीमारी के उन्मूलन और

इसका स्थाई प्रभावी इलाज तलाशने की दृढ़ इच्छा शक्ति ने डॉक्टर अनिल को लगातार प्रेरित किया। आखिरकार उन्होंने भगवती कॉन्स्टॉप के रूप में एक पथप्रवर्तक समाधान तलाश ही लिया। आयुर्वेद की यह दवा न सिर्फ शरीर की रोग प्रतिरक्षा प्रणाली को पुनःस्थापित करती है बल्कि मानव शरीर से एचआईवी के सारे वायरस को मार देती है। इसके कारण एचआईवी का मरीज पूरी तरह सामान्य जीवन जी सकता है।

डॉक्टर कुमार का शोध न सिर्फ सफल हुआ बल्कि इससे उन्हें अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से मानवता की सेवा करने का संतोष भी मिला। आज भी डॉक्टर अनिल एचआईवी के हर मरीज की पूरी जांच और उनमें मौजूद सीडी4 और वायरल लोड की मौजूदगी पर निगाह रखते हैं। मरीजों का नियमित फॉलोअप किया जाता है और बीमारी में हर सुधार को दर्ज किया जाता है। डॉक्टर अनिल कई एचआईवी मरीजों का सफल इलाज कर सामान्य जीवन में वापस भेज चुके हैं।

डॉ. अनिल आयुर्वेद को उच्चतम मानकों पर लाने के लिए लगातार शोध कर रहे हैं। इससे उन्हें अपार विश्वास और सम्मान मिला है। उन्होंने कई मीडिया कार्यक्रमों में भाग लिया और अपने अनुभव साझा किए। स्वास्थ्य क्षेत्र में उनकी सफलताओं को देखते हुए मीडिया के द्वारा उन्हें बिहारी अस्मिता सम्मान और हेल्दी लीविंग अवार्ड प्रदान किया गया है।



डॉ. अभय नारायण राय

## पेशे को बनाया मिशन

गया स्थित अभय इंस्टीट्यूट ऑफ मैडिकल साइंसेज के संस्थापक डॉ. अभय नारायण राय ने अमेरिका से मिले नौकरी के प्रस्ताव को ठुकरा अपने देश की सेवा करने का संकल्प लिया। गरीब रोगियों के प्रति अपने समर्पण उनके त्वरित इलाज और सहानुभूति के बल पर ही वे आज इस मुकाम पर पहुंचे हैं। राज्य के गरीब तबके के मरीजों के लिए वे मसीहा जैसे हैं

इसके बाद उन्होंने मेडिकल क्षेत्र को प्रोफेशन बनाने का फैसला किया और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के चिकित्सा विज्ञान संस्थान (आईएमएस) से एमबीबीएस और फिर एमडी की डिग्री हासिल की। आईएमएस-बीएचयू में मेडिकल रजिस्ट्रार और लेक्चरर के रूप में सेवा देने के बाद डॉक्टर राय उच्च शिक्षा के लिए 1973 में ब्रिटेन गए जहां उन्होंने महज छह महीने में लंदन से एमआरसीपी की उपाधि हासिल की। इसके बाद एक वर्ष तक उन्होंने मेडिसिन में एसएचओ के रूप में काम किया और फिर पश्चिमी इन्फर्मरी ग्लासगो में दो साल तक कार्डियोलॉजी के रजिस्ट्रार के रूप में काम करने के बाद आखिरकार साल 1976 में डॉ. राय देश की सेवा करने भारत लौट आए।

ब्रिटेन से लौटने से पहले डॉक्टर राय को अमेरिका में ग्रीन कार्ड सुविधाओं के साथ रेजिडेंट इन कार्डियोलॉजी के रूप में नौकरी का प्रस्ताव मिला लेकिन अमेरिका में काम करने के बदले उन्होंने देश की सेवा करना पसंद किया। उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक कैरियर को देखते हुए डॉ. राय एफआरसीपी (ग्लासगो) से भी सम्मानित किया गया।





डॉ. राय अनुराग नारायण मेमोरियल मगध मेडिकल कॉलेज, गया के साथ लंबे समय से जुड़ाव रहा। यह वह जगह है जहां से उनकी यादें जुड़ी हैं। इस कॉलेज में 1976 में उन्होंने एक सहायक प्रोफेसर के रूप में प्रवेश किया और सिर्फ दो साल बाद 1978 में उन्हें एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत कर दिया। लंबे शैक्षणिक अनुभव के साथ साल 1982 में उन्हें प्रोफेसर बनाया गया और उन्होंने 2001 तक यहां एक प्रोफेसर के रूप में काम किया और 2002 में प्राचार्य के रूप में यहां से सेवानिवृत्त हुए। उनके कई छात्र और सहकर्मी आज भी डॉक्टर राय को एक उत्कृष्ट चिकित्सक और शिक्षक के रूप में याद करते हैं। सेवानिवृत्ति के इतने साल बाद भी डॉक्टर राय के

कार्य भुलाए नहीं भूलते। उन्होंने गया में अभय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (AIMS) की स्थापना की है। वे इस संस्थान के मुखिया और मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष हैं। पूरे मगध परिक्षेत्र में अभय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एकमात्र सुपर-स्पेशियलिटी संस्थान है। डॉक्टर राय आईएमए, आईएमएएएमएस, एपीआई, सीएसआई, आईसीसी, एचएसआई और रेड क्रॉस गया जैसे कई चिकित्सा संगठनों के आजीवन सदस्य हैं। इसके अलावा, वे IMA की गया शाखा के अध्यक्ष, एपीआई मगध डिवीजन और एपीआई बिहार चैप्टर के अध्यक्ष, सीएसआई बिहार चैप्टर के अध्यक्ष, एपीआई की कार्यकारी समिति के सदस्य, एचएसआई इंडिया के

अध्यक्ष, आईसीपी इंडिया के वाइस डीन और क्लिनिकल कार्डियोडायबेटिक सोसाइटी ऑफ इंडिया (CCDSI) के अध्यक्ष हैं। सीसीडीएसआई एक नव स्थापित अखिल भारतीय सोसाइटी है और डॉक्टर राय इसके संस्थापक अध्यक्ष हैं। इस सोसाइटी का उद्देश्य मेडिसिन, मधुमेह और रोग हृदय के क्षेत्र में डॉक्टरों को अद्यतन जानकारी प्रदान करना है।

डॉक्टर राय को एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन ऑफ इंडिया (एपीआई) द्वारा 2017 में 'प्रतिष्ठित सदस्य' पुरस्कार दिया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हर साल एपीआई के 15,000 से अधिक सदस्यों में से किसी एक को दिया


जाता है। हाल ही में डॉक्टर राय को पटना में दैनिक जागरण हेल्थ एक्सीलेंस अवार्ड्स, 2018 में 'सर्वश्रेष्ठ दूरदर्शी नेता (मेडिसिन)' का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। मेडिसिन जगत से परिचित लोग बताते हैं कि डॉ. राय को समाज सेवा का शौक है। इस शौक ने उन्हें रोटरी इंटरनेशनल के सहयोग से सराहनीय कार्य करने के लिए प्रेरित किया है। उनके कार्यों को ध्यान में रखते हुए *आउटलुक* पत्रिका समूह ने वर्ष 2018 में उन्होंने आइकन्सन ऑफ बिहार की सूची में शामिल किया है।

रोटरी गया शहर के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने अनुकरणीय कार्य किए हैं। गया के प्रसिद्ध आरके मेमोरियल एपीआई चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष, डॉ. राय कहते हैं कि साल 2002 में गरीब और जरूरतमंद रोगियों को ध्यान में रखते हुए ट्रस्ट ने एपीआई भवन की स्थापना की जहां वंचित वर्ग से आने वाले रोगियों को विशेषज्ञ डॉक्टरों का उपचार मिलता है। खुद डॉक्टर राय अपने साप्ताहिक ओपीडी के दौरान वहां इस वर्ग के कम से कम 80 से 100 मरीजों का इलाज करते हैं।

उनकी पत्नी लीला राय का कहना है कि डॉक्टर राय ने जेबी राय मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की है। डॉक्टर अभय नारायण राय खुद हैं इस ट्रस्ट के चेयरमैन



और ट्रस्ट ने उनके पैतृक गांव लौवाडीह में एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय शुरू किया है। इस कॉलेज का लक्ष्य गरीब ग्रामीण छात्रों, विशेषकर लड़कियों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। दो साल के लिए डॉक्टर राय ने मगध सुपर थर्टी के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया। यह संस्थान हर साल इंजीनियर बनने के इच्छुक 30 गरीब ग्रामीण छात्रों को निशुल्क आवासीय कोचिंग प्रदान करता है। हाल ही में उन्होंने एक गया वेलफेयर ट्रस्ट स्थापित किया है। इसका उद्देश्य गरीबों की सेवा के लिए सामुदायिक हॉल और एक धर्मार्थ अस्पताल का निर्माण करना है।

डॉक्टर अभय नारायण राय की बेटी जया किशोर और दामाद संजय किशोर हैं। संजय किशोर रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) में महानिरीक्षक (आईजी) के रूप में कार्यरत हैं। जया किशोर अपने पिता के बारे में कहती हैं, 'डॉक्टर अभय बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं जिन्होंने न केवल चिकित्सा जगत में बल्कि समाज सेवा में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है।' डॉक्टर अभय के पुत्र डॉक्टर अजितेश राय अमेरिका में सेंट लुइस में एक स्लीप लैब के निदेशक और प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट हैं। अपने पिता के बारे में उनका कहना है, 'डॉक्टर अभय नारायण राय ने चिकित्सा विज्ञान, शिक्षा और सामाजिक सेवा में अद्भुत और अलक्षित सफलता प्राप्त की है।' 



अशोक अग्रवाल

## संघर्ष से बनाई सफलता की राह

राजस्थान के एक गांव से खाली हाथ निकला एक परिवार हजारों किलोमीटर दूर बिहार आकर मात्र एक पीढ़ी के अंदर सफलता के नए कीर्तिमान गढ़ दे ऐसा कम ही होता है मगर बिहार के अशोक अग्रवाल ने ऐसा कर दिखाया है। उन्होंने ने कड़ी मेहनत से न सिर्फ अपनी और अपने परिवार की जिंदगी संवारी बल्कि अब वे समाज को भी उसका हिस्सा लौटा रहे हैं

और दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बन गए हैं। खास बात यह कि जिंदगी में सफलता के कई आयाम हासिल करने वाले अशोक अग्रवाल ने ग्रेजुएशन भी नहीं किया है। यानी उन्होंने ये साबित किया है कि कारोबारी और सामाजिक सफलता उच्चतर डिग्रियों की मोहताज नहीं होती।

यह कहानी शुरू होती है अशोक अग्रवाल के पिता रतनलाल अग्रवाल से जो कि मूलतः राजस्थान के जयपुर के निकट कोटपुतली पाउटा गांव के रहने वाले थे। रतनलाल अग्रवाल के पिता भूरामल अग्रवाल का नाम गांव के बड़े जमींदारों में शामिल था मगर अचानक स्थितियां बिगड़ गईं और रतनलाल को अपनी रोजी खुद कमाने के लिए अपनी जमीन से दूर होना पड़ा। आजादी के बाद का दशक था और रतनलाल जीविकोपार्जन के लिए 1958 में बिहार के पटना पहुंचे। यहां 1959 में कंकड़बाग इलाके में उन्होंने शिव किराना भंडार के नाम से अपनी किराने की दुकान शुरू की। कंकड़बाग में ही साल 1972 में अशोक अग्रवाल का जन्म हुआ। चार भाई और चार बहनों में अशोक सबसे छोटे थे और इतने बड़े परिवार का

खर्च चलाने के लिए अशोक को भी सिर्फ छह साल की उम्र में दुकान में पिता का हाथ बंटाना पड़ा। इससे उनमें कारोबार के गुण बचपन से ही विकसित हो गए।

पिता ने अशोक की आरंभिक शिक्षा से कोई समझौता नहीं किया और उन्होंने पटना के प्रसिद्ध सर गणेश दत्त पाटलीपुत्र हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की। मैट्रिक की परीक्षा पास करते ही उन्हें डाक विभाग से डाकिये की नौकरी का प्रस्ताव मिला। हालांकि उन्हें समझ आ गया कि वे किसी दूसरे की चाकरी के लिए नहीं बने हैं और उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और आगे कभी किसी की कोई नौकरी न करने का भी फैसला कर लिया। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने मगध यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध कॉलेज ऑफ कॉमर्स में दाखिला लिया और यहां से इंटरमीडियेट की पढ़ाई पूरी की। पिता चाहते थे कि अशोक कम से कम ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई तो पूरी कर लें मगर अशोक ने उनकी बात नहीं मानी और इंटर के बाद ही अलग-अलग कारोबार में हाथ आजमाना आरंभ कर दिया। हालांकि उनके घर की हालत ऐसी नहीं थी कि वे कारोबार के







लिए बड़ी पूंजी का इंतजाम कर पाते इसलिए उन्हें कामयाबी के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। शुरुआती कारोबारों में किस्मत ने भी कई बार धोखा दिया मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी।

अशोक अग्रवाल ने शुरुआत में पटना में ही फ्लावर मिल, मुर्गीपालन और डेयरीफार्म जैसे कारोबार किए। हालांकि डेयरीफार्म के कारोबार में उन्हें तब तगड़ा झटका लगा जब एक ही बार में उनकी 15 गायों की मौत हो गई। जाहिर है कि इससे उन्हें बड़ा घाटा उठाना पड़ा। यह झटका इतना बड़ा था कि अशोक ने इसके बाद दूसरे कारोबारों की ओर ध्यान देना शुरू किया।

उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में किस्मत आजमाने का फैसला लिया। पटना में पूरे बिहार से बच्चे उच्च शिक्षा ग्रहण करने आते हैं और इन बच्चों के लिए पटना में रहना हमेशा से एक परेशानी वाली स्थिति रही है। अशोक अग्रवाल इस बात को जानते थे। यही सोचकर साल 2010 में उन्होंने अपने पुराने कॉलेज, कॉलेज ऑफ कॉमर्स के पास तिवारी छात्रावास के नाम से लड़कों के हॉस्टल की शुरुआत की। यह वो दौर था जब देश में रियल इस्टेट का धंधा चरम पर था। जमीन और फ्लैटों के दाम आसमान छू रहे थे। अशोक ने इस मौके को भी भांप लिया और इसी के तहत उन्होंने झारखंड की राजधानी रांची में रियल इस्टेट के धंधे में कदम रखा। उन्होंने कुछ साल में रांची के रातू रोड इलाके में अशोका अपार्टमेंट्स का निर्माण किया। मगर किस्मत यहां भी उनसे एक कदम आगे चल रही थी और इस धंधे के उनके साझेदार का आकस्मिक निधन हो गया और अशोक को रांची में अपना काम

समेटना पड़ गया। हालांकि तबतक अशोक पूंजी के मामले में आत्मनिर्भर हो चुके थे और उनके लिए आगे की राह आसान हो गई थी।

रियल इस्टेट का जो काम रांची में अधूरा रह गया था अशोक अग्रवाल ने उसे अपनी शिव शक्ति प्रापर्टीज के माध्यम से पटना में आगे बढ़ाया। पटना में उन्होंने करीब 1000 लोगों को जमीन के प्लॉट बेचे और इसी प्रकार हाजीपुर में भी 45 बीघा जमीन पर 500 लोगों को प्लॉट दिया। इन दोनों परियोजनाओं के साथ पटना के रियल इस्टेट के कारोबारियों में अशोक अग्रवाल का नाम इज्जत से लिया जाने लगा।

अशोक अग्रवाल इससे पहले ही पटना के कंकड़बाग में अपनी मां के नाम पर शारदा गर्ल्स हॉस्टल समूह की स्थापना कर चुके थे और देखते ही देखते पटना के कई इलाकों में शारदा गर्ल्स हॉस्टल की शाखाएं आरंभ हो गईं। बाहर से आने वाले अभिभावक यहां की सुविधाएं और सुरक्षित वातावरण को देखकर अपनी बच्चियों को इस हॉस्टल में भर्ती करवाने लगे। हॉस्टल के साथ-साथ अशोक अग्रवाल ने 2012 में कंकड़बाग इलाके में खुशी रेस्टोरेंट और तिवारी होटल के साथ-साथ 2017 में दिनकर चौक पर निर्मलाज किचन की स्थापना की। बाहर खाने वालों के बीच ये सारे रेस्तरां बेहद लोकप्रिय हैं।

इन कारोबारी सफलताओं ने अशोक अग्रवाल को पैसा तो दिया मगर समाज के लिए कुछ करने की हसरत उनके मन में बनी ही रही। खुद ग्रेजुएट न हो पाने का मलाल भी कहीं न कहीं उनके मन में बना ही हुआ था। तब उन्होंने पूरी तरह शिक्षा के क्षेत्र में उतरने का फैसला लिया और हाजीपुर में अपनी एक खाली जमीन पर एम एम कान्वेंट स्कूल की शुरुआत की। करीब आठ हजार वर्ग फीट में निर्मित भवन और 10 हजार वर्ग फीट के खेल मैदान वाले इस स्कूल में आज हजारों बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

नेत्रहीन और गरीब बच्चों की शिक्षा एवं अन्य मदद के लिए अशोक अग्रवाल ने अपने माता-पिता के नाम पर शारदा रतन फाउंडेशन की स्थापना की है। इसके अलावा उन्होंने बड़ी अवस्था में बेसहारा हो जाने वाले लोगों एवं अनाथ बच्चों के लिए पटना के मसौढ़ी रोड स्थित अपनी एक जमीन पर अनाथालय एवं ब्रह्माश्रम का निर्माण करवाया है जो जल्द ही शुरू हो जाएगा। समाज से कुछ पाकर समाज को लौटाने की अशोक अग्रवाल की प्रवृत्ति निश्चित रूप से सराहनीय है। खुद अग्रवाल कहते भी हैं, मेरा परिवार राजस्थान से खाली हाथ आया था और हम दुनिया से खाली हाथ ही जाएंगे। जो कमाया है सब यहीं रह जाएगा, इसलिए बेहतर है कि जो जरूरतमंद हैं, उनकी मदद की जाए।





आनंद कुमार | 25

# गणित को बनाया सामाजिक परिवर्तन का हथियार

24 | आनंद कुमार



बचपन से ही भारी गरीबी देखने के कारण उन्हें इसके कष्ट का ऐसा अहसास था उन्होंने समाज के उस तबके के बच्चों के लिए कुछ करने की ठानी जो अवसर न मिल पाने के कारण पिछड़ जाते हैं। यही सोच उनकी प्रेरणा बनी जिसने ‘सुपर 30’ को जन्म दिया। ये ऐसा प्रोग्राम है जो समाज के सबसे गरीब तबके से प्रतिभाशाली 30 बच्चों को चुनकर उन्हें जेईई, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की प्रवेश परीक्षा तथा अन्य प्रतिष्ठित विज्ञान/इंजीनियरिंग संस्थानों में

प्रवेश दिलाने के लिए प्रशिक्षण देने का दावा करता है। सुपर 30 के पिछले 17 सालों के इतिहास में 480 बच्चों में से 422 बच्चे अबतक आईआईटी जेईई की परीक्षा के जरिये देश के शीर्ष प्रौद्योगिकी संस्थानों में प्रवेश पा चुके हैं। खास बात ये है कि इनमें से ज्यादातर बच्चे समाज के सबसे कमजोर तबके से आते हैं और उनमें भी अधिकांश ऐसे हैं जो अपने परिवार में पढ़ाई करने वाली पहली पीढ़ी हैं और जिन्होंने बहुत ही सामान्य स्कूलों में शिक्षा पाई थी।



सुपर 30 में इन बच्चों को मुफ्त रहना, खाना और इन सबसे बढ़कर, मुफ्त की कोचिंग मिलती है। हालांकि आनंद कुमार को अपनी इस पहल में निजी क्षेत्र और सरकारों से वित्तीय मदद के कई प्रस्ताव मिले मगर आनंद कुमार इन बच्चों के सभी खर्च खुद उठाते हैं। वो प्राइवेट ट्यूशन से प्राप्त अपनी कमाई का एक हिस्सा इस काम में लगाते हैं जिसमें उनका पूरा परिवार उनका साथ देता है।

दुनिया के कई चैनलों, बड़े अखबारों और पत्रिकाओं ने सुपर 30 के भाव को पकड़ने का प्रयास कर आनंद कुमार के इस काम को वैश्विक पहचान दी है। डिस्कवरी चैनल ने सुपर 30 पर एक घंटे का कार्यक्रम बनाकर इसे ‘सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रयोग’ करार दिया तो वहीं जापान के एसटीबी रिसर्च इंस्टीट्यूट के मुख्य अर्थशास्त्री योइची इतोह ने सुपर 30 को ‘भारत का गोपनीय हथियार’ बताया। एसटीबी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने भी प्रसिद्ध एनएचके चैनल के लिए सुपर 30 पर एक फिल्म बनाई है। पूर्व मिस जापान नोरिका फूजीवारा आनंद कुमार की इस पहल पर एक डॉक्यूमेंट्री बनाने पटना पहुंचीं। फ्रेंच 24 ने भी उनकी जिंदगी पर एक छोटी से डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाई है। सुपर 30 पर बनी कई फिल्मों ने अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।

आनंद कुमार को उनके इस आंदोलन के कारण देश की कई संस्थाओं ने सम्मानित किया है। जबरदस्त शिक्षण तकनीक के कारण आनंद कुमार का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स में भी गी भी शामिल हो चुका है। टाइम पत्रिका ने साल 2010 में सुपर 30 को एशिया के बेहतरतन संस्थान की सूची में रखा था। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के विशेष दूत रशद हुसैन ने भी इसकी तारीफ करते हुए इसे देश का सबसे अच्छा इंस्टीट्यूट करार दिया था। न्यूजवीक ने आनंद कुमार की पहल का संज्ञान लेते हुए इसे दुनिया के चार सबसे अनूठे स्कूलों की सूची में जगह दी है।

चाइना टीवी ने अपने बेहद लोकप्रिय शो में शामिल होने के लिए आनंद कुमार को बीजिंग आमंत्रित किया था। चाइना इंटरनेशनल रेडियो, बीबीसी और जर्मन रेडियो आदि ने भी सुपर 30 पर कार्यक्रम प्रसारित किए हैं। आनंद कुमार को कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया की सरकार ने भी सम्मानित किया है।

अपने काम के लिए आनंद कुमार को विभिन्न सम्मानों, पुरस्कारों, मानद उपाधियों से वैश्विक मान्यता मिली है। नवंबर 2010 में उन्हें बिहार सरकार के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मौलाना अब्दुल कलाम आजाद शिक्षा पुरस्कार दिया गया। 2010 में ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने बेंगलुरु में उन्हें प्रोफेसर यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार से सम्मानित किया। अप्रैल 2011 में यूरोप की पत्रिका फोकस ने उन्हें ऐसे



फिल्म के निर्देशक विकास बहल और ऋतिक रोशन के साथ आनंद कुमार

व्यक्ति के रूप में चुना जिनमें अतिप्रतिभाशाली लोगों की प्रतिभा निखारने की क्षमता है। ब्रिटेन की पत्रिका मोनोकल ने उन्हें दुनिया के 20 पथप्रदर्शक शिक्षकों में शामिल किया है। आनंद कुमार की आत्मकथा कनाडा निवासी मनोविज्ञानी बिजू मैथ्यू ने लिखी है और इसकी प्रति कुमार ने खुद तात्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को भेंट की थी।

गरीबों को विशेष शिक्षा देने के लिए हाल में ही आनंद कुमार को बैंक ऑफ बड़ौदा अवार्ड मिला है। राजकोट में आयोजित आठवें राष्ट्रीय गणित कन्वेंशन में उन्हें रामानुजन मैथमैटिक्स अवार्ड दिया गया। कोयंबटूर के करपगम यूनिवर्सिटी ने आनंद कुमार को डॉक्टरेट ऑफ साइंस की

मानद उपाधि दी है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों राष्ट्रीय बाल कल्याण पुरस्कार से सम्मानित आनंद कुमार को शिक्षा के क्षेत्र में शानदार काम करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने महर्षि वेद व्यास राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया। जर्मनी में सेक्सोनी के शिक्षा मंत्रालय ने भी उनका सम्मान किया है। अमिताभ बच्चन को आरक्षण फिल्म में उनकी भूमिका निभाने में भी आनंद कुमार से मदद मिली थी।

निर्देशक विकास बहल ने सुपर 30 के नाम से आनंद कुमार और उनकी शिक्षण पद्धति पर बायोपिक फिल्म बनाई है जिसमें आनंद कुमार की भूमिका जाने माने अभिनेता ऋतिक रोशन ने निभाई है। फिल्म में अभिनेत्री मृणाल

ठाकुर की भी अहम भूमिका है। साल 2014 में अमेरिका के प्रतिष्ठित मैसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने आनंद कुमार को अपने यहां लेक्चर के लिए बुलाया तब आनंद कुमार ने कहा था, ‘मैं इस बारे में बात करूंगा कि मनोवैज्ञानिक और सामाजिक बदलाव की दिशा में ‘सबको शिक्षा’ को एक शक्तिशाली हथियार के रूप में इस्तेमाल कर कैसे ये दुनिया एक बेहतर जगह बन सकती है। पिछले 14 वर्षों में अपने गृह राज्य बिहार में मैंने जो किया वो समाज के वंचित तबके के प्रतिभाशाली और जोशीले बच्चों को सही अवसर देने की बहुत छोटी सी पहल थी मगर उसके परिणाम आश्चर्यजनक थे।’





## डॉ. आशुतोष शरण

# ख्याति के शिखर पर

बिहार के मोतिहारी जिले में अपने ज़माने के प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ स्व.डॉ. शम्भू शरण के पुत्र डॉ. आशुतोष शरण और उनकी पत्नी डॉ.जसवीर कौर शरण ने अपने दम पर चिकित्सा जगत को जो मुकाम दिलाया है वो क्राबिले-तारीफ है। 1985 में मोतिहारी के ज्ञान बाबू चौक पर एक छोटे से क्लिनिक से शुरुआत करने वाले इस दंपत्ति ने प्रदेश के चिकित्सा जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ी है

अक्टूबर 1956 में बिहार के मुजफ्फरपुर में जन्मे डॉ. आशुतोष शरण आज किसी परिचय के मोहताज नहीं। अपने ज़माने के ख्याति प्राप्त हृदय रोग विशेषज्ञ स्व.डॉ.शम्भू शरण के पुत्र आशुतोष की प्रारम्भिक शिक्षा पटना के प्रसिद्ध संत जेवियर्स स्कूल से हुई। तत्पश्चात इनका नामांकन पटना के गर्दनीबाग हाई स्कूल में करवा दिया गया जहाँ आशुतोष ने छठी कक्षा तक पढ़ाई की। परिवार की सलाह पर आशुतोष बेतिया चले आए और सातवीं कक्षा में उनका नामांकन क्रिस्ट रजा हाईस्कूल में हुआ और इसी विद्यालय से आशुतोष ने साल 1971 में मैट्रिक की परीक्षा पास की।

साल 1971 में आशुतोष ने मोतिहारी के प्रसिद्ध एम.एस कॉलेज के पहले आई.एस.सी बैच में 1973 में दाखिला लिया और प्रथम श्रेणी में पास हुए। इसी साल



इनका नामांकन दरभंगा मेडिकल कॉलेज में हुआ और इसी कॉलेज से आशुतोष शरण ने 1979 में एम.बी.बी.एस की डिग्री हासिल की।

पुराने दिनों को याद कर डॉ.आशुतोष कहते हैं कि मेडिकल कॉलेज में उनकी मुलाकात जसवीर कौर ढिल्लन से हुई जो न केवल उनकी सहपाठी थीं बल्कि कॉलेज में उनकी पहचान एक मेधावी छात्रा के तौर पर हुआ करती थी। जसवीर से मेरी बढ़ती नज़दीकियां मेरी जिन्दगी का टर्निंग पॉइंट साबित हुई और 1983 में हमने शादी कर ली। उनकी पत्नी और राज्य की जानी मानी गाइनोकॉलॉजिस्ट डॉ.जसवीर कौर शरण कहती हैं कि 1970 में मैंने पटना के प्रसिद्ध संत जोसेफ कान्वेंट हाई स्कूल से ग्यारहवीं की परीक्षा पास की और 1972 में पटना साईंस कॉलेज में दाखिला लिया। 1973 में मेरा नामांकन दरभंगा मेडिकल कॉलेज में हुआ और 1979 में डॉ.आशुतोष और मैंने एक साथ ही एम.बी.बी.एस की पढ़ाई पूरी की।

इधर डॉ.आशुतोष 1982-84 तक पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में ख्यातिप्राप्त चिकित्सक डॉ.नरेंद्र प्रसाद के अधीन रहकर जनरल सर्जरी में प्रशिक्षण लेने लगे तो उधर डॉ.जसवीर ने दरभंगा मेडिकल कॉलेज से एम.डी की डिग्री हासिल की। 1983 में डॉ.आशुतोष ने बतौर एस.डी.एम.ओ

बेतिया के एम.जे.के अस्पताल में अपना योगदान दिया और स्टडी लीव लेकर 1982-84 में पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल से पी.जी की पढ़ाई पूरी की और 1985 में मोतिहारी के टी.बी हॉस्पिटल में अपना योगदान दिया।

इधर, 1988 में डॉ.जसवीर कौर शरण ने बिहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग में अपना योगदान दिया और राज्य सरकार द्वारा इनकी नियुक्ति लक्ष्मीपुर मुंगेर स्थित रेफरल अस्पताल में कर दी गई लेकिन पति की मोतिहारी में पोस्टिंग होने के कारण इसी साल इनका तबादला मोतिहारी के सदर अस्पताल में कर दिया गया जहाँ ये लम्बे समय तक कार्यरत रहें। बातचीत के क्रम में डॉ.आशुतोष शरण कहते हैं कि उनके पिता डॉ.शम्भू शरण (अब दिवंगत) का नाम अपने समय के ख्यातिप्राप्त चिकित्सकों में शुमार था। वर्ल्ड मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष और आई.एम.ए के पितामह कहे जाने वाले डॉ.ए.के.एन.सिन्हा (अब दिवंगत) के करीबी मित्र डॉ. शरण 1954 के ग्रेजुएट थे, साथ ही राज्य के पहले ऐसे एम.आर.सी.पी भी रहे जिन्होंने कभी किसी मेडिकल कॉलेज में अपना योगदान नहीं दिया और ताउम्र अपने जिले मोतिहारी में ही प्रैक्टिस करते रहे। डॉ.शम्भू शरण ने मोतिहारी में एक छोटे से अस्पताल शरण हॉस्पिटल की स्थापना की थी लेकिन वे यह चाहते थे कि उनके पुत्र डॉ.आशुतोष और पुत्रवधू डॉ.जसवीर अपनी अलग राह बनाए और कुछ

अच्छा, कुछ अलग करने का प्रयास करें ताकि लोग उन्हें मेरे नहीं बल्कि उन्हें उनके नाम से पहचाने।

इधर मोतिहारी के सदर अस्पताल से डॉ.जसवीर का ट्रांसफर बेतिया के एम.जे.के अस्पताल में कर दिया गया जहाँ वे 2004-05 तक कार्यरत रहें। इसी बाद में अस्पताल से डॉ.जसवीर ने वी.आर.एस ले लिया।

परिवार के बुजुर्गों का कहना है कि डॉ.आशुतोष और डॉ.जसवीर ने पिता की भावनाओं का सम्मान करते हुए मोतिहारी के ज्ञान बाबू चौक से शरण क्लिनिक के नाम से एक 10 बेड वाले छोटे से अस्पताल की शुरुआत की और फिर कभी पलट कर नहीं देखा। दिन महीने और साल बदलते गए और देखते ही देखते इस चिकित्सक जोड़े का नाम अब हर किसी की जुबां पर था। पिता द्वारा स्थापित छोटे से शरण हॉस्पिटल के पास अब आशुतोष नर्सिंग होम मल्टीस्पेशलिटी सेवाओं के बेहतर विकल्प के साथ जिले के मरीजों के लिए तैयार खड़ा था। डॉ.आशुतोष और डॉ.जसवीर कहते हैं कि अमूमन एक मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल में प्रायः यह देखा जाता है कि सभी प्रकार की जांच की सुविधाएँ एक ही छत के नीचे उपलब्ध हों लेकिन हमने अपने अस्पताल में पैथोलॉजी, केमिस्ट शॉप, अल्ट्रासाउंड आदि अन्य सुविधाओं को अस्पताल परिसर



से दूर रखा है ताकि मरीज अपनी सुविधानुसार जहाँ चाहे, जांच करा सकता है, साथ ही बेहतर चिकित्सा को ध्यान में रखकर पटना के वरिष्ठ चिकित्सक भी अपने सेवायें देने मोतिहारी आते हैं।

एक सफल चिकित्सक के रूप में पहचान बना चुके इस दम्पति ने 1982 में समाज सेवा के इरादे से लायंस क्लब ऑफ मोतिहारी की सदस्यता ग्रहण की, डॉ. शरण इन दिनों लायंस क्लब कपल के अध्यक्ष है और अगले अध्यक्ष के तौर पर डॉ.जसवीर का नाम भी क्लब के सदस्यों के सामने है। डॉ.शरण लम्बे वक्त से इंडियन

मेडिकल एसोसिएशन की मोतिहारी शाखा के सचिव हैं, साथ ही एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया के फेलो होने के अलावा फेलो ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ सर्जन्स के सदस्य भी हैं। वे भारतीय पुलिस सेवा के एक अवकास प्राप्त अधिकारी द्वारा संचालित प्रसिद्ध संस्था 'प्रयास' के न केवल संरक्षक और अध्यक्ष हैं बल्कि विभिन्न प्रकार के खेलों को बढ़ावा देने के कारण इन्हें न केवल जिला एथलेटिक एसोसिएशन का अध्यक्ष बनाया गया है बल्कि ईस्ट चम्पारण बैडमिंटन एसोसिएशन के प्रेसिडेंट के तौर पर एक बड़ी जिम्मेवारी इन्हीं के कंधों पर है। डॉ. आशुतोष शरण मोतिहारी के प्रसिद्ध नवीन

भारती स्कूल के न केवल प्रेसिडेंट हैं बल्कि आयुष और अन्य चिकित्सक एसोसिएशन के पास्ट प्रेजिडेंट और प्रेजिडेंट भी हैं।

डॉ.आशुतोष शरण और डॉ.जसवीर कहती हैं कि हमारी बेटी डॉ.निकिता शरण रेडियोलॉजिस्ट हैं और पुत्र डॉ.निखिल शरण लेप्रोस्कोपिक सर्जन, हमें पूरा भरोसा है कि हमारे मरीजों को इन दोनों के अनुभवों के साथ बेहतर चिकित्सा का पूरा लाभ मिलेगा और आने वाले वक्त में मोतिहारी में स्थित हमारा यह अस्पताल राज्य के चिकित्सा जगत में मील का पत्थर साबित होगा।





डॉ. आशुतोष त्रिवेदी

## अपनी माटी से जुड़ा गरीबों का सेवक दंत चिकित्सक

आधुनिक दौर में चिकित्सकों के सेवा भावना से विरत होने के चलते और इलाज का खर्च दिन दूनी, रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ रहा हो, अगर कोई डॉक्टर आज भी 25 साल पहले वाली फीस पर ही लोगों का इलाज कर रहा हो तो उसे प्रेरणास्रोत के रूप में ही देखा जाना चाहिये। पटना के नामी दंत चिकित्सक डॉक्टर आशुतोष त्रिवेदी ऐसे ही प्रेरणास्रोत हैं

एक मध्यमवर्गीय परिवार से आने वाले डॉक्टर त्रिवेदी को कैरिअर में ऊंची उड़ान भरने और विदेशों में नौकरी करने के बेशुमार अवसर मिले मगर अपनी माटी से उनका जुड़ाव इतना मजबूत था कि उन्होंने बिहार की राजधानी पटना को ही अपनी कर्मस्थली चुना। उस समय उन्होंने अपनी जो फीस तय की थी, तमाम तरह की मुश्किलें आने के बावजूद आज भी उनकी फीस उतनी ही है। यही नहीं, डॉक्टर त्रिवेदी पटना में दंत चिकित्सा में नई-नई तकनीक और उपकरण लेकर आए हैं और भी उन्होंने कई सारी नई पहलें की हैं।

डॉक्टर त्रिवेदी पटना के दंत चिकित्सा क्षेत्र का जाना-माना नाम हैं जिन्होंने एक डेंटल सर्जन के रूप में इस पेशे को नई ऊंचाई प्रदान की है। एक बेहद काबिल डेंटल सर्जन के रूप में अपनी पहचान बना चुके डॉक्टर त्रिवेदी बिहार के स्वतंत्रता सेनानी और बिहार वित्त सेवा के अधिकारी रहे कपिल देव त्रिवेदी की सात संतानों में सबसे छोटे हैं।

बचपन से ही बेहद मेधावी छात्र रहे आशुतोष त्रिवेदी की आरंभिक शिक्षा पटना के दो नामी स्कूलों, पटना मॉन्टेसरी स्कूल और सेंट माइकल स्कूल में हुई। स्कूल







और कॉलेज के दिनों से ही उन्होंने एक सफल डेंटल सर्जन बनने का सपना देखा और बड़े होकर इस सपने को साकार भी किया। पहले उन्होंने बीआईडीएस की डिग्री हासिल की और उसके बाद कॉस्मेटिक एंड डेंटल सर्जरी की डिग्री हासिल करने अमेरिका के न्यूयॉर्क गए। उन्होंने मगध विश्वविद्यालय से प्रोस्थोडॉंटिक्स और इंप्लान्टोलॉजी में एमडीएस किया। अपने पेशे से जुड़ी इतनी सारी पढ़ाई करने के बाद स्वाभाविक रूप से उनके पास अमेरिका समेत दूसरे देशों से नौकरी के कई सारे प्रस्ताव आए मगर उन्होंने इन सभी प्रस्तावों को ठुकरा दिया, वे क्योंकि उनके दिमाग में तो वतन की सेवा भावना भरी थी।

वे भारत लौट आए और 90 के दशक में उन्होंने पटना में ओरो डेंटल के नाम से अपने निजी डेंटल क्लिनिक की शुरुआत की। तब उन्होंने अपनी फीस 25 रुपये तय की थी। और आज करीब 25 साल बीतने के बाद भी उनकी फीस में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है बल्कि वह 25 रुपये ही है। इसके पीछे उनकी मां की इच्छा छिपी हुई है जो यह चाहती थीं कि डॉक्टर आशुतोष कम खर्च में लोगों को दंत चिकित्सा की बेहतर सुविधा उपलब्ध कराएं। डॉक्टर त्रिवेदी को जानने

वाले कहते हैं कि उन्होंने अपनी मां की इच्छा को पूरा करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है।

कई डॉक्टरों, सहायकों और तकनीशियनों से सज्जित डॉक्टर आशुतोष त्रिवेदी की टीम और उनका ओरो क्लिनिक भले ही पटना में स्थित हो लेकिन उनके मरीज इस शहर तक ही सीमित नहीं हैं। बिहार और अन्य जगहों के राजनीतिक और टेलीविजन सितारे, नौकरशाह और भारतीय और एनआरआई अपने गृह शहर में इलाज के लिए उनके क्लिनिक में आते हैं। पूरे देश में चल रहे मेडिकल टूरिज्म की तर्ज पर पटना में डेंटल टूरिज्म चल रहा है और इसका श्रेय डॉक्टर त्रिवेदी को ही जाता है। दंत चिकित्सा सेवाओं की भारी कमी को देखते हुए उन्होंने शहर के विभिन्न हिस्सों में ओरो डेंटल की कई उप शाखाएं स्थापित की हैं, जो एकसमान इलाज की सुविधा देती हैं।

डॉक्टर त्रिवेदी की पत्नी प्रियदर्शिनी त्रिवेदी पटना में ही एक बड़े अंतरराष्ट्रीय एनजीओ में पदाधिकारी हैं। श्रीमती त्रिवेदी पिछले 20 वर्ष से सामाजिक क्षेत्र में काम कर रही हैं। वे जुड़वां बच्चों अमोघ और आन्या की मां हैं। उन्होंने

बताया कि अपने काम की वजह से ही दोनों करीब आए और बाद में यह नजदीकी शादी में बदल गई। डॉक्टर त्रिवेदी बेहद धार्मिक प्रवृत्ति के हैं और सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। हालांकि वे भगवान गणेश के भक्त हैं। उनके क्लिनिक में भगवान गणेश की कई मूर्तियां लगी हुई हैं जिनमें से कई तो बेहद दुर्लभ हैं और दूसरे देशों से मंगवाई गई हैं। वे कहते भी हैं कि मैं भगवान गणेश का सेवक हूँ और उनकी आकृतियों और मूर्तियों के संग्रह का मुझे बहुत शौक है।

जहां तक चिकित्सा पेशे का सवाल है तो डॉक्टर आशुतोष को बिहार में दंत चिकित्सा के क्षेत्र में कई सारी नई पहल करने के लिए जाना जाता है। वर्ष 1999 में उन्होंने बिहार में पहली बार डेंटल इंप्लांट कर इतिहास रचा। डेंटल इंप्लांटोलॉजी की बिहार में शुरुआत, डिजिटल एक्स रे, चलंत चिकित्सा यूनिट, डेंटिस्ट्री एट होम जैसी पहलों ने ओरो डेंटल को पटना में लोगों का पसंदीदा डेंटल क्लिनिक बना दिया है। डेंटिस्ट्री एट होम के लिए डॉक्टर आशुतोष ने डेंटल मोबाइल वैन शुरू किया जिसका उद्घाटन बिहार के उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी ने किया।

हर कोई तरक्की करे, इसके लिए डॉक्टर आशुतोष ने ‘अपना बढ़ता बिहार’ का नारा दिया है। हालांकि उनका यह नारा सिर्फ नारा भर नहीं है। वे सच में यह चाहते हैं कि उनका बिहार तरक्की करे। दरअसल दंत चिकित्सा के क्षेत्र में इतने सारे नए आयाम जोड़ने वाले डॉक्टर आशुतोष इस पेशे में कॅरिअर बनाने के इच्छुक छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने नए छात्रों के लिए भी कई पहल की हैं और इस दिशा में काम करते हुए लघु उद्योगों के कौशल विकास कार्यक्रमों और नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के साथ साझेदारी की है। नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के साथ गठजोड़ में दो कोर्स शुरू किए गए हैं—डेंटल असिस्टेंट और लैब असिस्टेंट। इसी के साथ ओरो डेंटल अध्ययन केंद्र और ऑन-जॉब प्रशिक्षण दोनों प्रदान करने वाला अध्ययन केंद्र बन गया है। दोनों कार्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम सामग्री डॉ. त्रिवेदी और उनकी टीम ने ही बनाई और बड़ी संख्या में छात्रों ने इसका लाभ उठाया।

एसआईएसआई और ओरो डेंटल के संयुक्त सहयोग के परिणामस्वरूप डेंचर फैब्रिकेशन के लिए कौशल विकास पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं। इन पाठ्यक्रमों के जरिये न सिर्फ युवाओं को नौकरी की तलाश करने के लिए कौशल प्रदान किया गया बल्कि राज्य के विभिन्न जिलों में स्थापित प्रयोगशालाओं से प्रशिक्षण भी दिलवाया गया। उन्होंने बिहार के एक हजार से ज्यादा बेरोजगारों को डेंटल फैब्रिकेशन यानी नकली दांत बनाने और लगाने की कला सिखाकर स्वरोजगार दिलाया है। डॉक्टर त्रिवेदी अब राज्य में नई और उन्नत तकनीक लाने के लिए दंत चिकित्सा और ओरल



स्वास्थ्य पर एक शोध संस्थान का सपना देख रहे हैं और उन्हें उम्मीद है कि यह सपना भी जल्द पूरा होगा।

चिकित्सा जगत और सामाजिक कार्यों में उनकी भागीदारी को देखकर विभिन्न संस्थाओं ने उन्हें समय-समय पर सम्मानित किया है। उन्हें बिहार एंटरप्रेन्योर अवार्ड, बिहार श्री अवार्ड और बेस्ट डेंटल सर्जन अवार्ड आदि से सम्मानित किया जा चुका है। उनके द्वारा शुरू किए गए ओरो क्लिनिक को बेस्ट डेंटल क्लिनिक अवार्ड मिल चुका है। डॉक्टर होने के अलावा डॉ. आशुतोष त्रिवेदी संगीत प्रेमी भी हैं। उन्होंने कराओके गायन शो की अवधारणा पर एक रियलिटी शो ‘सारा बिहार गाएगा’ की रचना, निर्माण और निर्देशन किया। इसका उद्देश्य अनसुनी संगीतमय आवाजों को एक मंच देना था, जिनकी प्रतिभा पर किसी का ध्यान नहीं गया होगा। कार्यक्रम के 52 एपिसोड को दूरदर्शन बिहार पर प्रसारित किया गया है।







प्रोफेसर के.सी. सिन्हा

## गणित के महागुरु

बिहार पीढ़ियों से अपनी बौद्धिक संपदा के लिए प्रसिद्ध है। प्रोफेसर के.सी. सिन्हा एक ऐसा ही चमकता सितारा हैं जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपना अलग मुकाम बनाया है। प्रतियोगी परीक्षाओं, स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों के लिए गणित की कई लोकप्रिय किताबों के लेखक प्रोफेसर सिन्हा पिछले तीन दशक से बिहार की चर्चित हस्ती बने हुए हैं। अपने शिक्षण एवं अपनी किताबों के जरिये वे न सिर्फ बिहार बल्कि देश के बाकी हिस्से में भी नई पीढ़ी के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

पटना विश्वविद्यालय में कार्यरत प्रो. के सी सिन्हा वर्तमान में पटना साईंस कॉलेज के प्राचार्य और पटना विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के डीन एवं पूर्व में पटना यूनिवर्सिटी में गणित विभाग के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। प्रो सिन्हा शिक्षण, लेखन और भविष्य के शिक्षकों को तैयार करने में सक्रिय रूप से शामिल हैं। प्रो सिन्हा पीएचडी के कई छात्रों को गाइड कर रहे

हैं और उनके मार्गदर्शन में कई छात्रों ने पीएचडी की उपाधि हासिल की है। खुद प्रोफेसर सिन्हा कहते हैं, " मैं अपने काम का पूरा आनंद लेता हूँ और मैंने रिटायर होने की योजना कभी नहीं बनाई"। प्रोफेसर के.सी. सिन्हा का जन्म बिहार के एक छोटे से शहर आरा के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। चार भाइयों और दो बहनों में से एक प्रोफेसर सिन्हा की



औपचारिक शिक्षा उनके 9 वर्ष पूरा करने के बाद शुरू हुई। उन्होंने आरा के जिला स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। घर में पैसे की कमी को देखते हुए उन्हें आरंभ में ही लग गया था कि इस स्थिति से पार पाने का एकमात्र तरीका शिक्षा ही है। वे पटना से उच्च शिक्षा लेना चाहते थे और इसके लिए उन्हें छात्रवृत्ति की जरूरत थी। इसके लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की। हाई स्कूल के बाद उन्होंने पटना साइंस कॉलेज में प्रवेश लिया और बी.एससी (ऑनर्स) और एमएससी के इम्तिहान में टॉपर रहते हुए गोल्ड मेडलिस्ट बने।

उन्होंने शिक्षण में अपने कैरिअर की शुरुआत 1977 में एक लेक्चरर के रूप में आरा में एचडी जैन कॉलेज ज्वाइन करने के साथ की। इसके दो साल बाद उनकी शादी हो गई और 1983 में उन्होंने पटना विश्वविद्यालय ज्वाइन कर लिया, जहां पर एक शिक्षक और लेखक के रूप में उनकी ख्याति फैलने लगी। उनकी पहली पुस्तक 1982 में आई और कुछ वर्षों में में ही यह पुस्तक आईआईटी-जेईई के उम्मीदवारों के बीच लोकप्रिय हो गई। इसी दौरान उन्होंने अपनी पीएचडी की और 1990 का साल आते-आते उनकी लिखी कई किताबें छात्रों के बीच लोकप्रिय हो चुकी थीं। उनकी किताबों की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके पुराने छात्रों में से एक, जो फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में हैं, ने हाल में एक यू-ट्यूब वीडियो बनाया जिसमें बताया गया है कि उनकी किताबों ने छात्रों के जीवन को कितना प्रभावित किया है। स्वाभाविक रूप से ये वीडियो वायरल हो गया। बेहद विनम्र और मिलनसार चरित्र वाले के.सी. सिन्हा की सोशल मीडिया में भी जबरदस्त फैन फॉलोइंग है। उनके आधिकारिक फेसबुक पेज पर हजारों प्रशंसक हैं। उनकी सफलता का राज बदलावों के मुताबिक खुद को ढालने और उसके हिसाब से नतीजे देने की क्षमता में है। जब आईआईटी बोर्ड ने जेईई के लिए परीक्षाओं के पैटर्न को बदल दिया, तो एक साल के भीतर ही प्रोफेसर सिन्हा आईआईटी-जेईई मेन और एडवांस के लिए अपनी अब तक की लोकप्रिय एडुवाइजर पुस्तक श्रृंखला लेकर आए। अपने छात्रों की बदलती जरूरतों के अनुकूल प्रासंगिक सामग्री मुहैया कराने के कारण उन्हें खुद को प्रतिस्पर्धी माहौल में बनाए रखने में कामयाबी मिली।

प्रोफेसर सिन्हा टेक्नोलॉजी के भी फैन हैं क्योंकि इसे वे दूर-दराज के छात्रों तक पहुंच बनाने के माध्यम के रूप में देखते हैं। उनके तीनों बेटे अनुग, अभिषेक और अंकित आईआईटी शिक्षित इंजीनियर और तकनीक के विशेषज्ञ हैं जिनके कारण प्रोफेसर सिन्हा की महत्वाकांक्षाओं को मदद मिली है। वे कहते हैं, '2019 में विश्वविद्यालय से प्रोफेसर के रूप में अपने पद से सेवानिवृत्त होने के बाद मेरे पास करने के लिए बड़ी योजनाएं हैं। मेरी 10 साल की कार्ययोजना में शिक्षा को सस्ता, सुलभ और गुणवत्ता युक्त बनाना शामिल है।' एडुवाइजर पब्लिशिंग ग्रुप, जो कि अब



प्रोफेसर सिन्हा की अधिकांश स्कूली और प्रतियोगिता परीक्षा की किताबों को प्रकाशित करता है, ने उनके सपने को पूरा करने के लिए शिक्षा-प्रौद्योगिकी क्षेत्र की एक फर्म योरट्यूटर्स (urTutors) के साथ करार किया है। एडुवाइजर K-12 स्कूल सेगमेंट में विज्ञान और गणित की पुस्तकों को प्रकाशित करने वाला प्रमुख प्रकाशक है और उसने एक ऐसा प्लेटफॉर्म बनाने के लिए urTutors.com के साथ साझेदारी की है जहां भविष्य के शिक्षकों को प्रशिक्षण एवं शिक्षण संसाधन (ऑनलाइन लर्निंग, शिक्षा में उत्कृष्टता के केंद्रों का विकास के साथ-साथ अन्य) को सस्ती दर पर अधिक से अधिक लोगों

तक पहुंचाया जा सके। प्रोफेसर सिन्हा युवा और ऊर्जावान उद्यमियों द्वारा स्थापित इन संगठनों का मार्गदर्शन भी करते हैं ताकि ये बिहार में शिक्षा को बढ़ावा दे सके और रोजगार के नए अवसर भी पैदा कर सकें। संयोग से, एडुवाइजर और urTutors.com के सभी संस्थापक बिहार से ही हैं। अपने विस्तृत अनुभव और सोच के जरिये प्रोफेसर सिन्हा जिन उद्यमियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं, उनके बारे में वे कहते हैं, 'इन युवाओं के बारे में जो बात मुझे उत्साहित करती है वह ये है कि वे आगे बढ़कर चुनौती लेने के लिए तैयार हैं और अपने लक्ष्य को लेकर भी पूरी तरह स्पष्ट हैं।' मैं इस बारे में



पूरी तरह आश्चर्य है कि गुणवत्ता और पारदर्शिता के जरिये शिक्षा में लोकतांत्रिक मूल्य लाने की उनकी सोच एवं अपने उत्पादों एवं सेवाओं जरिये शिक्षकों एवं छात्रों को एक साथ सशक्त बनाने का उनका प्रयास जरूर सफल होगा।' प्रोफेसर सिन्हा के पहले से ही चमकदार कैरिअर का अगला चरण भी दिलचस्प और अनुकरणीय रहने वाला है। वे जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे हैं, समाज को उसका हिस्सा वापस करने की प्रेरणा उनमें बढ़ती जा रही है। गांव के बच्चों को मिलने वाले अवसरों में कमी, ऐसी ही एक बड़ी समस्या है और प्रोफेसर सिन्हा जिसका समाधान करना चाहते हैं। वे अपने कॉन्सेप्ट

वीडियो लेक्चर्स तैयार कर रहे हैं और अगले शैक्षणिक सत्र में इन वीडियोज को एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर रिलीज करने की तैयारी में हैं। वे बिहार के मैथिली बच्चों का पलायन रोकना चाहते हैं। अब तक 66 किताबें लिख चुका यह 64 वर्षीय बुजुर्ग शतक लगाने की योजना बनाए बैठा है। क्वांटिटेटिव एंट्रीट्यूड पर लिखी उनकी नई किताब को छात्रों ने हाथों-हाथ लिया है और अब प्रोफेसर सिन्हा देश में चल रहे पोस्ट ग्रेजुएट गणित कोर्स पर अगली किताब लिखने की तैयारी में जुटे हैं। प्रोफेसर सिन्हा अपना समय पटना, दिल्ली, मुंबई और बंगलूरु में बिताते हैं क्योंकि उनके बच्चे वहां बसे हुए हैं।

वे इस समय का उपयोग अपने नाती-पोतों के साथ रिलैक्स करने के लिए करते हैं। अपनी इस पूरी यात्रा में उन्हें अपनी पत्नी का पूरा सहयोग मिला है जिन्होंने घर को बहुत अच्छी तरह संभाला और यह सुनिश्चित किया कि उनके पति का ध्यान अपने काम से न भटके। निश्चित रूप से शिक्षा जगत के एक चमकते सितारे के रूप में प्रोफेसर के.सी. सिन्हा ने सिर्फ अपने लिए ही नहीं बल्कि बिहार के लिए भी यश और सम्मान अर्जित किया है। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए ही *आउटलुक* पत्रिका ने उन्हें 2018 में 'आइकन्स ऑफ बिहार' अवार्ड से सम्मानित किया।





क्लेमेन्ट फ्लोरियन

## राष्ट्रपति पदक ने बढ़ाया मान

अक्टूबर 1955 में पश्चिम चम्पारण के बेतिया जिले के बानू छपरा गाँव के एक किसान परिवार में जन्मे क्लेमेन्ट फ्लोरियन का नाम बिहार अग्निशमन सेवा के क्षेत्र में बड़े सम्मान से लिया जाता है। अपने सेवा काल के दौरान दो बार राष्ट्रपति पदक से सम्मानित फ्लोरियन ने राज्य में आग लगने की कई बड़ी घटनाओं को न केवल नाकाम किया बल्कि सैकड़ों जान भी बचाई। राज्य अग्निशमन पदाधिकारी और बिहार अग्निशमन सेवा के निदेशक के तौर पर अपनी सेवाएं दे चुके फ्लोरियन के कार्यकाल में कुल 951 फायर मैन की नियुक्तियों पर सरकार ने अपनी सहमति दी और उन्होंने अपने कार्यकाल में 826 अग्निको को बहाल कर उन्हें प्रशिक्षित किया। क्लेमेन्ट फ्लोरियन ने बिहार के 203 थानों में मिस्ट टेक्नोलॉजी अग्निशमन वाहन की न केवल प्रतिनियुक्ति की बल्कि उनके प्रयास से बिहार फायर सर्विस एक्ट को भी उनके सेवा काल में लागू किया गया। अक्टूबर 2015 को सरकारी सेवा से निवृत्त हो चुके फ्लोरियन ने 2017 में फ्लोरेंसिया फायर सेप्टी सोल्युशन नामक एक कंसल्टेंसी सर्विस की स्थापना की और आग लगने के कारणों और उससे बचाव से लोगों को जागरूक करने की मुहिम पर काम शुरू किया।

क्लेमेन्ट फ्लोरियन के पिता फ्लोरियन इलास ने कभी सोचा भी न था कि उनका पुत्र गाँव की गलियों से निकलकर एक दिन पूरे प्रदेश का नाम रोशन करेगा। 1972 में बेतिया के क्रिस्ट रजा हाई स्कूल से प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास करने के उपरांत 1974 में फ्लोरियन ने महारानी जानकी कुँवर महाविद्यालय से आई एस सी की परीक्षा पास की और इसी कॉलेज से 1976 में बी. एस. सी. किया।

1977 में उन्होंने बिहार सरकार में अपना योगदान दिया और राज्य सरकार द्वारा उनकी पहली नियुक्ति बिहार फायर सर्विस में बतौर फायर स्टेशन अफसर के रूप में कर दी गई। 1977 से 78 तक फ्लोरियन ने बिहार के गया जिले में रहकर फायर से सम्बंधित प्रशिक्षण हासिल किया और इसी साल उनकी पहली नियुक्ति कटिहार जिले में फायर स्टेशन अफसर के रूप में कर दी गई जहाँ वे 1982 तक कार्यरत रहे।

बातचीत के क्रम में फ्लोरियन बताते हैं कि 1982 से 84 के बीच मेरी पोस्टिंग अविभाजित बिहार के हजारीबाग में थी जब दो समुदायों के बीच हुई हिंसक झड़प में आगजनी की बड़ी घटना हुई थी। पुलिस के साथ मिलकर इस घटना में स्थानीय फायर सर्विस के अधिकारियों और कर्मचारियों ने जिस प्रकार मेरे नेतृत्व में काम किया, उसकी मिसाल लोग आज भी देते हैं। 1985 में फ्लोरियन को हजारीबाग से पूर्णिया ट्रांसफर कर दिया गया जहाँ

वे 1988 तक कार्यरत रहे और 3 साल की सेवा के पश्चात राज्य सरकार द्वारा एक बार फिर उनका तबादला

जमशेदपुर कर दिया गया! पूर्णिया में अपनी पोस्टिंग के बीच 1987 में फ्लोरियन ने नागपुर स्थित नेशनल फायर





सर्विस कॉलेज से एसटीओ यानी फायर इंजीनियरिंग में डिप्लोमा भी हासिल किया।

दिनेश आनंद से हुई बातचीत में फ्लोरियन कहते हैं कि 3 मार्च, 1989 का वह दिन मैं कभी भूल नहीं सकता जब जमशेदपुर में टिस्को का स्थापना दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा था। टिस्को द्वारा निर्मित भव्य पंडाल में टिस्को के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बैठे हज़ारों लोग में सामने दिखाई जा रही झाकियों का आनंद ले रहे थे।

इसी बीच वहां बने विशाल पंडाल में आग लग गई और देखते ही देखते अफरातफरी मच गई और लोग बेतहाशा भागने लगे! मैं अपनी टीम के साथ अविलम्ब घटना स्थल पर पहुंचा और आग पर काबू पाने का प्रयास शुरू किया लेकिन तब तक इस घटना में 63 लोगों की मौत हो चुकी थीं और सैकड़ों लोग गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। जानकारी बताते हैं कि इस भयानक आगजनी के बीच फ्लोरियन और उनकी टीम ने जान की बाजी लगा दी और कड़ी मेहनत एवं अथक प्रयास के बाद वे आग पर काबू पाने में न केवल सफल रहे बल्कि दर्जनों जानें भी बचाई। इस खबर को देश के करीब-करीब सभी समाचारों पत्रों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। ऐसे में फ्लोरियन अपने बेहतर कामों के जरिए अब लोगों के सामने थे।



फ्लोरियन 1993 तक जमशेदपुर में कार्यरत रहे और इसी साल उनका तबादला मुजफ्फरपुर कर दिया गया। फ्लोरियन कहते हैं कि आगलनी की सबसे अधिक घटनाएं मुजफ्फरपुर जिले में ही होती हैं, ऐसे में फायर सर्विस के कार्यालय को सर्वाधिक फोन कॉल भी इसी जिले से आते हैं।

6 जुलाई, 1996 को मुजफ्फरपुर के सरैयागंज में घटी आगजनी की एक घटना को याद कर फ्लोरियन बताते हैं कि सरैयागंज की थोक दवाओं की मंडी में लगी भयावह आग की चपेट में 6-7 दुकानें आ गई थीं। सूचना मिलते ही मैं दमकल की गाड़ियों और अपनी टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचा। पूरे इलाके में अफरातफरी मची थी और दुकानों में रखी ईंधन की बोतलों के कारण आग लगातार फैलती जा रही थी। हमने आग बुझाने के क्रम में देखा कि एक दुकान में पांच लोग बेसुध पड़े थे, मैंने अपने सहयोगी फायरमैन सुधीर की सहायता से उन पाँचों को बाहर निकालने में सफलता हासिल की लेकिन इस प्रयास में मेरे सहयोगी सुधीर बुरी तरह झुलस गए।

इसी साल मुजफ्फरपुर-समस्तीपुर रोड पर एक बड़ी घटना घटी जब जिले के एक सर्वोच्च अधिकारी द्वारा फ्लोरियन को व्यक्तिगत तौर पर घटना की जानकारी लेने भेजा गया। घटनास्थल पर पुलिस भी मौजूद थी लेकिन फ्लोरियन ने अपने तजुबों के आधार पर जाना कि यहाँ आगजनी की कोई घटना नहीं हुई है बल्कि केमिकल का रिसाव बड़े पैमाने पर हो रहा है।

फ्लोरियन विज्ञान के छात्र रहे हैं लिहाजा वहां फैल रही गंध के आधार पर उन्हें यह समझते देर न लगी कि किसी टैंक लॉरी के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण उस इलाके में एचसीएल यानी हाइड्रोक्लोरिक एसिड का रिसाव हो रहा है। हालात की गंभीरता को देखते हुए फ्लोरियन ने आधी रात के वक़्त स्थानीय लोगों की सहायता से पास के गाँव को खाली करवाया और इस प्रकार सैकड़ों लोगों की जान बचाई। लम्बे कार्यकाल के दौरान क्लेमेन्ट फ्लोरियन की सराहनीय सेवाओं को देखते हुए 1995 में उन्हें राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया।

6 जुलाई, 1996 के दिन फ्लोरियन को सहायक राज्य अग्निशमन पदाधिकारी यानी असिस्टेंट स्टेट फायर ऑफिसर के रूप में पदोन्नति मिली और वे स्थाई तौर पर पटना सचिवालय स्थित कार्यालय में बैठने लगे! इस दौर में बिहार राज्य अग्निशमन के लिए तैयार कई बड़ी योजनाओं पर काम करते हुए फ्लोरियन ने राज्य अग्निशमन पदाधिकारियों को सहयोग किया, साथ ही पटना में हुए कई भयावह अग्निकांडों के अग्निशमन का न केवल सफल

नेतृत्व किया बल्कि विधि व्यवस्था बनाए रखने में स्थानीय पुलिस को सहयोग भी किया। विभाग के कुछ सेवानिवृत्त अधिकारी कहते हैं कि फ्लोरियन काम के मामले में सदैव दो कदम आगे रहे, भयंकर अग्निकांडों का निरीक्षण करने के उपरान्त फ्लोरियन राज्य सरकार को अपना प्रतिवेदन वक़्त पर सौंपते और निरंतर विभाग में कुछ नया और कुछ अलग करने का प्रयास करते रहे।

फ्लोरियन ने समय-समय पर फायरमैन और स्टेशन ऑफिसर्स को प्रशिक्षण देने के अलावा बाढ़, भूकंप आदि के अतिरिक्त आपदा प्रबंधन से संबंधित जागरूकता अभियान से जुड़कर स्थानीय नागरिकों को आगलगी के कारणों और उनसे बचाव से संबंधित मॉक ड्रिल भी आयोजित करवाया। साथ ही राज्य के कई शहरों में फायर से संबंधित कई सेमीनार भी सफलतापूर्वक आयोजित किये और इस अवधि में वे फायर के निदेशक प्रमुख के विशेष कार्य पदाधिकारी के तौर भी कार्यरत रहे।

2007 में फ्लोरियन सहायक प्रमंडलीय अग्निशाम पदाधिकारी के पद पर प्रोन्नत हुए और 2012 में एक बार फिर उन्हें प्रमंडलीय अग्निशाम पदाधिकारी के रूप में प्रोन्नति मिली।

इस बीच पटना स्थित सेंट जेवियर्स स्कूल के पूर्व छात्र और इलाहाबाद एग्रीकल्चर डीमंड यूनिवर्सिटी से स्नातक फ्लोरियन के पुत्र मोहित कुमार सिविल सर्विसेस की तैयारियों के दौरान एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए और उन्हें अपने दोनों पाँव गंवाने पड़े! जयपुर फुट के सहारे चलने वाले मोहित खुद को दिव्यांग नहीं समझते। यही वजह है कि वे न केवल कार और बाइक खुद चलाते हैं बल्कि अपने पिता से किसी प्रकार की आर्थिक सहायता लिए बग़ैर अपने दम पर अपने निजी कोचिंग सेंटर का संचालन कर रहे हैं।

फ्लोरियन के अनुकरणीय कामों को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा उन्हें 2013 में प्रोन्नति देकर राज्य अग्निशाम पदाधिकारी के रूप में कार्यभार सौंपा गया और इस अवधि में उनके किये गए कामों को लोग आज भी याद करते हैं। जानकारों का कहना है कि 1990 के बाद से फायरमैन की कोई बहाली न होने के कारण विभाग इन कर्मचारियों की भारी कमी से जूझ रहा था, फ्लोरियन ने इस कमी को गंभीरता से लिया और राज्य सरकार का ध्यान इस ओर खींचा। कुछ ही समय बाद सरकार ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए 951 फायरमैनो की नियुक्ति के लिए फ्लोरियन को अधिकृत किया। अपने कार्यकाल के अंतिम दौर तक फ्लोरियन द्वारा 826 अग्निकों की बहाली कर उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई। उनके



सेवा काल में ही बिहार के 203 थानों में मिस्ट टेक्नोलॉजी अग्निशमन वाहन की प्रतिनियुक्ति हुई और उनका यह कदम बिहार के अग्निशमन के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ।

2012 में एक बार फिर क्लेमेन्ट फ्लोरियन को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पदक देकर सम्मानित किया गया। 2014 में बिहार फायर सर्विस एक्ट का गठन हुआ जिसे फ्लोरियन के प्रयास से उनके ही सेवाकाल में लागू भी किया गया।

2015 में फ्लोरियन को बिहार अग्निशाम सेवा के निदेशक के तौर पर प्रोन्नति मिली और फ्लोरियन ने अपनी टीम के

साथ सचिवालय स्थित सरकारी कार्यालय से लोदीपुर स्थित नवनिर्मित कार्यालय से अपना कार्य आरम्भ किया।

क्लेमेन्ट फ्लोरियन 31 अक्टूबर, 2015 को बिहार अग्निशाम सेवा के निदेशक पद से सेवानिवृत्त तो हो गए लेकिन अपने बेहतर कामों की बदौलत दो बार राष्ट्रपति पदक हासिल कर चुके इस शख्स की छवि आज भी लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। आज फ्लोरिनिका फायर सेफ्टी सोल्युशन के निदेशक के तौर पर काम कर रहे फ्लोरियन कहते हैं कि घर, ऑफिस, कार आदि में फायर से सम्बंधित सभी उपकरणों का होना केवल सरकार की नहीं बल्कि हमारी भी जिम्मेवारी बनती है ताकि वक़्त आने पर हम अपने जानो माल की हिफाज़त कर सकें।





पद्मश्री श्रीमती गोदावरी दत्त

## मिथिला पेंटिंग को पहुंचाया दुनिया के कोने-कोने में

मिथिला पेंटिंग की जब भी बात होती है गोदावरी दत्त का नाम खुद-ब-खुद सामने आ जाता है। कला की दुनिया में उनका नाम सम्मान से लिया जाता है। उन्हें बिहार के बेहद पिछड़े मिथिलांचल इलाके में दीवारों पर उकेरी जानी वाली पेंटिंग को वहां से निकाल पूरी दुनिया में पहुंचाने का श्रेय जाता है। उनके द्वारा प्रशिक्षित हजारों लोग आज चित्रकला की इस विधा के जरिये जीविकोपार्जन कर रहे हैं। वयोवृद्ध गोदावरी जी 89 साल की उम्र में भी इतनी सक्रिय हैं कि पटना स्थित बिहार म्यूजियम में कोहबर थीम पर पिछले दिनों उन्होंने एक विशाल पेंटिंग बनाई है जिसे देखने लोग दूर-दूर से आते हैं। 2018 में पद्मश्री से सम्मानित गोदावरी दत्त के नाम 1973 से लेकर 1979 तक लगातार सात साल ऑल इंडिया हैंडीक्राफ्ट एक्जीबिशन अवार्ड से सम्मानित होने का रिकार्ड है। इसके अलावा उन्हें दो बार देश के राष्ट्रपति के हाथों भी सम्मान हासिल हुआ है। 1980 में तत्कालीन राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी के हाथों उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला जबकि 2006 में राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा शिल्प गुरु सम्मान से सम्मानित की गई। राज्य तथा देश के स्तर पर उन्हें मिले अन्य पुरस्कारों, सम्मानों की तो कोई गिनती ही नहीं है





गोदावरी दत्त का जन्म 7 नवंबर, 1930 को बिहार के दरभंगा जिले के बहादुरपुर गांव में हुआ था। दरभंगा जिला बिहार के मिथिलांचल में आता है जहां शादी-ब्याह तथा अन्य शुभ कार्यों में दीवारों तथा फर्श पर देवी-देवताओं, प्राकृतिक नजारे, चांद-तारे, पेड़-पौधों, मछलियों आदि की चित्रकारी का पारंपरिक रिवाज है। यहां की महिलाएं इस कार्य में दक्ष होती हैं। इसके अलावा भी घर को सजाने के लिए दीवारों पर चित्रकारी की जाती है। आमतौर पर इसे मिथिला पेंटिंग या मधुबनी पेंटिंग कहा जाता है। पहले इसे फूस के बने घरों की मिट्टी की दीवारों पर उकेरा जाता था मगर अब कागज और कैनवास पर भी बनाया जाता है। ऐसे ही एक मैथिल कायस्थ परिवार में जन्मी गोदावरी दत्त की औपचारिक शिक्षा सिर्फ 9वीं कक्षा तक हुई। उनकी मां सुभद्रा देवी ने उन्हें बचपन से ही मिथिला पेंटिंग का प्रशिक्षण देना आरंभ कर दिया था। उन्होंने पूरी लगन से अपनी बेटी को इस कला की बारीरियां सिखाईं। जल्द ही गोदावरी की उंगलियां ब्रश पकड़ने में सिद्धहस्त हो गईं और ये पेंटिंग उनका जूनून बन गई और वे इसके जरिये कुछ कमाई भी करने लग गईं।

18 वर्ष की उम्र में मधुबनी जिले के रांटी गांव के उपेंद्र दत्त जी से गोदावरी की शादी हुई। शादी के बाद उन्हें तब जीवन की कड़वी सच्चाई का सामना करना पड़ा जब चित्रकारी को लेकर पति से उनकी अनबन होने लगी। आखिरकार पति उन्हें छोड़कर चले गए। गोदावरी दत्त तब एक बेटे की मां



थीं। वे इस संकट से घबराई नहीं और उन्होंने मां की सिखाई कला से ही जीविका कमाने का फैसला कर लिया। एक बार इस कला में अपना कैरियर बनाने का फैसला करने के बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने सरकार तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों में सक्रिय हिस्सेदारी शुरू की जिससे उन्हें लोगों के बीच पहचान बनाने में मदद मिली। उनका संघर्ष रंग लाया और जल्द ही मिथिला चित्रकारी की इस कला में उनका नाम प्रसिद्ध हो गया। लोग उनका काम देखने आने लगे। गोदावरी ने देश-विदेश में कई प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया। पटना, मुंबई, कोलकाता, रांची, त्रिवेंद्रम, चंडीगढ़, सूरजकुंड, दिल्ली हाट आदि में आयोजित कई प्रदर्शनियों में उनकी पेंटिंग्स को भरपूर सराहना

मिली। उन्होंने मुंबई की प्रतिष्ठित जहांगीर आर्ट गैलरी में अपनी सोलो पेंटिंग एक्जीबिशन भी लगाई। विदेश में जापान के उइके स्थित मिथिला म्यूजियम में 1990 से 1994 तक छह बार और हर बार छह महीने के लिए उन्होंने अपनी प्रदर्शनी लगाई। हर बार इनकी पेंटिंग्स को भारी सराहना मिली और वहां भी उन्होंने कई लोगों को यह कला सिखाई। इसके अलावा उन्होंने 1985 में जर्मनी में इंडिया प्रमोशन इवेंट में भागीदारी की। पेरिस के डेकोरेटिव आर्ट म्यूजियम में भी उनकी पेंटिंग्स प्रदर्शित की गई हैं। पर उन्हें कई अन्य आमंत्रण स्वास्थ्य एवं पारिवारिक कारणों से छोड़ने पड़े।

उन्होंने इस कला को दूर-दूर तक फैलाने के लिए मिथिला कला विकास समिति के नाम से एक गैर सरकारी संगठन बनाया और लोग उससे जुड़ने लगे। इससे लोगों को इस कला में प्रवीण होने में मदद मिली। गोदावरी दत्त कहती हैं कि मिथिला में रहने के दौरान उन्होंने खासकर घर में रहने वाली बच्चियों और महिलाओं को यह कला सिखाई ताकि वे भी इसके जरिये धनोपार्जन कर सकें और स्वावलंबी बन सकें। उन्होंने इस पारंपरिक कला को बढ़ावा देने के लिए सीसीआरटी और डीसी हेंडीक्राफ्ट की मदद से सैकड़ों ग्रामीण और कस्बाई युवाओं तथा देश-दुनिया में लगने वाली प्रदर्शनियों के दौरान सैकड़ों विदेशियों को प्रशिक्षण दिया। उनसे सीखने वाले कई लोग बाद में अलग-अलग सरकारी संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए और आज

देश-दुनिया में उनका भी नाम फैला है। मिथिला पेंटिंग्स को बाजारोन्मुख बनाने के लिए गोदावरी दत्त ने इसे साड़ी, चादरों, वाल हैंगिंग आदि पर भी बनाना शुरू किया। ये कलाकृतियां अब ट्रेंडसेटर बन गई हैं और इन्हें पूरी दुनिया में सराहना मिली है। गोदावरी दत्त दरभंगा के ब्रह्मानंद कला महाविद्यालय में 1981 से 1989 तक लेक्चरर रहीं। अभी 89 साल की उम्र में भी वे पेंटिंग्स बनाने में जुटी हैं। उन्होंने हाल ही में बिहार म्यूजियम पटना के लिए कोहबर थीम पर एक विशाल कैनवास पेंटिंग बनाई है। उनके जीवन पर बनी एक डोक्यूमेंट्री फिल्म 'कलाकार नमस्करा' 1988 में दिल्ली दूरदर्शन पर प्रदर्शित हुई। 2014 में बिहार सरकार ने उन्हें लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया।

गोदावरी दत्त ने अपने छह दशक लंबे चित्रकारी कैरियर में कई सम्मान हासिल किए हैं। इनमें 1973 में बिहार स्टेट मास्टर क्राफ्ट पर्सन अवार्ड, चेतना समिति, पटना द्वारा 1975 में ताम्रपत्र, बिहार राज्य हथकरघा एवं हस्तशिल्प कॉरपोरेशन द्वारा 1981 में दिया गया प्रमाणपत्र, बिहार के शिक्षा विभाग के तहत बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा अनुदान एवं मान्यता, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा 1983 में पुरस्कार, कर्ण कायस्थ महासभा दरभंगा द्वारा 1986 में पुरस्कार एवं मान्यता, 1992 में बिहार की मानव संसाधन विकास परिषद द्वारा प्रमाणपत्र, बिहार सरकार के युवा एवं संस्कृति विभाग तथा कोलकाता के पूर्वी क्षेत्र संस्कृति केंद्र द्वारा आयोजित आर्ट कैप में प्रमाणपत्र, कर्ण सेवा द्वारा 2012 में कुलभूषण सम्मान, जनजागरण समिति द्वारा 2013 में विद्यापति चित्रकला रत्न सम्मान, ग्राम विकास परिषद द्वारा 2013 में दिया गया मिथिला विभूति विद्यापति सम्मान शामिल हैं।

उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय हस्तशिल्प प्रदर्शनी में कई एक्सीलेंस सर्टिफिकेट मिले हैं। 1980 में उन्हें देश के राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी के हाथों राष्ट्रीय पुरस्कार मिला जबकि 1996 में उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित लखनऊ महोत्सव के दौरान एक्सीलेंस सर्टिफिकेट दिया गया। 1998 में आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में आयोजित क्राफ्ट बाजार में प्रमाणपत्र, 1998 में राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आयोजित मीरा महोत्सव एवं मेवाड़ महोत्सव में प्रमाणपत्र और मुंबई में आयोजित कर्ण गोष्ठी में सराहना पत्र दिया गया। 2001 में गणतंत्र दिवस परेड में भागीदारी पर रक्षा मंत्रालय पद दिया गया तो 2006 में उन्हें राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के हाथों शिल्प गुरु सम्मान मिला। गोदावरी दत्त लगातार अपने गांव से जुड़ी रही हैं, उन्होंने गांव की टूटी सड़क को मधुबनी के जिलाधिकारी से मिलकर पक्का कराया, गांव की लाइब्रेरी को पुनर्जीवित किया और सरकारी मध्य विद्यालय में कमरे बनवाए। इसके अलावा अब तक उन्होंने 49,000 से अधिक लोगों को मिथिला पेंटिंग की कला सिखाई है।







डॉ. गौतम मोदी

## चिकित्सा जगत में खुद से बनाई पहचान

विरासत में मिली अर्श की गरिमा को बनाए रखने का डॉ. गौतम के व्यक्तिगत जीवन का सफर, फर्श से आरम्भ होकर एक नई ऊंचाई यानी अर्श तक जाता है। उनका मानना है कि सफल माता-पिता की सन्तान होने में सुविधाओं के साथ-साथ ज़िम्मेदारियाँ तथा सफलता के स्थापित उच्च मापदण्ड भी होते हैं। ऐसे में अपनी एक अलग पहचान बनाना किसी फर्श से अर्श तक के सफर से कम नहीं।

डॉ. गौतम मोदी आज के दौर में बिहार व झारखण्ड राज्यों के एकमात्र एलर्जी विशेषज्ञ हैं और एलर्जी की जांच व उपचार में उनकी दक्षता अकाट्य है। भारत के जाने-माने एलर्जी विशेषज्ञ स्व. डॉ. रामकृष्ण मोदी और प्रसिद्ध प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रमिला मोदी के पुत्र डॉ. गौतम मोदी कहते हैं कि उनके पिता न केवल बिहार के बल्कि भारत के प्रारंभिक एलर्जी चिकित्सकों में रहे हैं। डॉ. प्रमिला कहती हैं कि गौतम के पिता की यह इच्छा थी कि उनका पुत्र एलर्जी के इलाज को उनके बाद भी जारी रखे। इसी भावना से प्रेरित हो उनके सपनों को साकार करने हेतु डॉ. गौतम ने शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात 1998 से 2016 में पिता के निधन तक उनके संग कार्य किया व प्रशिक्षण लिया। इसी क्रम में उन्होंने प्रदेश

के चिकित्सा जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर एक अच्छे एलर्जी विशेषज्ञ के रूप में ख्याति प्राप्त की व सामाजिक तौर पर योग्य उत्तराधिकारी के रूप में पहचान बनाई।

पटना के संत जेवियर्स स्कूल के छात्र रहे गौतम मोदी ने कर्नाटक के गुलबर्गा स्थित एम. आर. मेडिकल कॉलेज से एम. बी. बी. एस की डिग्री हासिल की तत्पश्चात दिल्ली के प्रसिद्ध बल्लभ भाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट से एलर्जी में विशेष प्रशिक्षण हासिल किया। लम्बे वक्त तक डॉ. गौतम पटना के कुर्जी स्थित होली फैमिली हॉस्पिटल में केजुअल्टी मेडिकल ऑफिसर के पद पर कार्यरत रहे। तत्पश्चात साल 2005 से पूर्णरूपेण अपने पिता के साथ एलर्जी चिकित्सक





की प्रैक्टिस में लग गए। आज उनके पिता जी द्वारा 1978 में स्थापित और संचालित मोदी एलर्जी क्लीनिक उसी कार्यकुशलता से डॉ.गौतम मोदी की देखरेख में बिहार व झारखंड राज्य के एकमात्र एलर्जी जांच एवं उपचार केंद्र के रूप में कार्यरत है।

डॉ. गौतम को न सिर्फ हिंदी व अंग्रेजी बल्कि उर्दू, कन्नड़ और तेलुगु भाषा की भी अच्छी जानकारी है तथा नाट्य साहित्य से इनका गहरा लगाव है। डॉ.गौतम मोदी की संगीत में आरम्भ से ही गहरी रुचि रही और यही वजह है स्कूल के दिनों से ही कांगो बांगो, ड्रम्स जैसे वाद्ययंत्र बजाने में उनकी दिलचस्पी रहती थी। इसी क्रम में उन्होंने 10 वर्षों तक पटना स्थित भारतीय नृत्य कला मंदिर में कर्नाटक शास्त्रीय गायन की शिक्षा ली और समय-समय पर आयोजित कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। डॉ.गौतम मोदी की पत्नी और बिहार की जानी-मानी प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ.चारु मोदी कहती हैं कि डॉ.गौतम की एलर्जी के प्रति कार्य निष्ठा अनुसरणीय है। खासकर, श्वास सम्बंधी एलर्जी व दवाओं से होनी वाली एलर्जी पर उनका विशेष ध्यान रहता है। अपने जीवन में डॉ. गौतम को अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें साल 2014 में चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों को ध्यान में रखते हुए 'आई नेक्स्ट यंग एचीवर अवार्ड', जिसे बाद में 2017 में डॉ.चारु मोदी ने भी अपने नाम किया और तत्पश्चात वर्ष 2018 में आईकॉन्स ऑफ बिहार अवार्ड प्रमुख है।

समय पर आयोजित कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। डॉ.गौतम मोदी की पत्नी और बिहार की जानी-मानी प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ.चारु मोदी कहती हैं कि डॉ.गौतम की एलर्जी के प्रति कार्य निष्ठा अनुसरणीय है। खासकर, श्वास सम्बंधी एलर्जी व दवाओं से होनी वाली एलर्जी पर उनका विशेष ध्यान रहता है। अपने जीवन में डॉ. गौतम को अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए, जिनमें साल 2014 में चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों को ध्यान में रखते हुए 'आई नेक्स्ट यंग एचीवर अवार्ड', जिसे बाद में 2017 में डॉ.चारु मोदी ने भी अपने नाम किया और तत्पश्चात वर्ष 2018 में आईकॉन्स ऑफ बिहार अवार्ड प्रमुख है।

एलर्जी को परिभाषित करते हुए डॉ.गौतम मोदी कहते हैं कि

शरीर की संवेदनशीलता जब किसी भी वजह से बढ़ जाती है या सहनशक्ति में कमी आने लगती है तो उसे हम एलर्जी कहते हैं। एलर्जी कोई बीमारी नहीं बल्कि डिसऑर्डर यानी विकार है जिसमें शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में कमी आ जाती है। साथ ही, एलर्जी के प्रकोप से शरीर में कई अन्य बीमारियां उत्पन्न होने लगती हैं। चिकित्सा जगत में दो प्रकार से एलर्जी को वर्गीकृत किया गया है, जिनमें पहली, श्वास से सम्बंधित विकार यानी सांस की तकलीफ सर्दी, खांसी, दमा आदि और दूसरी चर्म रोग और आखों की एलर्जी है। डॉ.मोदी कहते हैं कि जीवनशैली में परिवर्तन, प्रदूषण और अचानक जलवायु परिवर्तन यानी ज्यादा ठण्ड और ज्यादा गर्म का एहसास एवं दवाओं का रिएक्शन एलर्जी की वजह बनता जा रहा है। साथ ही, दमे की बीमारी और खाद्य पदार्थों से भी लोगों को



एलर्जी हो रही है। डॉ.गौतम मोदी इंडियन कॉलेज ऑफ एलर्जी एंड एप्ताइड इम्यूनोलॉजी के स्थाई सदस्य एवं पूर्वी क्षेत्र के कन्वener के रूप में कार्यरत हैं। वे समय-समय पर विभिन्न माध्यमों/ कार्यक्रमों से एलर्जी के विषय में जानकारी का प्रचार-प्रसार करते रहते हैं।

जानकारों का कहना है कि डॉ.चारु और गौतम लम्बे समय से समाज सेवा में सक्रिय हैं। डॉ.गौतम जकात में यकीन करते हैं और ऐसे में जरूरतमंद लोगों के बीच ये अपनी आमदनी का एक हिस्सा मुफ्त दवाओं और निःशुल्क चिकित्सा के माध्यम से तो खर्च करते ही हैं। साथ ही, समय-समय पर मुफ्त चिकित्सा शिविर द्वारा निर्धन रोगियों की सेवा का भी योगदान देते हैं। उनकी पत्नी डॉ.चारु मोदी भी पोग्स के माध्यम से दिन-रात गरीबों की सेवा और उन्हें जागरूक करने में लगी है। पोग्स की कई सदस्याएं कहती हैं कि डॉ.चारु पोग्स में बतौर पब्लिक अवेयरनेस कमिटी चेयरपर्सन सभी मेम्बर्स को साथ लेकर जन-जागरूकता अभियान में मुफ्त स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन द्वारा सुरक्षित मातृत्व को बढ़ावा देती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यू.एच.ओ. के मुताबिक इम्यूनोथेरेपी पूरी दुनिया में एलर्जी के इलाज की एकमात्र विधि है जिसमें एलर्जी पैदा करने वाले अलग-अलग पदार्थों के अर्क से जांच की जाती है और इस पद्धति से इलाज करने वाला 1978 में स्थापित व 20,000 संतुष्ट रोगियों द्वारा प्रमाणित मोदी एलर्जी क्लिनिक बिहार-झारखण्ड का पहला और एकमात्र क्लिनिक है।





डॉ. ( कैप्टन ) दिलीप कुमार सिन्हा



रविन्द्र नाथ टैगोर पर डॉ. दिलीप कुमार सिन्हा द्वारा लिखित पुस्तक

## रीढ़ की हड्डी के इलाज को दिया नया आयाम

डॉक्टर ( कैप्टन ) दिलीप कुमार सिन्हा बिहार में ऑर्थोपेडिक सर्जरी की दुनिया का जाना- माना नाम हैं। 73 साल के डॉक्टर सिन्हा 1972 से स्पाइनल कॉर्ड इंजुरी ( एससीआई ) का इलाज कर रहे हैं और पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के ऑर्थोपेडिक विभाग से रिटायर हुए हैं। एससीआई रीढ़ के हड्डी की सबसे खतरनाक चोट है, जिससे कोई भी ग्रसित हो सकता है

इससे चोट के नीचे वाले हिस्से की न केवल हाथ और पैर का शक्ति और महसूस करने का संवेदना खत्म होती है, बल्कि मल या मूत्र उत्सर्जन पर नियंत्रण भी समाप्त हो जाता है। हमारे देश में हर साल रीढ़ की हड्डी में चोट से पीड़ितों की संख्या, कम से कम 20 हजार नए रोगियों की दर से बढ़ रही है। एससीआई को लेकर लोगों में जागरूकता फैलाने में जुटे डॉक्टर दिलीप सिन्हा एससीआई मरीजों की देखरेख से जुड़े 'पटना मॉडल' के जनक हैं। इस मॉडल को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया के विकासशील देशों के लिए कोर मॉडल के रूप में मान्यता दी है।

देश भर में एससीआई का इलाज करने वाले पूरे देश में गिने चुने अस्पताल हैं मगर पटना के होप अस्पताल का इनमें अपना अलग स्थान है। डॉक्टर सिन्हा का यह ड्रीम प्रोजेक्ट है जो मरीजों की जेब पर भारी पड़े बिना उन्हें स्वास्थ्य का वरदान दे रहा है। यह देश का एससीआई इलाज का इकलौता अस्पताल है जो निजी तौर पर चलाया जा रहा है। अन्य सभी अस्पताल या तो कॉरपोरेट घरानों या फिर किसी न किसी ट्रस्ट द्वारा संचालित हैं। एससीआई के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए उन्हें इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर, नई दिल्ली में एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान 2015 में लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2018 में आउटलुक पत्रिका ने उन्हें 'आइकन्स ऑफ बिहार' अवार्ड से सम्मानित किया।

तीन हजार साल ईसा पूर्व के सबसे पुराने लिखित मेडिकल रिकॉर्ड, मिस्स के एडविन स्मिथ पेपिरस में, एससीआई को 'लाइलाज बीमारी' के रूप में घोषित किया गया था, क्योंकि इसके मरीज न तो ठीक हो पाते हैं और न ही लंबे समय तक जीवित रह पाते हैं। प्रोफेसर सर लुडविग 'पोप्पा' गट्टमैन ने दूसरे विश्व युद्ध की शुरुआत से ठीक पहले नाजी जर्मनी से भाग कर इंग्लैंड में शरण ली थी। गट्टमैन ने पहली बार ये साबित किया कि इन रोगियों को भी जीने का अधिकार है और समाज से उन्हें जोड़ने की आवश्यकता है, ताकि चोट के बाद वे मुकम्मल जीवन जी सकें। इन रोगियों के प्रति उनके समर्पण के कारण उन्हें 'पोप्पा' कहा जाता था, जो दो शब्दों पोप और पापा का एक संयोजन है।

भारत में एससीआई के उपचार का विकास भी विश्वास और बदलाव की कहानी है। डॉ. मेरी वर्गीज ने सीएमसी वेल्लोर में रीढ़ की हड्डी के रोगियों के लिए पहली पुनर्वास इकाई स्थापित की थी। सबसे बड़ी बात यह कि डॉ. वर्गीज दुर्घटना के कारण खुद कमर से नीचे लकवाग्रस्त थीं। ऐसी ही कहानी है मेजर एच.पी.एस. अहलूवालिया की, जिन्होंने नई दिल्ली के वसंत कुंज में भारतीय स्पाइनल इंजरी सेंटर की शुरुआत की। मेजर अहलूवालिया 29 मई, 1965 को माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पहले सेना अधिकारी थे। सितंबर







1965 में, जब भारत-पाकिस्तान युद्ध शुरू हुआ, तो उन्हें युद्ध के लिए बुलाया लिया गया था। उनकी यूनिट लाहौर पहुंच गई। जब उनकी यूनिट ताशकंद संधि के तहत लाहौर से लौट रही थी, तो मेजर अहलूवालिया दुश्मन के स्नाइपर की गोलियों की चपेट में आ गए, जिससे वह गर्दन के नीचे पूरी तरह से लकवाग्रस्त हो गए।

लंदन के स्टोक मेंडविले अस्पताल में अपने इलाज के दौरान, उन्होंने भारत में एक ऐसा ही अस्पताल स्थापित करने का निर्णय लिया। लंदन से लौटने के बाद उन्होंने अपने दोस्तों की मदद से एक ट्रस्ट की स्थापना की। 1993 में इस ट्रस्ट के बैनर तले इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर शुरू किया गया और अहलूवालिया को चेयरमैन नामित किया गया। आज यह विश्व प्रसिद्ध सेंटर है। बात करें डॉ. दिलीप कुमार सिन्हा की तो उन्होंने रांची के प्रसिद्ध राजेंद्र मेडिकल कॉलेज से एम.बी. बी.एस की पढ़ाई पूरी की और 1971 में हुई भारत-पाकिस्तान की लड़ाई के दौरान भारतीय सेना के मेडिकल कोर में कैप्टन के पद पर योगदान किया।

कुछ ही समय बाद उनकी 2 माउंटेन डिवीजन युनिट की तैनाती तत्कालीन ईस्ट पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में कर दी गई। युद्ध की समाप्ति पर सेना द्वारा डॉ.सिन्हा

का ट्रांसफर पुणे के किर्की स्थित आर्मी पैराप्लेजिक रिहैब सेन्टर में कर दिया गया जो स्पाइनल इंज्युरी के मरीजों के लिए सेना का पहला अस्पताल था।

आर्मी में रहकर मरीजों की सेवा के दौरान डॉ.सिन्हा इस अस्पताल के संस्थापक एयर मार्शल चहल के संपर्क में आए और चहल ने डॉ.सिन्हा को स्पाइनल कॉर्ड इंज्युरी से संबंधित मरीजों के इलाज की पूरी जिम्मेवारी सौंप दी। इन लकवा ग्रस्त मरीजों का इलाज करते-करते डॉ. सिन्हा का उनके प्रति इनका लगाव बढ़ता गया और जिसने उनके भविष्य जीवन की दिशा तय कर दी।

भारतीय सेना की नौकरी के बाद डॉ. दिलीप अपने गृहराज्य बिहार लौट गए और उन्होंने ऑर्थोपेडिक्स में एम.एस और पी.एच.डी के अलावा प्लास्टिक सर्जरी में एम.सी.एच की डिग्री भी हासिल की। इतनी विशेषज्ञता हासिल करने के साथ वे पटना मेडिकल कॉलेज में कार्यरत रहे। यहीं पर डॉ.दिलीप कुमार सिन्हा स्पाइनल कॉर्ड इंज्युरी से पीड़ित मरीजों के सीधे संपर्क में आए और रोगियों का इलाज शुरू किया।

डॉ.सिन्हा कहते हैं कि तब पी.एम.सी.एच में गरीब मरीजों

की संख्या काफी अधिक थी मगर कर्मचारियों और संसाधनों की भारी कमी थी। ऐसे में इलाज के दौरान मरीजों के मूत्रमार्ग में संक्रमण के अलावा अन्य कई प्रकार के संक्रमण का भी खतरा रहता था। इस कारण मृत्युदर अपने चरम पर थी। इसे देखते हुए डॉ.दिलीप सिन्हा ने अपने सहयोगियों और पी.जी. के कई छात्रों के सहयोग से एस.सी.आई मरीजों को ध्यान में रखकर 'पटना मॉडल' की शुरुआत की।

डॉ.(कैप्टन) दिलीप कुमार सिन्हा कहते हैं कि पी.एम. सी.एच में प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी को देखते हुए हमने 'पटना मॉडल' के तहत समस्या के समाधान की ठानी और प्रयोग के तौरपर मरीज के परिजनों को बुनियादी प्रशिक्षण देना आरंभ किया ताकि जरूरत पड़ने पर वे अपने और दूसरे मरीजों की भी देखभाल कर सकें और प्रशिक्षित नर्स की कमी की भरपाई हो सके। इस क्रम में परिजनों को यह भी सिखाया गया कि यदि किसी दुर्घटना में किसी व्यक्ति की रीढ़ में गहरी चोट लगी हो तो उसे कैसे अस्पताल तक सुरक्षित पहुंचाया जा सकता है। साथ ही इलाज के उपरान्त अस्पताल से छुट्टी मिलने पर कैसे उसकी देखभाल की जानी चाहिए। यह प्रयोग उस समय बिलकुल नया था और पहले कभी किसी ने इस प्रकार का सफल प्रयोग नहीं किया था।

उस समय के कई डॉक्टरों को याद है कि कैसे दृढ़ इच्छाशक्ति वाले डॉ. सिन्हा ने 'पटना मॉडल' की बुनियाद रखी और मानव संसाधन की समस्या का प्रभावी हल तलाशा। डॉ. सिन्हा ने अपने पीजी छात्र डॉ. अरुण कुमार को पटना मॉडल का थीसिस विषय देकर इस मॉडल की शुरुआत की। बाद में डॉ. सुदीप कुमार और डॉ. रवि खंडेलवाल ने इस मॉडल को और परिष्कृत किया। डॉ. (कैप्टन) सिन्हा कहते हैं, "संसाधनों की कमी से जूझने के लिए मैंने एक प्रयोग किया और ये कामयाब रहा।" 'पटना मॉडल' के सफल प्रयोग के कारण डॉक्टर सिन्हा को पूरी दुनिया से सराहना मिल चुकी है। डॉ.सिन्हा के इस मॉडल को पूरी दुनिया में सराहा गया और रेड क्रॉस सोसाइटी और डब्ल्यू.एच.ओ द्वारा समय-समय पर डॉ.दिलीप सिन्हा को विश्व के कई देशों में संबंधित प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित किया जाने लगा और इनकी ख्याति हिन्दुस्तान की सीमा पार कर गई। डॉ. सिन्हा को उनके पटना मॉडल के बारे में व्याख्यान देने के लिए लंदन के स्टोक मेंडविले अस्पताल, अमेरिका में बोस्टन, ऑस्ट्रेलिया में पर्थ, जापान में कोबे और बांग्लादेश, नेपाल, थाईलैंड, मलेशिया और वियतनाम जैसे देशों में आमंत्रित किया गया।

पीएमसीएच में नौकरी के दौरान ही डॉक्टर सिन्हा ने देखा कि स्पाइनल कॉर्ड की चोट के सभी मरीजों का इलाज वहां नहीं हो पाता है। कई मरीजों को इसके इलाज के लिए बिहार से बाहर जाना पड़ता। गरीब मरीजों की आर्थिक हालत इसके कारण दयनीय हो जाती है क्योंकि स्पाइनल कॉर्ड की चोट का इलाज बेहद महंगा साबित होता है। इसी को देखते हुए डॉक्टर सिन्हा ने पटना में होप अस्पताल की शुरुआत की जो कि पूरी तरह सिन्हा परिवार द्वारा संचालित निजी अस्पताल है। डॉ.दिलीप सिन्हा की पत्नी डॉ.कृष्णा सिन्हा खुद फीजियोलॉजी की प्रोफेसर हैं। उन्होंने बताया कि उनके पति और बच्चे लंबे समय से यह महसूस कर रहे थे कि बिहार में एक अच्छे एससीआई अस्पताल की जरूरत है जो कम खर्च में मरीजों का इलाज कर सके। इसे ध्यान में रखकर सिन्हा परिवार ने 1998 में पटना के मीठापुर में होप हॉस्पिटल की शुरुआत की।

डॉ.सिन्हा के पुत्र डॉ.कृष्णज गौरव अमेरिका के जॉन हॉपकिंस मेडिकल इंस्टिट्यूट में प्रसिद्ध हड्डी रोग विशेषज्ञ हैं। डॉ. दिलीप सिन्हा के दूसरे बेटे अर्नब सिन्हा भी हड्डी रोग विशेषज्ञ हैं और उनकी पत्नी रश्मि सिन्हा भी चिकित्सक हैं। अमेरिका में रहने वाले डॉ. कृष्णज गौरव की पत्नी डॉ. रूना पटेल का कहना है कि होप अस्पताल में एक मरीज के रूप में आए सुनील कुमार अस्पताल में सहकर्मी और प्रबंधक के रूप में काम कर रहे हैं। वह एससीआई रोगियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। डॉक्टर सिन्हा चिकित्सा के अलावा समाज के अन्य क्षेत्रों भी काफी सक्रिय हैं। उन्होंने और उनकी टीम ने 70 साल के अंतराल के बाद बिहार के पहले अंग्रेजी



वियतनाम में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑफ स्पाइनल कॉर्ड इंजरी के दौरान पटना मॉडल को पेश करते डॉ (कैप्टन) दिलीप कुमार सिन्हा

साप्ताहिक बिहार हेराल्ड का फिर से प्रकाशन शुरू कराया। उन्हें बिहार राज्य अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष के रूप में नामित किया जा चुका है और वे बिहार बांग्ला अकादमी के अध्यक्ष रह चुके हैं। वह अखिल भारतीय बांग्ला भाषा मंच के अध्यक्ष भी हैं। डॉक्टर सिन्हा रवींद्रनाथ ठाकुर पर हाल में प्रकाशित त्रिभाषी पुस्तक वॉक अलॉन्ग द टाइमलाइन विद टैगोर के सह-लेखक भी हैं। वर्तमान में, साधारण सा दिखने

बाला यह आदमी, भारत के चिकित्सा जगत के किंबदन्ती पुरुष, भारत रत्न डॉ. बी. सी.राय के, पटना स्थित उनके जन्मस्थल और पैतृक निवास स्थल पर परिचालित, उनकी मां श्रीमती अघोर देबी और पिता श्री प्रकाश राय के नाम से नामांकित, गरीब बच्चों का बिद्यालय अघोर प्रकाश शिशु सदन के 180 साल पुराने परिसर को, टुट कर गिरने से बचाने के लिए प्रयासरत हैं।





उनके परिवार के सदस्य बताते हैं कि 1988 में देवेंद्र का विवाह अनुपमा कश्यप के साथ हुआ और और पति-पत्नी आगे की पढ़ाई के लिए गया से पटना आ गए। इसी साल अनुपमा ने पटना विश्वविद्यालय में पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में दाखिला लिया तो देवेंद्र ने पटना इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र के रूप में एम टेक की पढ़ाई आरम्भ की। मेधावी छात्र के रूप में पहचान रखने वाले देवेंद्र को यू जी सी की तरफ से 1800 रुपए प्रतिमाह स्टायपेंड के तौर पर मिलते रहे और इसी छोटी सी रकम से पति-पत्नी का गुजारा होता। पुराने दिनों को याद कर डी.एन.सिंह कहते हैं की उनदिनों हम पटना के कंकड़बाग में बैद्यनाथ प्रसाद के मकान में 700 रुपए प्रतिमाह देकर किराये पर रहा करते थे। हमारे पास किसी प्रकार की कोई सवारी भी नहीं थी, ऐसे में हम दोनों पति-पत्नी कंकड़बाग स्थित अपने किराये के घर से प्रतिदिन पैदल विश्वविद्यालय आते जाते रहे, गया से जब हम पटना आये थे तो साथ में एक स्टोव भी लेकर आये थे लेकिन कुछ ही दिनों बाद अनुपमा के पिता ने हमें एक गैस चूल्हा दिलवाया। आर्थिक हालात बेहद खराब हो चले थे, ऐसे में मैंने कुछ काम करने का फैसला लिया और 1989 में मुझे एक कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा बोरिंग रोड स्थित कृष्णा अपार्टमेंट में ईट सप्लाई का काम मिला, कुछ ही वक़्त बाद कंपनी की इसी साइट पर मुझे बालू सप्लाई का भी काम मिला और हालात पहले से बेहतर हुए। निर्माणधीन अपार्टमेंट पर आने जाने के क्रम में मैंने कंस्ट्रक्शन के कामों को बारीकी से समझा और आने वाले कुछ ही सालों में सर्वोदय कंस्ट्रक्शन के नाम से अपनी कंपनी की शुरुआत की। देवेंद्र कहते हैं कि बी.आई.टी मेसरा में पढ़ाई के दौरान उनके एक मित्र रिपुंजय प्रसाद सिंह ने पटना में अपनी 5000 वर्गफीट खाली ज़मीन का मुझसे ज़िक्र किया था, बग़ैर देरी किए मैंने रिपुंजय से संपर्क किया और उसी ज़मीन से गणेश अपार्टमेंट के रूप में मेरे



## डी.एन.सिंह

# शून्य से शिखर तक

जनवरी 1964 को गया जिले के खिजर सराय थाना क्षेत्र के सूरजु बीघा गाँव में जन्मे देवेंद्र नारायण सिंह को आज पूरा प्रदेश प्रसिद्ध बिल्डर डी.एन.सिंह के नाम से जानता है! सर्वोदय कंस्ट्रक्शन के प्रबंध निदेशक डी.एन.सिंह आज सफलता के जिस मुक़ाम पर खड़े हैं उससे पूरा प्रदेश तो वाकिफ है लेकिन जिन मुश्किल हालातों से गुज़रकर सिंह ने यह शोहरत हासिल की है, वो अद्भुत है और बेमिसाल भी





1974 में देवेंद्र के चाचा डॉ.अरविन्द कुमार का दाखिला गया स्थित गया मेडिकल कॉलेज में हुआ और देवेंद्र अपने चाचा के साथ आगे की पढ़ाई के लिए गया आ गए और गया के एक स्थानीय स्कूल में इनका नामांकन हुआ और इसी विद्यालय से देवेंद्र ने प्रथम श्रेणी में 1978 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। देवेंद्र के पिता मेरीन इंजीनियर थे लेकिन उन्होंने खुद से अपना व्यापार शुरू किया था ऐसे में देवेंद्र खाली पड़े समय में पिता के कारोबार में उनका सहयोग करते। देवेंद्र कहते हैं कि उनके पिता गाँव में सस्सों से तेल निकलने,धान कूटने के अलावा आटा चक्की का भी व्यवसाय करते थे, साथ ही उनका ट्रॉसपोर्ट का भी कारोबार था। 1978 में देवेंद्र ने गया के प्रसिद्ध अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज में दाखिला लिया और 1980 में आई.एस.सी की परीक्षा पास की। 1981 में देवेंद्र इंजीनियरिंग की परीक्षा में बैठे लेकिन पास नहीं हुए और इसी साल इन्होंने बी.एस.सी में दाखिला लिया। साल 1982 में देवेंद्र ने पुनः इंजीनियरिंग की परीक्षा दी और बी.आई.टी मेसरा से उत्तीर्ण हुए और यहीं से साल 1986 में इंजीनियरिंग की परीक्षा भी पास की! ई.डी.एन.सिंह कहते हैं कि 1986 में राज्य में डॉ.जगन्नाथ मिश्रा की सरकार थी और गया की फाल्गु नदी पर अमरेंद्र दयाल सिंह के भसीन कंस्ट्रक्शन द्वारा पुल का निर्माण करवाया जा रहा था। ऐसे में मुझे इस कंपनी से जुड़कर मेटल सप्लाय करने का

अवसर मिला। कुछ ही वक्त बाद मैंने वह काम छोड़ दिया और 1987 में दैनिक वेतनभोगी के तौर पर कनीय अभियंता के रूप में गया रीजनल डेवलपमेंट अथॉरिटी में अपना योगदान दिया! देवेंद्र कहते हैं मैंने कि जी.आर.डी.ए और भसीन कंस्ट्रक्शन कंपनी से जो कुछ कमाया उसे अपने गया स्थित घर के निर्माण में लगा दिया।

1988 में देवेंद्र के पिता ने एंकंगरसराय से ईट भट्टे का कारोबार शुरू किया लेकिन पिता की तबियत ठीक न रहने के कारण देवेंद्र सिंह को यह कारोबार कुछ वक्त के लिए संभालना पड़ा। जून 1988 में देवेंद्र और अनुपमा की शादी हुई और संघर्ष की नई शुरुआत हुई। अनुपमा के पिता स्व.सत्यदेव प्रसाद अपने जमाने में नवादा के प्रसिद्ध उद्योगपति हुआ करते थे। अनुपमा वनस्थली विद्यापीठ से स्नातक थी और शादी के बाद आगे की पढ़ाई जारी रखना चाहती थी। ऐसे में दोनों पति पत्नी 1988 में पटना आ गए और देवेंद्र सिंह ने पत्नी का नामांकन पटना विश्वविद्यालय में करवाया और खुद भी इंजीनियरिंग कॉलेज (एम.टेक) में दाखिला लिया! यू.जी.सी द्वारा देवेंद्र को स्टाइपेंड के तौर पर मिल रहे 1800 रुपए घर के किराये में खर्च हो जाते और बचे रुपयों से महीने तक घर का खर्च चलता!



निर्माणाधीन साइट पर गिराने लगे। अपार्टमेंट में निरंतर आने जाने के दौरान सिंह को अपार्टमेंट निर्माण की तकनीकी जानकारी मिली और उन्होंने बिल्डर बनने का फैसला लिया। इधर 1986 में देवेंद्र के पिता मस्कुलर एट्रोपी नामक बीमारी की चपेट में आ गए और लम्बे चले इलाज के बाद दिसम्बर 1991 में उनका निधन हो गया। 1990 के आस पास डी.एन. सिंह ने सर्वोदय कंस्ट्रक्शन के नाम से एक कंपनी का गठन किया और एक दोस्त की खाली पड़ी 5000 वर्ग फीट जमीन पर श्री गणेश अपार्टमेंट की बुनियाद रखी। देवेंद्र ने ग्राउंड के साथ 4 फ्लोर पर कुल 18 फ्लैट का निर्माण करवाया और फिर आगे आने वाले चंद ही सालों में डी.एन.सिंह का नाम अब हर किसी की जुबान पर था। डी.एन.सिंह द्वारा बनाए गए कुछ प्रमुख प्रोजेक्टों में जगतारणी टावर, बासुदेवा कर्मशियल काम्प्लेक्स, ओम निर्मलया अपार्टमेंट, श्री जगदीश अपार्टमेंट, गया सर्किट हाउस के निकट बिग बाजार, निर्माणाधीन सर्वोदय सिटी और सिल्वर कोस्ट आदि प्रमुख हैं। डी.एन.सिंह की मानें तो पटना के डाक बंगलो रोड के पास बैंक ऑफ़ बड़ौदा ए टी.एम के निकट इनकी खाली पड़ी 11 कट्टे जमीन पर शीघ्र ही एक मॉल का निर्माण शुरू किया जाएगा।

अपनी पत्नी अनुपमा कश्यप से जुड़े एक सवाल पर डी.एन. सिंह कहते हैं कि अनुपमा न केवल संगीत की अच्छी जानकारों में है बल्कि एक बेहतरीन सूफी और ग़ज़ल गायिका भी है। इसकी जानकारी लोगों को तब मिली जब होली की एक शाम गोल्फ क्लब द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने अपनी आवाज़ से पटना वासियों का परिचय करवाया। अपनी तरक्की में देवेंद्र अपनी पत्नी अनुपमा का महत्वपूर्ण योगदान मानते हैं जिन्होंने हर मुश्किल घड़ी में न केवल उनका साथ निभाया बल्कि अपने बच्चों को अच्छी तालीम और संस्कार दिए। अनुपमा और डी.एन.सिंह के दो बच्चों में पुत्र आकाशदीप ने हॉवर्ड बिज़नेस स्कूल से शिक्षा हासिल की है तो बेटी दीपांजलि ने गुडगाँव स्थित अंसल यूनिवर्सिटी से आर्किटेक्चर की पढ़ाई की है और उच्च शिक्षा हासिल करने के इरादे से लन्दन जाने की तैयारी में है।

डी.एन.सिंह दीघा में बन रहे अपने ड्रीम प्रोजेक्ट सिल्वर कोस्ट और सगुणा खगौल रोड पर बन रहे सर्वोदय सिटी को लेकर बातचीत के क्रम में भावुक होकर कहते हैं कि सिल्वर कोस्ट एक टाउनशिप है जिसमें 182 फ्लैटों का निर्माण मॉल कम मल्टीप्लेक्स और फूड कोर्ट के साथ किया जाना है, साथ ही सर्वोदय सिटी में प्ले स्कूल, क्लब हाउस, स्विमिंग पूल, पुरुष एवं महिलों के लिए स्पा-डिपार्टमेंटल स्टोर एवं चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाना हमारी प्रार्थमिकता में शामिल है। लेकिन सरकारी नीतियों के कारण ग्राहकों से किये गए वादों को पूरा करने में अब तक हम विफल रहे लेकिन जल्द ही हम अपने वायदों को पूरा करेंगे और अपने ग्राहकों की उमीदों पर खरा उतरने की हर संभव कोशिश करेंगे।

शुभारंभ किया। सिंह की फूड डिवीजन कंपनी के पास केवेन्टर्स मिल्क शेक की बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश की न केवल मास्टर फ्रेंचाइजी है बल्कि वे पटना में एल बी डब्लू रेस्तरां की दो शाखाओं के अलावा सभी सुविधाओं से युक्त होटल सर्वोदय का सफलता पूर्वक संचालन भी कर रहे हैं!

बिहार के गया जिले में जन्मे देवेंद्र नारायण सिंह की जिन्दगी का सफर काफी शानदार रहा है। स्व.बासुदेव प्रसाद सिंह और सैब्या देवी के पुत्र देवेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा अपने चाचा डॉ.अरविन्द कुमार और फूफा मदन लाल की देखरेख में पटना के राजेंद्र नगर स्थित राजेंद्र पब्लिक स्कूल से हुई। कुछ ही वक्त बाद देवेंद्र वापस गाँव लौट गए और पिता की देखरेख में आगे की पढ़ाई शुरू की। शुरुआती कई महीनों तक देवेंद्र स्कूल नहीं गए और गाँव के शिक्षक रामवचन प्रसाद के अधीन शिक्षा ग्रहण की। संयुक्त परिवार में पले-बढ़े देवेंद्र के पिता ने अपने पुत्रों के अलावा गाँव के बच्चों के लिए भी निशुल्क पढ़ाई की व्यवस्था कर रखी थी। कुछ ही वक्त बाद देवेंद्र के पिता ने पांचवीं कक्षा में इनका नामांकन एंकंगरसराय के नजदीक एंकंगरडीह स्थित कुंडवापर के पास सीनियर बेसिक स्कूल में करवाया जहाँ खपैल से बनी छत के नीचे देवेंद्र ने अपने सहपाठियों के साथ कुछ वक्त बिताया। 6 माह की पढ़ाई के उपरान्त देवेंद्र नेतरहाट की परीक्षा में पास न हो सके ऐसे में उन्हें वापस घर लौटना पड़ा।







डॉ. नरेंद्र प्रसाद

## साइकिल से पद्मश्री तक का सफर

डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद बिहार के ख्यातिप्राप्त सर्जन हैं। साठ के दशक में साइकिल की सवारी कर दूर-दराज के गरीब मरीजों का इलाज करने वाले डॉ. प्रसाद को 2004 में उनकी सेवाओं के लिए देश में डॉक्टरों को दिया जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान डॉक्टर बी.सी. राय अवार्ड दिया गया तो देश में नागरिक क्षेत्र में दिए जाने वाले चौथे सबसे बड़े सम्मान पद्मश्री से 2015 में सम्मानित किया गया है। कभी पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उनके दादा को मेडिकल की पढ़ाई बीच में छोड़नी पड़ी थी। इस बात को ध्यान में रख डॉ. नरेंद्र के पिता मेदनी प्रसाद ने अपने पुत्र को उसके दादा का सपना पूरा करने का संकल्प दिलाया

पटना में डॉ. नरेंद्र प्रसाद के द्वारा स्थापित आलोक नर्सिंग होम एवं अनुपमा अस्पताल अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस एक प्रसिद्ध चिकित्सा केंद्र है जिसे अब उनके काबिल सर्जन पुत्र डॉक्टर आलोक अभिजीत संभाल रहे हैं।

बिहारशरीफ से चार किलोमीटर दूर तिउरी गांव में आजादी से 14 साल पहले 1933 के 8 सितंबर को जन्मे नरेंद्र प्रसाद अपने पिता मेदनी प्रसाद और माता उमा देवी की सात संतानों में दूसरे नंबर पर थे उनके दादा राजकुमार लाल गांव के जमींदारों में शुमार होते थे, वे डॉक्टर बनना चाहते थे और इसकी पढ़ाई के लिए उन्होंने पटना के टेम्पल मेडिकल स्कूल (वर्तमान में पटना मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल, पीएमसीएच) में दाखिला लिया था। हालांकि वे मेडिकल की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए और जमींदारी के कामों के बोझ के कारण पढ़ाई अधूरी छोड़ दी, पर जैसे-जैसे परिवार बड़ा होता गया, जमींदारी छोटी होती गई। स्थिति यह हो गई कि राजकुमार लाल के बड़े बेटे मेदनी प्रसाद को अपना परिवार चलाने के लिए पहले कोर्ट में क्लर्क की नौकरी करनी पड़ी जहां तरक्की पाकर वे मुहर्रिर और फिर पेशकार के पद तक पहुंचे। बाद में उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और सरकारी शिक्षक बन गए।



उन्होंने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाई मगर उनमें भी नरेंद्र प्रसाद बेहद मेधावी थे। मेदनी प्रसाद चाहते थे कि नरेंद्र मेडिकल की पढ़ाई करे और उनके पिता का जो सपना अधूरा रह गया है, उसे उनका यह बेटा पूरा करे।

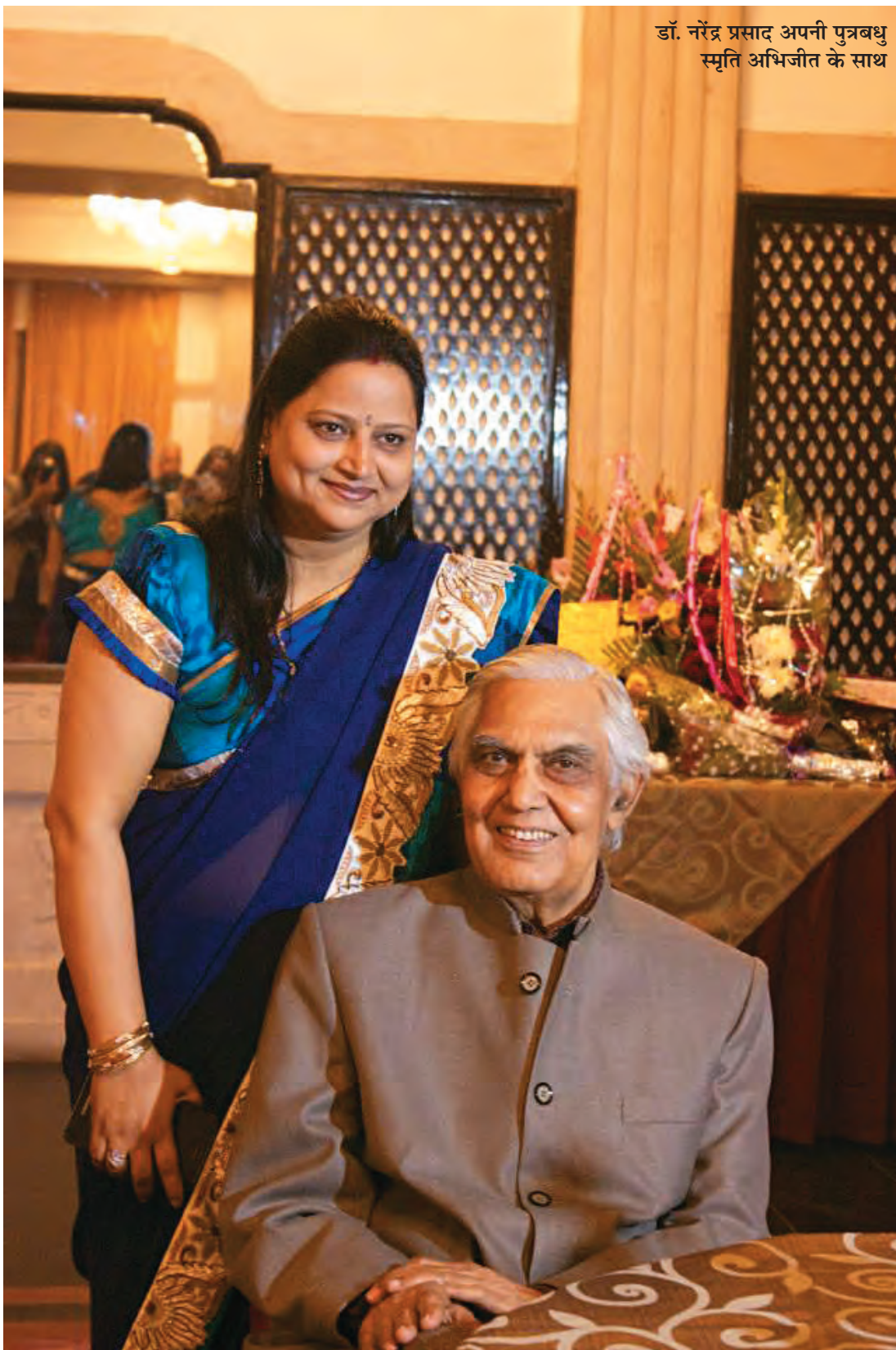
नरेंद्र ने भी इस सपने को अपना सपना बना लिया। उनकी सातवीं तक की शिक्षा औंदा मिडल स्कूल में हुई, आठवीं से आगे की पढ़ाई उन्होंने राजा राममोहन राय सेमिनरी स्कूल पटना से की, स्कूल से कॉलेज तक की उनकी पूरी पढ़ाई फुल फ्री शिप के तहत हुई। 1956 में उन्होंने पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल से एमबीबीएस की डिग्री हासिल कर दादा का सपना पूरा किया। हालांकि यह साल उनके लिए एक बुरी खबर लेकर भी आया जब उनके पिता का किडनी की बीमारी के कारण निधन हो गया।

एमबीबीएस करने के एक साल बाद उनका चयन बिहार स्वास्थ्य सेवा संवर्ग में हुआ और 1958 में उन्हें सहरसा जिले के थुम्हा स्वास्थ्य केंद्र पर बतौर सिविल असिस्टेंट सर्जन नियुक्त किया गया। यहां वे 1960 तक कार्यरत रहे। वे एम.एस. और एफआरसीएस करना चाहते थे मगर आर्थिक हालत गड़बड़ थी, यह देखकर उन्होंने निजी प्रैक्टिस शुरू की। थुम्हा केंद्र से जो समय बचता था, उसमें वे साइकिल से मीलों दूर तक जाकर मरीजों का इलाज करते थे। इस दौरान उन्होंने पीएमसीएच से एम.एस. की पढ़ाई भी आरंभ कर दी थी। 1959 में उन्हें एम.एस. की डिग्री मिली, इसके बाद अपने सपने को पूरा करने वे 1961 में पानी के जहाज से इंग्लैंड गए और एक साल बाद 1962 में रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन, इंग्लैंड से उन्होंने एफआरसीएस किया।

इस दौरान पैसे की कमी के कारण उन्होंने मेनचेस्टर के बरी जनरल अस्पताल में नौकरी की। उन्होंने कुछ दिन क्वींस होम्योपैथी अस्पताल, लंदन में सर्जिकल रजिस्ट्रार का पद भी संभाला मगर आखिरकार 30 सितंबर, 1962 को वे मातृभूमि लौट आए। यहां आकर उन्होंने पीएमसीएच में नौकरी के साथ-साथ निजी प्रैक्टिस आरंभ की, पटना के मखनियां कुआं इलाके में 40 रुपये मासिक पर एक कमरा लेकर उन्होंने अपना क्लिनिक शुरू किया। तब बिजली की खराब हालत के कारण उन्होंने टॉर्च की रोशनी में कई बड़े ऑपरेशन किए। 1962 से लेकर 1992 तक उन्होंने पीएमसीएच में रेजिडेंट सर्जिकल ऑफिसर के पद से नौकरी की शुरुआत कर सर्जरी विभाग के अध्यक्ष पद तक को सुशोभित किया।

डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद के जीवन का दूसरा अध्याय 1963 में शुरू हुआ जब लीला प्रसाद से उनका विवाह संपन्न हुआ। पत्नी इंटर पास थीं और डॉक्टर नरेंद्र ने उन्हें आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। लीला जी ने मगध महिला कॉलेज से बीए ऑनर्स किया। इसी बीच 15 जून, 1964

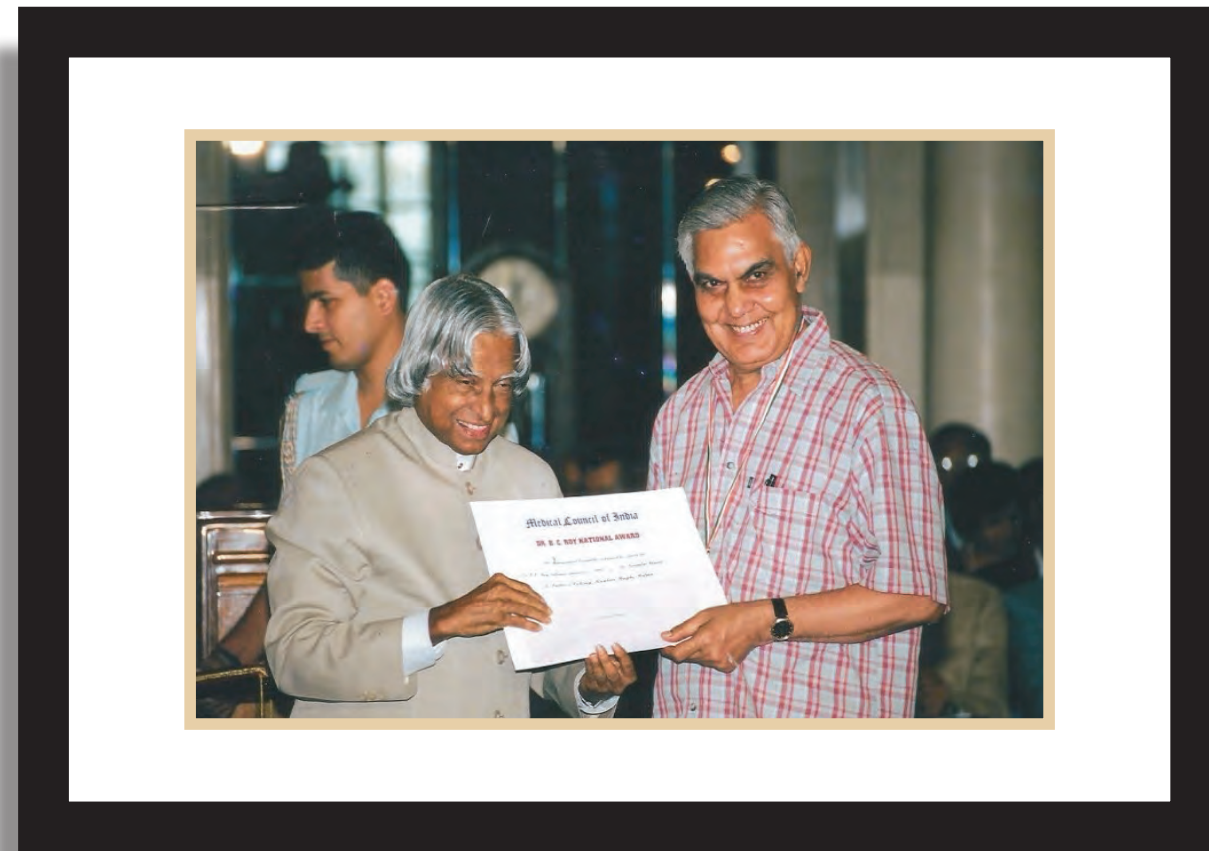




डॉ. नरेंद्र प्रसाद अपनी पुत्रबधु  
स्मृति अभिजीत के साथ

को इस दंपति के घर बेटे आलोक अभिजीत का जन्म हुआ और इसके तीन वर्ष बाद 18 जून, 1967 को बेटी अनुपमा का जन्म हुआ। लीला प्रसाद ने पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए एमए की पढ़ाई पूरी की और इसके बाद अरविंद महिला कॉलेज में इतिहास की लेक्चरर बन गईं। बाद में उन्होंने इतिहास में ही डॉक्टरेट की उपाधि भी ली, इस बीच परिवार की आर्थिक हालत सुधरने लगी तो खर्जांची रोड में जमीन खरीदकर उन्होंने निजी प्रैक्टिस को मखनियां कुआं से यहीं शिफ्ट कर लिया। आज यहां स्थित आलोक नर्सिंग होम और अनुपमा अस्पताल की पहचान देश के बड़े और अत्याधुनिक केंद्रों में होती है। उनकी पुत्री अनुपमा पेशे से वकील थीं मगर शादी के कुछ ही समय बाद पेट्रिक अल्सर के कारण 1996 में उनकी असामयिक मौत हो गई। इससे लीला जी पूरी तरह टूट गईं। वे गुमसुम रहने लगीं और कई तरह की बीमारियों की चपेट में आ गईं। आखिरकार 2009 में लीला प्रसाद ने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया। पहले बेटी और फिर पत्नी के जाने से डॉ. प्रसाद टूट गए। इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। चिकित्सा के पेशे में उनका नाम आसमान पर लिखा हुआ था। बिहार ही नहीं, सर्जरी के मामले में पूरी दुनिया में उनका नाम इज्जत से लिया जाता है। जाहिर है, जब ईसान की कामयाबी बढ़ती है तो उसकी जिम्मेदारियां भी उसी अनुपात में बढ़ती हैं और डॉ. नरेंद्र ने अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ना नहीं सीखा, इसलिए पारिवारिक मोर्चे पर इतने झटके लगने के बावजूद वे अपनी पेशेगत और सामाजिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते रहे। एक डॉक्टर के रूप में अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए उन्होंने दुनिया के कई देशों की यात्राएं की हैं और व्याख्यान दिए हैं।

उनके पुत्र आलोक अभिजीत भी एक डॉक्टर और काबिल सर्जन हैं एवं अब डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद के अस्पताल का काम संभालते हैं। डॉक्टर आलोक की शादी रांची के प्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ डॉक्टर रमेश की पुत्री स्मृति के साथ हुई है और दंपति को दो पुत्रियों और एक पुत्र के माता-पिता होने का सौभाग्य प्राप्त है। डॉक्टर प्रसाद का ज्यादातर समय अब पोते-पोतियों और अपने प्रोफेशन एवं समाजसेवा में ही बीतता है। डॉक्टर प्रसाद जेपी से प्रभावित रहे और जेपी विचार मंच के अध्यक्ष का काम भी संभाला। उनके प्रयासों और तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के अनुमोदन से लोकसभा में जेपी की 18 फीट ऊंची कांस्य प्रतिमा की स्थापना हुई थी। समाजसेवा को लेकर वे कितने प्रतिबद्ध हैं, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अपने गांव की जमीन उन्होंने समाज के नाम समर्पित कर दी। गांव की अपनी 5 एकड़ जमीन उन्होंने बिहार के राज्यपाल के नाम रजिस्ट्री कर दी और उस जमीन पर राज्य सरकार की अनुमति से एक हाईस्कूल का निर्माण करवाया है। इस स्कूल का नाम उनके पिता और माता के नाम पर



मेदनी-उमा उच्च विद्यालय रखा गया है। डॉक्टर प्रसाद के भाइयों ने भी अपनी जमीन राज्य सरकार को दी है जिसपर सरकार की ओर से मध्य विद्यालय चलाया जा रहा है। गांव के विकास के लिए उन्होंने और भी कई काम कराए हैं। उन्होंने एक स्वावलंबी सहकारी समिति का गठन कराया है जिसका नेतृत्व उनके पुत्र डॉक्टर आलोक करते हैं। गांव के सर्वांगीण विकास और खासकर बच्चों के कॅरिअर को लेकर डॉक्टर साहब बहुत ही सजग रहते हैं।

डॉक्टर नरेंद्र इंडियन मेडिकल एसोसिएशन से भी जुड़े हुए हैं। 1966 से शुरू हुआ यह जुड़ाव अबतक अनवरत चल रहा है। 1966 से 1997 तक वे आईएमए बिहार के अध्यक्ष रहे। 1990 से वे राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं। तो एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया के भी 1990 से सदस्य हैं, इसके अलावा भी अनगिनत संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। 1997 से 1999 तक वे नेशनल मेडिकोज ऑर्गनाइजेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे और उसके बाद से अब तक इस संस्था के संरक्षक हैं। उन्होंने 'मेरा जीवन संघर्ष और सेवा' नामक अपनी आत्मकथा लिखी है जो काफी प्रसिद्ध हुई, डॉक्टर नरेंद्र प्रसाद आरएसएस के स्वयंसेवक हैं मगर शाखाओं में कम जाते हैं। इसके अलावा वे भारतीय जनता पार्टी (बिहार प्रदेश) के चिकित्सा मंच के अध्यक्ष रहे हैं।







डॉ. नवनीत कुमार

## अपनों के लिए कुछ करने की तड़प ने दिलाई कामयाबी

अपने लिए कुछ करने का सपना तो सभी देखते हैं मगर समाज के लिए कुछ करने का सपना देखना और उसे पूरा करने में खुद को झोंक देना सबके बस की बात नहीं होती। ये आलेख ऐसी ही शख्सियत डॉक्टर नवनीत कुमार के बारे में है जो बिहार के लोगों की आंखों के लिए नई ज्योति साबित हो रहे हैं।





समाज के मध्य वर्गीय हिस्से से आने वाले लोग अकसर नौकरी, घर और बीबी-बच्चों की जिम्मेदारियों में ही उलझे रह जाते हैं। मगर ये भी सच है कि समाज के इसी हिस्से से ऐसे लोग भी निकलते हैं जो अपने लिए कम और समाज के लिए ज्यादा सोचते हैं। बिहार के ऐसे ही एक चिकित्सक हैं डॉक्टर नवनीत कुमार। नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में बिहार ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों में भी इनका नाम है। पटना में नेत्र चिकित्सा से संबंधित सभी अत्याधुनिक उपकरणों से लैस वेदांता नेत्र विज्ञान केंद्र, डॉक्टर नवनीत कुमार की उस उत्कृष्ट इच्छा का प्रतिफल है जिसके तहत वे बिहार के मरीजों को आंख के इलाज के लिए बिहार में ही अत्याधुनिक सुविधा प्रदान करना चाहते थे। पटना के आशियाना-दीघा रोड पर करीब 10 हजार वर्ग फीट क्षेत्रफल में स्थापित वेदांता सेंटर फॉर ऑप्थैल्मिक साइंस पूर्णतः वातानुकूलित परिसर है जिसमें तीन ऑपरेशन थियेटर, पोस्टिओटी केयर, ओपीडी, डॉक्टर्स रूम आदि सभी मूलभूत सुविधाएं और इसके अलावा सभी जरूरी उपकरण मौजूद हैं।

हालांकि मध्यम वर्ग से आने वाले एक बच्चे के लिए इस उपलब्धि को हासिल करना कतई आसान नहीं था। बिहार के सीतामढ़ी से आने वाले डॉक्टर नवनीत कुमार की शुरुआती शिक्षा जिले के सरकारी स्कूल में हुई। इनके पिता श्री विरेन्द्र कुमार इंजीनियर और मां सावित्री चौधरी सामान्य गृहिणी थीं। चार भाई-बहनों में से एक नवनीत कुमार ने स्कूली पढ़ाई के दौरान ही डॉक्टर बनने की ठान ली थी। उनके इसी निश्चय का असर था कि हाईस्कूल पास होने के बाद पहले ही प्रयास में इनका मेडिकल एंट्रेंस क्लियर हो गया और उन्हें कर्नाटक के मैसूर मेडिकल कॉलेज में दाखिला मिल गया। यहां से एमबीबीएस करने के बाद उन्होंने नेत्र चिकित्सा में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के राजेंद्र प्रसाद नेत्र चिकित्सा केंद्र से नेत्र शल्य चिकित्सा में एम. डी. किया। नेत्र चिकित्सा में और विशेषज्ञता हासिल करने के लिए उन्होंने 2006 में ब्रिटेन के मैनचेस्टर में नेत्र शल्य चिकित्सा में ही एमआरसीएस किया और इसके बाद कुछ सालों तक इंग्लैंड के अस्पतालों में कार्य किया।

मगर उनके मन में तो अपना देश बसा था इसलिए विदेशों में नौकरी के अवसरों को ठुकराकर डॉक्टर नवनीत कुमार भारत लौट आए। भारत लौटने के बाद उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों के नेत्र अस्पतालों में अपनी सेवा दी। इसमें दिल्ली का एम्स भी शामिल था जहां उन्होंने एक-एक दिन में 200 तक मरीजों का इलाज किया। हालांकि इन सभी अस्पतालों में नौकरी के दौरान एक चीज उन्हें परेशान करती थी। इन अस्पतालों में आने वाले मरीजों में बड़ी संख्या उनके गृहराज्य बिहार के लोगों की होती थी। डॉक्टर नवनीत कुमार को समझ आ गया था कि बिहार में नेत्र चिकित्सा की बुरी हालत के कारण वहां के लोगों को राज्य से बाहर इलाज



के लिए जाना पड़ता है। बस यहीं से उनके जीवन की दिशा बदल गई और उन्होंने अपनी जन्मस्थली बिहार को अपनी कर्मस्थली बनाने का इरादा कर लिया।

बिहार के हजारों चिकित्सक आज राज्य से दूर दूसरी जगहों पर काम कर रहे हैं। डॉक्टर नवनीत कुमार ऐसे सभी चिकित्सकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। इनमें से कुछ डॉक्टर भी यदि डॉक्टर नवनीत की तरह अपने राज्य के भाई बंधुओं का भला करने की नीयत से वापस लौटे तो निश्चित रूप से बिहार में स्वास्थ्य क्षेत्र में क्रांति हो सकती है।

डॉक्टर नवनीत कुमार बिहार तो आ गए मगर मुश्किल ये थी कि सभी अत्याधुनिक सुविधाओं और उपकरणों से लैस नेत्र अस्पताल शुरू करने के लिए उनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे। उनके पास कुछ था तो नेत्र चिकित्सा का व्यापारिक अनुभव था। अपने इसी अनुभव के बूते उन्होंने बिहार में ऐसा नेत्र अस्पताल बनाने का प्रण कर लिया जिससे बिहार के लोगों को अपना समय और पैसा खर्च कर बिहार के बाहर इलाज के लिए न जाना पड़े। उनका अनुभव और उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ-साथ उनकी चिकित्सक पत्नी डॉक्टर नीतू ने उनका साथ दिया और अंततः सभी बाधाओं को पार करके 2016 में उन्होंने पटना में वेदांता सेंटर फॉर ऑप्थैल्मिक साइंसेज की स्थापना कर डाली।

इस केंद्र में मोतियाबिंद, क्यूर लेसिक (चश्मे से छुटकारा), फेको तकनीक से मोतियाबिंद का इलाज, रेटिना का इलाज, न्यूरो ऑप्थैल्मोलॉजी, पेडियाट्रिक ऑप्थैल्मोलॉजी आदि का इलाज किया जाता है।

जैसा की पहले लिखा गया है इस केंद्र की स्थापना के पीछे डॉक्टर नवनीत कुमार की मंशा बिहार के मरीजों को इलाज के लिए बिहार से बाहर जाने से रोकना तो था, मगर उससे भी बढ़कर उनकी मंशा ये थी कि बिहार के लोगों को सामान्य खर्च में अत्याधुनिक सुविधाएं मिल जाएं। ये अस्पताल उनके इस सपने को सही तरीके से पूरा कर रहा है।

इस केंद्र की खासियत ये है कि ये पूरी तरह मरीजोन्मुखी सेंटर है। डॉक्टर नवनीत कुमार खुद मृदु भाषी डॉक्टर हैं और मरीजों से उनका व्यवहार दोस्ताना रहता है। उन्होंने अपने सारे स्टाफ को भी ये स्पष्ट हिदायत दे रखी है कि मरीजों के साथ विनम्रता पूर्वक व्यवहार किया जाए। सेंटर में हाईजीन यानी साफ-सफाई का पूरा खयाल रखा जाता है। जरा सी भी गंदगी बर्दास्त नहीं की जाती है। अस्पताल के अंदर कैफेटेरिया, दवा की दुकान और चश्मे का कार्डेंटर भी है ताकि मरीजों को एक ही जगह सारी सुविधाएं मिल सकें और उन्हें कहीं भटकना न पड़े। किसी फाइव स्टार होटल की तरह सुसज्जित इस सेंटर में सुविधाएं भी उसी श्रेणी की हैं

मगर खास बात ये है कि उसके हिसाब से मरीजों पर आर्थिक बोझ ज्यादा नहीं डाला जाता।

वेदांता सेंटर फॉर ऑप्थैल्मिक साइंसेज की प्रसिद्धि बिहार की सीमाओं को पार कर पूरे देश में फैल चुकी है। यही वजह है कि कभी बिहार के मरीज इलाज के लिए बंगलूरु जाते थे मगर अब बंगलूरु के मरीज इलाज के लिए बिहार आते हैं। इसका पूरा श्रेय डॉक्टर नवनीत कुमार की सकारात्मक सोच और समाज का भला करने की उनकी इच्छा को जाता है।

डॉक्टर नवनीत कुमार के इस सेंटर में गरीब मरीजों का भी खास ध्यान रखा जाता है और उन्हें मुफ्त में अथवा रियायती दरों पर इलाज मुहैया कराया जाता है। खुद एक सामान्य परिवार से आने के कारण डॉक्टर नवनीत कुमार इस वर्ग के लोगों के दुख दर्द को खुद महसूस करते हैं। देश-विदेश में रहकर भी अपने राज्य को न भूलने वाले डॉक्टर नवनीत कुमार दूसरों के लिए भी एक प्रेरणास्रोत हैं। अकसर लोग नाम कमाने के बाद अपनी जड़ों से कट जाते हैं मगर डॉक्टर नवनीत वर्षों तक अपनी जमीन से दूर रहकर उसे भूले नहीं और आखिरकार लंबे प्रयास के बाद वेदांता सेंटर फॉर ऑप्थैल्मिक साइंसेज की स्थापना करने में कामयाबी हासिल की जो आज नेत्र चिकित्सा में अपना एक मुकाम बना चुका है।





प्रियम्बद सिंह

## मार्केटिंग का दिग्गज

बिहार के बेगूसराय जिले के मूल निवासी और अपने ज़माने के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार और टी.एन. बी कॉलेज भागलपुर में प्रोफेसर रहे रामसागर प्रसाद सिंह के पुत्र प्रियम्बद सिंह का नाम आज बिहार की उन चंद हस्तियों में शुमार है जिन्होंने अपनी सूझबूझ, नेतृत्व क्षमता और कठिन परिश्रम की बदौलत न केवल अपनी एक अलग पहचान बनाई बल्कि डायरेक्ट सेलिंग इंडस्ट्री के सिरमौर कहे जाने वाले एमवे के व्यापार में डबल डायमंड का खिताब अपने नाम कर देश में सर्वोच्च दूसरा स्थान हासिल किया। उनकी उपलब्धियों को ध्यान में रखकर जुलाई 2014, 2017-18 और 2018-19 में एमवे द्वारा प्रकाशित पत्रिका एमाग्राम के कवर पेज पर न केवल इस जोड़े की तस्वीरों के साथ इनकी सफलता की कहानी दी गई बल्कि इंडिया टुडे के जून 2019 के ताज़ा अंक में प्रियम्बद सिंह के इंटरव्यू को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है



प्रियम्बद सिंह का जन्म बिहार के बेगूसराय जिले के पहसारा गाँव में हुआ किन्तु उनकी प्रारंभिक शिक्षा कहलगाँव एवं भागलपुर में हुई। प्रियम्बद ने मेकेनिकल इन्जीनियरिंग की पढ़ाई एम.आई.टी मुजफ्फरपुर से पूरी कर इन्जीनियरिंग की नौकरी नहीं की एवं अपने सपनों को नई उड़ान देने और अपने राज्य बिहार में कुछ कर गुजरने की चाहत के बीच बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास की और बिहार वित्त सेवा (सेल्स टैक्स) में नौकरशाह बने। सरकारी नौकरी में रहते हुए प्रियम्बद ने टैक्स सुधार, वैट सेल, विश्व बैंक की टीम के साथ प्रशिक्षण का काम एवं आस सचिव के रूप में परिहहन एवं कला संस्कृति एवं युवा विभाग में अपना योगदान दिया।

साथ ही राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा निजी संस्थानों में अलग-अलग विषयों पर छात्रों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षित एवं प्रेरित करने में भी इनकी भूमिका अग्रणी रही लेकिन प्रियम्बद सिंह का सफर यहीं नहीं थमा। उनके परिवार के सदस्य बताते हैं कि प्रियम्बद के दिलो-दिमाग में अपनी शर्तों पर आज़ाद और निर्बाध जिन्दगी जीने के साथ कुछ बड़ा करने की ख्वाहिश हमेशा से रही।

गुजरे ज़माने को याद कर प्रियम्बद सिंह कहते हैं कि वह भी एक वक्त्र था जब मैं शाम के समय ईस्ट एंड वेस्ट नामक आई.ए.एस कोचिंग इंस्टिट्यूट में वहाँ के छात्रों को पढ़ाने का काम करता था, उसी दौरान साल 2001 में मेरी पत्नी सुनीता ने विश्व के 100 से ज़्यादा देशों में संयुक्त डायरेक्ट सेलिंग इंडस्ट्री के सिरमौर एमवे के अवसर को देखा और नौकरी के बाद खाली बचे समय में शाम के वक्त्र सुनीता और प्रियम्बद ने इस काम को शुरू किया।

कौशल विकास, स्वरोजगार, नेतृत्व विकास, देश-विदेश की लोकप्रियता तथा राज्य के विकास में योगदान जैसी संभावनाओं को समझ प्रियम्बद अभिभूत हो गए और उन्होंने लोगों की जिन्दगी बदलने की दिशा में प्रभावी कदम उठाने का निर्णय लिया। दिन, महीने और साल बदलते गए और बदलते वक्त्र के साथ प्रियम्बद ने वह सब कुछ हासिल किया जिसे पैसे से खरीदा जा सकता था और वह सब भी जिसे पैसे से कभी खरीदा नहीं जा सकता।

एक प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर के तौर पर प्रियम्बद की छवि अब न केवल लोगों को प्रभावित कर रही थी बल्कि लाखों की संख्या में वैसे लोग भी सामने आने लगे जो उनकी छवि में खुद को तलाश रहे थे।

तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता के बीच साल 2009 में यह खबर मिली कि प्रियम्बद सिंह ने बिहार-झारखंड में पहले डायमंड का खिताब अपने नाम कर लिया है। इस खबर ने





एमवे बिजनेस से जुड़े लाखों लोगों का न केवल उत्साह बढ़ाया बल्कि खुद प्रियम्बद सिंह की गिनती डायरेक्ट सेलिंग इंडस्ट्रीज से जुड़े देश के सर्वश्रेष्ठ लोगों में की जाने लगी। अपने कठिन परिश्रम के बूते डायमंड के शिखर पर पहुँचने वाले प्रियम्बद सिंह ने कभी पलट कर पीछे नहीं देखा और विगत दस वर्षों में हिन्दुस्तान के सफलतम शीर्ष तीन लोगों में उनका नाम शुमार है और आज प्रियम्बद सिंह एमवे के डायरेक्ट सेलिंग के व्यापार में डबल डायमंड है। एमवे के व्यापार से जुड़े जानकारों का मानना है कि हजारों लोगों की जीवन शैली में बदलाव एवं बिहार के कौशल विकास और जी.डी.पी में प्रियम्बद सिंह के आंशिक योगदान से इनकार नहीं किया जा सकता।

प्रियम्बद की उद्यमिता एकांगी नहीं रही। 2011 में अपनी वरीय सरकारी नौकरी का त्याग कर उन्होंने अपने कुछ महत्वाकांक्षी मित्रों के साथ पटना जिले के बिहटा में प्राइवेट फ्रेंट टर्मिनल यानी रेलवे साइडिंग के निर्माण में महती भूमिका निभाई जो आज बिहार के व्यवसायियों के लिए देश भर से माल ढुलाई का लोकप्रिय प्लेटफार्म है। प्रियम्बद ने बिहार और झारखंड में रिटेल-आउटलेट का बढ़िया प्लेटफार्म भी तैयार किया है जो पटना, मुजफ्फरपुर, देवघर और धनबाद में विभिन्न ब्रांडों यथा एडिडास, खादिम, वी.आई.पी आदि के रूप में कार्यरत है।



प्रियम्बद की पत्नी सुनीता कहती हैं कि उनके पति का शरीर यदि व्यवसाय और लोगों की ज़िन्दगियों को बदलने में लगा रहा तो उनकी आत्मा लिखने-पढ़ने और लोगों को प्रेरित करने से जुड़ी रही है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी कविताओं और लेखनी के माध्यम से पाठकों के सामने रहे प्रियम्बद को विश्व भर के लाखों लोग उनकी सी.डी.यू.-ट्यूब एवं सेमीनार से उनके जीवन को प्रकाशित करने में लगे हैं। प्रियम्बद ने दुनिया के 40 से ज्यादा देशों का भ्रमण किया है और एक अदभुत वक्तवा के तौर पर अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

आज प्रियम्बद न केवल युवाओं के आदर्श के रूप में लोगों के सामने हैं बल्कि उनका करिश्माई व्यक्तित्व भी लोगों को अपनी ओर खींचता है। बातचीत के क्रम में प्रियम्बद कहते हैं कि मेरा सपना है कि बिहार का प्रत्येक जिला स्वरोजगार और उद्यमिता से भरपूर हो एवं डायरेक्ट सेलिंग और कौशल विकास के माध्यम से लाखों लोग एक शानदार ज़िन्दगी जी सकें और बिहार का नाम देश के पहले पायदान पर हो।





डॉ. प्रवीण आनंद

## होम्योपैथी के बारे में बदली लोगों की सोच

डॉक्टर प्रवीण आनंद मुजफ्फरपुर शहर के जाने-माने होम्योपैथी चिकित्सक हैं जो लोगों के बीच होम्योपैथी की सोच और समझ को बदलने में जुटे हैं। आमतौर पर एलोपैथी इलाज से हार चुके लोग ही होम्योपैथी की शरण में आते हैं और डॉक्टर प्रवीण आनंद इसी सोच को बदलना चाहते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि होम्योपैथी इलाज की एक संपूर्ण पद्धति है जिससे किसी भी बीमारी का सटीक उपचार हो सकता है। बचपन से ही मरीजों का उपचार करने की इच्छा रखने वाले डॉक्टर आनंद की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मुजफ्फरपुर शहर के कई आला अधिकारी और उनके परिजन भी इलाज के लिए उन्हीं के पास आते हैं। कई कैंसर रोगियों तक को स्वास्थ्य का वरदान दे चुके डॉक्टर प्रवीण आनंद बिहार में होम्योपैथी मेडिकल कॉलेजों की दुर्दशा से व्यथित हैं और इसलिए अपना मेडिकल कॉलेज शुरू करना चाहते हैं





बिहार के मुजफ्फरपुर में 2 जुलाई, 1975 को श्री नागेश्वर मिश्र और कुमुद मिश्र के घर जन्मे प्रवीण आनंद को बचपन से ही डॉक्टरों का जीवन लुभाता था। वे एमबीबीएस करना चाहते थे। उनके पिता नागेश्वर मिश्र बिहार सरकार में एक्जीक्युटिव इंजीनियर थे मगर उनमें ईमानदारी कूट-कूट कर भरी थी। उनका परिवार भी बड़ा था। ऐसे में उनके वेतन से बस किसी तरह परिवार का भरण-पोषण हो जाता था। नागेश्वर मिश्र प्रवीण आनंद की एमबीबीएस की पढ़ाई का खर्च उठाने में असमर्थ थे। इसके बावजूद प्रवीण ने हार नहीं मानी। जिला स्कूल से मैट्रिक और आरडीएस कॉलेज से इंटर करने के बाद उन्होंने मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने

यह तय किया कि अगर वे एमबीबीएस नहीं कर सकते तो होम्योपैथी के जरिये चिकित्सा करेंगे मगर डॉक्टर बनने की अपनी इच्छा जरूर पूरी करेंगे। मगर यह मुश्किल था क्योंकि इस पढ़ाई के लिए भी पिता की आर्थिक हालत मददगार नहीं थी। ऐसे में प्रवीण ने एजुकेशन लोन के लिए बैंक से संपर्क किया। यह वो दौर था जब बैंक भी आसानी से लोन नहीं देते थे और बैंक ने प्रवीण आनंद से लोन के लिए कोई संपत्ति गिरवी रखने की मांग की। हालांकि बाद में प्रवीण किसी तरह बैंक लोन लेने में कामयाब हुए और होम्योपैथी से एमडी की पढ़ाई पूरी की। वे आज भी बैंक लोन की ईएमआई भर रहे हैं। होम्योपैथी की डिग्री हासिल करने के बाद उन्होंने मुजफ्फरपुर के मिठनपुरा इलाके में

अपना क्लिनिक शुरू किया। आरंभ में मरीज उतने नहीं थे मगर डॉक्टर आनंद ने इस क्षेत्र में संघर्ष की शुरुआत कर दी थी। उन्होंने खुद को एक काबिल डॉक्टर के रूप में स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत की। वे बिलकुल सुबह से लेकर देर रात तक क्लिनिक में बैठने लगे। उनके इलाज से लोगों को फायदा होने लगा और देखते ही देखते एक होम्योपैथी चिकित्सक के रूप में मुजफ्फरपुर में उनके नाम की चर्चा होने लगी। सबसे खास बात यह है कि अपने मरीजों के लिए डॉक्टर प्रवीण किसी भी समय उपलब्ध रहते हैं। देर गए रात में आप उन्हें फोन कर लें, वे मरीजों की सेवा के लिए उपलब्ध मिलते हैं। उनके इस गुण ने उनकी सफलता में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। एक डॉक्टर के रूप में उनकी कामयाबी को इस बात से आंका जा सकता है कि जिले के कई आला अधिकारी और उनके परिवार डॉक्टर प्रवीण आनंद से ही अपना इलाज करवाते हैं।

डॉक्टर आनंद का नाम इतनी तेजी से फैलने का एक कारण यह भी है कि वे गंभीर से गंभीर मरीज का सफल इलाज करते हैं। खुद डॉक्टर आनंद बताते हैं कि उनके पास एक ऐसे निःसंतान दंपति आए जिन्हें शादी के 8 साल बाद भी संतान प्राप्त नहीं हुई थी। वे ऐलोपैथी से भी हर तरह का इलाज करवा चुके थे मगर सफलता नहीं मिली थी। डॉक्टर

प्रवीण आनंद ने इस दंपति का इलाज किया और आज उनके सुने घर में बच्चे की किलकारियां गूंज रही हैं। डॉक्टर आनंद ऐसे कई केस सफलतापूर्वक हल कर चुके हैं। उन्होंने कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी का इलाज भी किया है और कैंसर के कई मरीज आज बीमारी से पूरी तरह मुक्त जीवन जी रहे हैं।

क्लिनिक शुरू करने के बाद उनकी घरेलू जिंदगी में थोड़ी अव्यवस्था आ गई थी मगर शादी के बाद यह कमी दूर हो गई। उनकी पत्नी साक्षी आनंद सच्ची सहधर्मिणी हैं जो सुख और दुख में उनके साथ खड़ी रहती हैं। किसी भी विषय पर उनके सुझाव डॉक्टर आनंद के लिए कारगर साबित होते हैं। शादी के कुछ साल के अंदर ही बेटे अच्युत आनंद और बिटिया आराध्या आनंद के जन्म ने इस परिवार को खुशियों से भर दिया और डॉक्टर आनंद का पारिवारिक जीवन सच में आनंदमय हो गया। वे अपनी सफलता का श्रेय अपने पिता से मिले संस्कारों को देते हैं। वे कहते हैं, 'मेरे पिता हमेशा ईमानदारी के पक्षधर थे। उनका मानना था कि गलत तरीके से कमाए गए पैसे से घर के संस्कार बिगड़ जाते हैं। वे उदाहरण भी देते थे कि उनके कई साथी इंजीनियरों ने गलत तरीकों से धन अर्जित किया मगर उनके बच्चे बिगड़ गए। कई तो शराबी हो गए।' ऐसे में डॉक्टर आनंद ने पिता की ईमानदारी की सीख को गांठ बांध कर रखा है और अपने बच्चों को भी यही संस्कार दे रहे हैं।

डॉक्टर प्रवीण आनंद का एक सपना है। वे अपना होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज आरंभ करना चाहते हैं। दरअसल बिहार ही नहीं, पूरे देश में होम्योपैथी शिक्षा की जो दुर्दशा है, उसे लेकर वे व्यथित हैं। बिहार में जो गिने-चुने मेडिकल कॉलेज हैं भी, उनमें संसाधनों का घोर अभाव है। सरकार भी इसे लेकर उदासीन है। ऐसे में वे एक आधुनिक होम्योपैथी कॉलेज शुरू करना चाहते हैं जहां बच्चों को हर संसाधन सुलभ हों। हालांकि वे जानते हैं कि उनका यह सपना अभी पूरा नहीं हो सकता इसलिए वे अपनी भविष्य की योजनाओं में इसे शामिल करना चाहते हैं। हालांकि फिलहाल बच्चों को शिक्षा देने के लिए वे मोतिहारी के आर.के. केडिया होम्योपैथी कॉलेज में बतौर प्रोफेसर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

डॉक्टर आनंद होम्योपैथी चिकित्सकों की निम्न गुणवत्ता से दुखी हैं। इसका दोष वे झोला छाप डॉक्टरों को देते हैं। वे कहते हैं कि देश में कई लोग होम्योपैथी की एक या दो किताबें पढ़कर अपनी दुकान खोले बैठे हैं और मरीजों की जान से खिलवाड़ कर रहे हैं। डॉक्टर आनंद कहते हैं कि होम्योपैथी का ज्ञान बहुत ही विस्तृत है, जिसे सिर्फ एक या दो किताबें पढ़कर नहीं सीखा जा सकता। डॉक्टर आनंद होम्योपैथी चिकित्सा की दुनिया का वो चमकता सितारा हैं जिसने अभी अपनी चमक दिखानी शुरू ही की है। उम्मीद है कि भविष्य में उनकी चमक पूरे बिहार, बल्कि पूरे देश में दिखाई देगी।







एम.के. झा

## लगी-लगाई नौकरी छोड़ शिक्षा की अलख जगाने वाला गणितज्ञ

एम.के. झा का नाम बिहार के शिक्षा जगत में आदर से लिया जाता है क्योंकि उन्होंने रेलवे की सुरक्षित और स्थायी नौकरी छोड़कर नई पीढ़ी को गणित सिखाने में अपनी सारी ऊर्जा लगा दी। पटना के झा क्लासेस केंद्र में उनकी लगन और मेहनत के कारण आज 5,000 से अधिक बच्चे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे हैं। झा को दिसम्बर 2018 में पटना में आउटलुक द्वारा आयोजित “आइकॉन्स ऑफ़ बिहार” के सम्मान से नवाज़ा जा चुका है। बिहार के मधुबनी जिले के शाहपुर में मई, 1970 में जन्मे एम.के. झा का नाम गणित की दुनिया में किसी परिचय का मोहताज नहीं है

पटना के नया टोला में झा क्लासेस के नाम से गणित का ट्यूटोरियल केंद्र चलाने वाले मनोज कुमार झा बचपन से ही प्रतिभाशाली छात्र थे। उनके पिता ताराकांत झा चाहते थे कि

बेटा ऊंची तालीम लेकर बड़ा सरकारी अधिकारी बने। उनके बिहार के मैथिल ब्राह्मणों के परिवार से आने के कारण यह एक सहज और स्वाभाविक आकांक्षा थी, क्योंकि बिहार के



मिथिलांचल में आमतौर पर प्रशासनिक सेवाओं या बैंक की नौकरियों का बड़ा क्रेज है। ताराकांत झा खुद एक व्यवसायी थे मगर अपने समाज के अन्य लोगों की तरह उनकी यही इच्छा थी कि उनका बेटा सरकारी अधिकारी बने। मगर मनोज के दिमाग में तो कुछ और ही चल रहा था। दरअसल मनोज आरंभ से ही शिक्षक बनना चाहते थे और छात्रों को गणित की शिक्षा देना चाहते थे। उनके एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् बनने की यात्रा की शुरुआत स्कूली जीवन से ही हो गई थी। उन्होंने बोकारो (अब झारखंड) के पास चास स्थित आदर्श मध्य विद्यालय से आठवीं कक्षा तक की शिक्षा ग्रहण की और चास के ही रामरुध उच्च विद्यालय से 1984 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। इंटरमीडिएट में साइंस की पढ़ाई करने के लिए उन्होंने रांची यूनिवर्सिटी के मारवाड़ी कॉलेज का रुख किया। इसके बाद उन्होंने रांची कॉलेज से 1989 में स्नातक की डिग्री हासिल की। रांची विश्वविद्यालय के उनके कई साथी उनकी प्रतिभा के कायल रहे हैं और उनका कहना है कि गणित में झा की पकड़ उन्हें दूसरों से अलग करती थी। तब भी उनकी इच्छा यही थी कि अपना गणित का यह ज्ञान वे दूसरों में बांटें। अपनी पढ़ाई के दिनों में वे गरीब बच्चों को मुफ्त में पढ़ाया करते थे। अस्सी के दशक का यह जुनून अब भी बरकरार है और आज भी फीस देने में अक्षम छात्र उनके कोचिंग संस्थान में मुफ्त में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

लेकिन कोचिंग संस्थान शुरू करने की यात्रा आसान नहीं थी। पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के दबाव में मनोज झा ने नब्बे के दशक में पटना के महेंद्रू में रहकर बैंक के प्रोवेशनरी

अधिकारी, स्टाफ सलेक्शन कमीशन तथा रेलवे की नौकरियों की तैयारी शुरू कर दी। मनोज प्रतिभाशाली तो थे ही इसलिए रेलवे में उन्हें एएसएम की नौकरी जल्द ही मिल गई। मगर वे नौकरी के लिए बने ही नहीं थे इसलिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने के बाद एक बार फिर उनपर परिवार का दबाव पड़ा और इस दबाव में आकर उन्होंने पटना के ललितनारायण मिश्र इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट से एमबीए पाठ्यक्रम के लिए आवेदन कर प्रवेश परीक्षा पास की। लेकिन इसके बाद उन्होंने अपने मन को मजबूत कर लिया और किसी भी दबाव में आने से इनकार कर दिया। उन्होंने एमबीए कोर्स में दाखिला नहीं लिया और शिक्षण को अपना पेशा बनाने की घोषणा कर दी। 1995 में, उन्होंने परिवार के ही कुछ छात्रों को अंग्रेजी और गणित पढ़ाना शुरू कर दिया। उनके द्वारा शिक्षा पाए ये छात्र कुछ समय बाद बैंक, एलआईसी और रेलवे की अलग-अलग परीक्षाओं में चुन लिए गए। इस वक्त से मनोज को और प्रोत्साहन मिला और 1996 में पटना के महेंद्रू इलाके में उन्होंने अपना कोचिंग संस्थान शुरू कर दिया।

दो साल बाद यानी 1998 में उन्हें पटना के ही करतार कोचिंग में पढ़ाने का प्रस्ताव मिला, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। सन् 2000 में उन्होंने अपने कोचिंग संस्थान को महेंद्रू से पटना के गोपाल मार्केट में स्थानांतरित कर लिया। इसके बाद 2011 तक यह संस्थान यहीं से संचालित होता रहा। एम.के. झा ने अपने संस्थान को पहचान दिलाने के लिए दिन-रात मेहनत की। उन्होंने आधी रात को भी छात्रों को पढ़ाया।



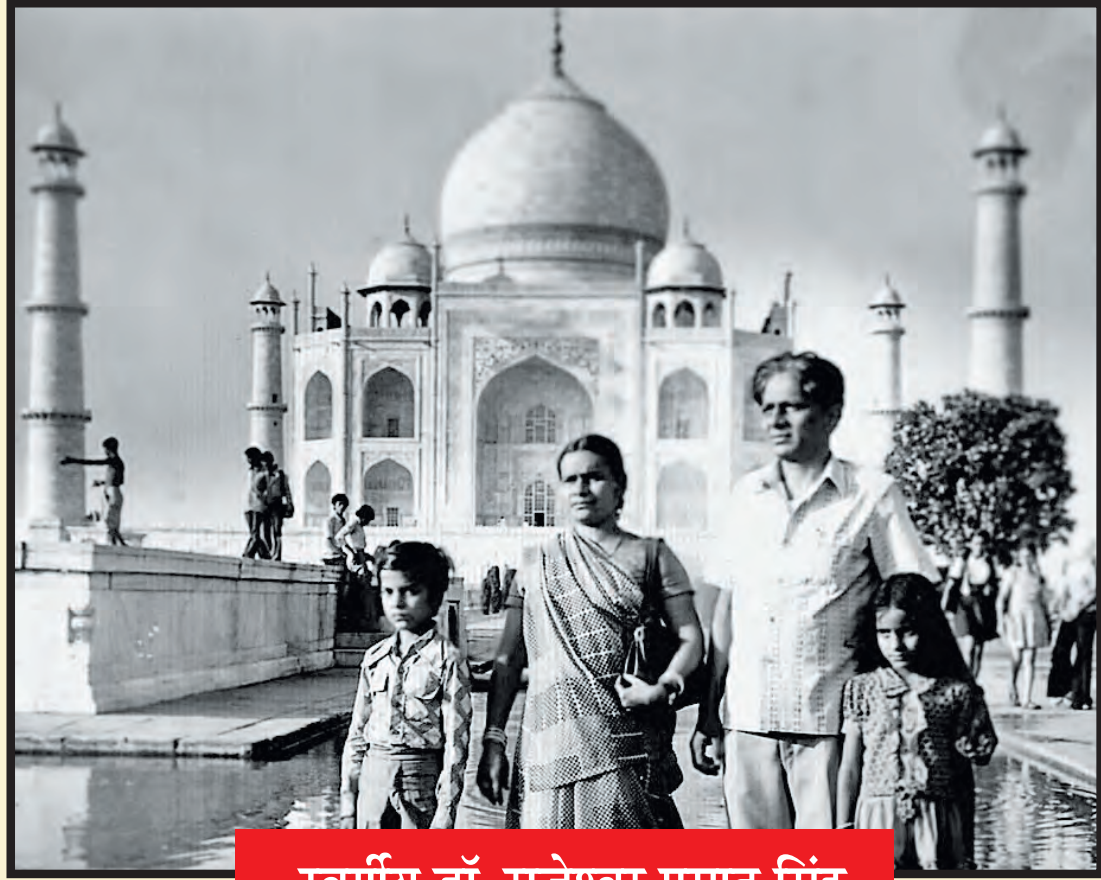
इस समय तक उन्हें यह महसूस होने लगा कि करतार क्लासेस और अपने कोचिंग संस्थान के लिए वे एक साथ समय नहीं निकाल पाएंगे। इसलिए 2012 में कोचिंग संस्थान को छोड़ दिया और अपने संस्थान पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने अपने संस्थान को झा क्लासेस का नाम दिया। इस समय तक पटना में गणित के शिक्षक के रूप में मनोज कुमार झा का नाम पूरी तरह स्थापित हो चुका था। उनकी प्रसिद्धि बिहार के दूसरे जिलों यहां तक कि पड़ोसी राज्य झारखंड तक फैल चुकी थी। नब्बे के दशक में अपने परिवार के केवल चार छात्रों के साथ शिक्षण शुरू करने वाले झा ने जब औपचारिक रूप से कोचिंग का पहला बैच शुरू किया, तो उनके पास 50 छात्र थे। आज झा क्लासेस में छात्रों की संख्या 5,000 से अधिक हो चुकी है। छात्रों की यह बढ़ती संख्या न केवल इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि इस संस्थान के छात्र एम.के. झा के शिक्षण से प्रभावित हैं, बल्कि यह भी कि यह संस्थान वास्तव में अपने छात्रों की देखभाल करता है और उन्हें अपने कैरियर के निर्माण में उचित मार्गदर्शन देता है।

झा की पत्नी बबीता झा इस सफलता का श्रेय अपने पति के गणित ज्ञान के साथ-साथ उनके जीवन के दो गुणों को देती हैं। वे कहती हैं कि मनोज अपने जीवन में अनुशासन और समय के उचित उपयोग का कठोरता से पालन करते हैं। इसी अनुशासन की बदौलत वे राज्य के सफलतम शिक्षकों में हैं। बबीता मनोज झा का परिवार संभालने के साथ-साथ झा क्लासेस का प्रबंधन भी संभालती हैं। उनके अनुसार, “हमारे बेहतर प्रबंधन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण ने हमारे संस्थान और खुद एम.के. झा को कई पुरस्कार दिलाए हैं। इसका श्रेय हमारे छात्रों को भी जाता है, जिन्होंने अपनी पढ़ाई के लिए खुद को समर्पित किया और अपने कैरियर को एक आकार दिया। इसने हमारे संस्थान को प्रसिद्धि दिलाई।” एम.के.झा अब छात्रों की एक और मदद करने जा रहे हैं। इस बारे में वे खुद बताते हैं, “बैंकों, एसएससी और रेलवे की तैयारी को ध्यान में रखते हुए मैंने हाल ही में ‘ऑब्जेक्टिव अर्थमेटिक’ नामक एक पुस्तक लिखी है जिसे दिल्ली के मशहूर प्रकाशन समूह विली द्वारा प्रकाशित किया जाएगा। यह किताब छात्रों की मदद के लिए जल्द ही बाजार में आ जाएगी।”

वाकई कि किसी भी व्यक्ति के लिए अच्छी-खासी नौकरी छोड़ शिक्षक के पेशे को अपनाना अत्यन्त दुष्कर होता है। यह अत्यन्त दुर्लभ गुण और अपने ध्येय एवं उद्देश्य के प्रति समर्पण का ही परिणाम है और एम.के. झा में यह विशेषता भरपूर मात्रा में है। बिहार के हजारों छात्र इसका फायदा उठा रहे हैं और उठाते रहेंगे। उनकी ‘संपूर्ण गणित’ नामक पुस्तक बाजार में आ चुकी है। यह उनकी लगन और मेहनत का ही नतीजा है कि धुलाई 2019 में जारी एसएससी (जी डी) के फाइनल रिजल्ट में झा क्लोसेज के 30 छात्र चयनित हुए हैं।







स्वर्गीय डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह

## बिहार में दंत चिकित्सा के पितामह

डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह को बिहार में दंत चिकित्सा क्षेत्र का पितामह कहा जाता है और ऐसा स्वाभाविक है। उनके जीवन से कई सारी ऐसी चीजें जुड़ी हैं जो इससे पहले नहीं हुई थीं। वे बिहार सरकार के पहले डेंटल सर्जन थे जिन्हें मेडिसिन विभाग का फैकल्टी डीन बनाया गया। इसी प्रकार बिहार में बीडीएस और एमडीएस दोनों डिग्रियां हासिल करने वाले वे पहले चिकित्सक थे। उन्हें बिहार का पहला निजी डेंटल कॉलेज स्थापित करने का श्रेय जाता है। पटना गवर्नमेंटल डेंटल कॉलेज के लगातार 14 साल तक प्राचार्य रहने वाले वे पहले डॉक्टर थे। उन्होंने ही पहली बार पटना डेंटल कॉलेज में एमडीएस कोर्स की शुरुआत की। यानी डॉक्टर सिंह आजीवन कुछ न कुछ नया करते रहे और इसमें हमेशा समाज की भलाई छिपी होती थी। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने उन्हें चिकित्सा क्षेत्र में दिए जाने वाले सर्वोच्च सम्मान 'बीसी राय अवार्ड', से सम्मानित किया था। बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंस, जिसे बिहार के लोग आमतौर पर बुद्धा डेंटल कॉलेज के नाम से जानते हैं, आज किसी पहचान का मोहताज नहीं है और बिहार ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों के छात्र भी यहां से शिक्षा लेकर काबिल दंत चिकित्सक बनते हैं। मगर इस कॉलेज के संस्थापक का जीवन इतना सरल नहीं था। आउटलुक डॉ. आर.पी.सिंह को भावभीनी श्रंद्धाजलि अर्पित करता है



12 जनवरी, 1931 को यानी देश की आजादी से करीब साढ़े सोलह साल पहले पटना के निकट सूर्यपुरा करजान में पैदा हुए डॉ. राजेश्वर के पिता रामगुलेला सिंह ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि उनके बेटे की शिक्षा में कोई कमी न रहे। उनकी आरंभिक शिक्षा अथमलगोला मिडिल स्कूल और शबानी हाई स्कूल से हुई। मैट्रिक के बाद आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें पटना के प्रसिद्ध साइंस कॉलेज में दाखिल कराया गया। उनके बड़े भाई रामवृक्ष सिंह रेलवे में अधिकारी थे और अपने सभी भाई-बहनों की शिक्षा को लेकर बेहद सचेत रहते थे। राजेश्वर प्रसाद सिंह ने इंटर की पढ़ाई के दौरान ही डॉक्टर बनने का फैसला कर लिया था इसलिए साइंस कॉलेज से 1948 में आई.एस.सी. करने के बाद वे डेंटल साइंस की पढ़ाई करने तब देश के पहले और इकलौते डेंटल कॉलेज डॉक्टर आर.अहमद डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल पहुंचे। यह कॉलेज कोलकाता विश्वविद्यालय के अधीन था। यहां से साल 1957 में उन्होंने बीडीएस की डिग्री हासिल की। बीडीएस करने के तुरंत बाद उन्हें बिहार सरकार में नौकरी मिल गई और पहली नियुक्ति बतौर डेंटल सर्जन गया के जिला चिकित्सालय में मिली। इसके अगले साल वे इंडियन डेंटल एसोसिएशन के सदस्य बने और इसी साल उन्होंने पटना डेंटल कॉलेज एवं अस्पताल में बतौर फैकल्टी ज्वाइन किया। 1963 में बिहार सरकार ने उन्हें इस कॉलेज में लेक्चरर के रूप में तैनाती दी। हालांकि इस समय तक उन्होंने एमडीएस की डिग्री नहीं ली थी। यही सोचकर उन्होंने 1964 में बॉम्बे यूनिवर्सिटी के गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में एमडीएस की पढ़ाई के लिए दाखिला लिया। अपने अच्छे-खासे चलते कैरियर को बीच में छोड़कर उन्होंने अपनी क्षमता और दक्षता को और बढ़ाने का फैसला लिया और 1966 में एमडीएस की डिग्री हासिल की। जैसा कि ऊपर लिखा गया है, बिहार में बीडीएस और एमडीएस दोनों डिग्रियां हासिल करने वाले वे पहले डेंटल सर्जन थे। यह डिग्री हासिल करने के बाद पटना लौटने पर पटना डेंटल कॉलेज में उन्हें प्रोफेसर के पद पर पदोन्नति देकर फिर से नियुक्ति दे दी गई।

कैरियर की इस दौड़भाग के बीच में उनका विवाह महारानी देवी के साथ हुआ जो उनकी सही सहचरी साबित हुई और उनके उठाए हर कदम पर उन्होंने उनका पूरी तरह साथ दिया। दोनों के छह बच्चे हैं, प्रमिला, अरुण, अनिता, संगीता, विनॉय और शालिनी। डॉक्टर आर.पी. सिंह और उनकी पत्नी ने अपनी मेहनत और संघर्ष के दम पर समाज में अपने लिए इज्जत कमाई और अपने बच्चों को भी ऐसे ही संस्कार दिए। उनकी बड़ी बेटी प्रमिला सिंह कहती हैं कि पापा भले ही डॉक्टर थे मगर घर की माली हालत बहुत अच्छी नहीं थी। इसके बावजूद पिता की कोशिश यही रहती थी कि बच्चों को कभी कोई परेशानी न हो। उन्होंने अपनी



और से बच्चों की हर इच्छा पूरी की और उन्हें अच्छी शिक्षा और संस्कार दिए।

1976 में डॉक्टर आर.पी. सिंह पटना डेंटल कॉलेज में प्राचार्य के पद पर आसीन हुए। इस पद पर रहते हुए उन्होंने कॉलेज में 1979 में पहली बार डेंटल मेकेनिक और एमडीएस कोर्स की शुरुआत कराई। इससे उनकी ख्याति पूरे बिहार में फैल गई। डॉक्टर सिंह को डेंटल सर्जन होने के बावजूद पटना यूनिवर्सिटी का मेडिसिन का डीन नियुक्त किया गया। ऐसा पहली बार हुआ था कि किसी डेंटल सर्जन को यह पद दिया गया हो। इस पद पर डॉक्टर सिंह लंबे समय तक बने रहे। वे बिहार डेंटल काउंसिल के अध्यक्ष भी रहे और बाद में उन्होंने डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष का पद भी संभाला। बिहार सरकार उनकी योग्यता से इतनी प्रभावित थी कि उन्हें सरकार का डेंटल सलाहकार बनाया गया। अस्सी के दशक में उन्हें फेलो ऑफ इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ डेंटिस्ट द्वारा फेलोशिप प्रदान की गई। इस दौर में बिहार सरकार ने उन्हें ड्रग कंट्रोल विभाग में ऑफिसिएंटिंग डायरेक्टर के तौर पर नियुक्ति दी। सरकार और समाज में डॉक्टर सिंह की ख्याति चरम पर पहुंच चुकी थी मगर उनका एक सपना अब तक उन्हें परेशान किए हुए था। वह सपना था एक डेंटल कॉलेज शुरू करने का। आखिरकर 1985 में 54 साल की उम्र में उन्होंने इस सपने को भी साकार कर दिखाया। पटना



डॉ. आर.पी. सिंह को डॉ. बी.सी. राय राष्ट्रीय पुरस्कार देते हुए तत्कालीन पीएम स्वर्गीय राजीव गांधी



स्वर्गीय डॉ. आर.पी. सिंह के पुत्र और डेंटल काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य डॉ. बिनोय कुमार सिंह

की कंकड़बाग कॉलोनी में सिर्फ दो कमरे से उन्होंने बुद्धा इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंस की शुरुआत की। यह बिहार का पहला निजी डेंटल कॉलेज था। यह डॉक्टर राजेश्वर प्रसाद सिंह की अदम्य इच्छाशक्ति का ही परिणाम था कि आज यह डेंटल कॉलेज एक पूर्ण विकसित और सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त है जहां देश के तकरीबन सभी राज्यों से आए छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं। बुद्धा डेंटल कॉलेज का नाम दंत चिकित्सा सेवा में आदर के साथ लिया

जाता है। इस कॉलेज की स्थापना के करीब 15 साल बाद यानी 69 साल की उम्र में उन्होंने कंकड़बाग इलाके में ही राजेश्वर अस्पताल की स्थापना की। यह वो दौर था जब निजी अस्पतालों में मल्टी स्पेशियलिटी सुविधाएं नहीं होती थीं और आईसीयू की सुविधा भी सिर्फ सरकारी अस्पतालों में ही होती थी। राजेश्वर अस्पताल में ये सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं, आज यह अस्पताल पटना के नामी अस्पतालों में गिना जाता है।

चिकित्सा के क्षेत्र में इतना योगदान करने वाले डॉक्टर राजेश्वर प्रसाद सिंह आज हमारे बीच नहीं हैं मगर उनके बनाए हुए संस्थान आज भी लोगों के जीवन को मुस्कान से भर रहे हैं। उनकी पत्नी महारानी देवी कहती हैं, “मेरे पति एक साधारण ईसान थे जिन्होंने खुद से ज्यादा मुझे और बच्चों को प्यार किया।” डॉक्टरों से बचे समय में उन्हें क्रिकेट मैच, बिस्मिल्लाह खान की शहनाई और एस्ट्रोलॉजी की पुस्तकों में सुकून मिलता था।





पद्मश्री प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा

## गंगा डॉलफिन का रक्षक एक अथक सेनानी

प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी, पटना के कुलपति हैं। मगर यह उनका अधूरा परिचय है। दरअसल प्रो. सिन्हा की असली पहचान गंगा में पाई जाने वाली डॉल्फिन मछलियों से जुड़ी है। बतौर पर्यावरण एवं वन्यप्राणी संरक्षण विशेषज्ञ उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी गंगा डाल्फिन के संरक्षण के प्रयासों को अमली जामा पहनाने में गुजारी है। पढ़ाई के बाद पटना यूनिवर्सिटी के प्राणिशास्त्र विभाग में पहले व्याख्याता और फिर प्रोफेसर के रूप में नौकरी करने के दौरान उन्हें गंगा डॉल्फिन संरक्षण के कार्य से जुड़ने का मौका मिला।

इस कार्य में उनकी दक्षता और अनुभव को देखते हुए बाद में इससे संबंधित अधिकांश कमेटियों और परियोजनाओं में उन्हें अनिवार्य रूप से शामिल किया जाने लगा। आज प्रो. सिन्हा बिहार में गंगा डॉल्फिन संरक्षण के जैसे पर्याय बन गए हैं। गंगा संरक्षण कार्य के लिए भारत सरकार से पद्मश्री सम्मान पाने वाले प्रो. सिन्हा को नीदरलैंड का सर्वोच्च सम्मान भी हासिल हो चुका है। इसके अलावा उनके जीवन पर अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं में दो डॉक्युमेंट्री भी बनाई जा चुकी हैं। हालांकि एक बेहद साधारण किसान परिवार से आने वाले प्रो. सिन्हा के लिए यह सब इतना आसान नहीं था। रवींद्र कुमार सिन्हा का जन्म बिहार के जहानाबाद जिले के मखदुमपुर प्रखंड की मखदुमपुर नगर पंचायत में स्थित केओटार गांव के एक साधारण किसान परिवार में एक जुलाई, 1954 को हुआ था। उनकी माता गौरी देवी एवं पिता राम दहिन सिंह पढ़े-लिखे नहीं थे। पिता के हिस्से में केवल चार एकड़ जमीन थी जिसकी खेती के दम पर वे अपनी एक पुत्री और चार पुत्रों का पालन कर रहे थे।

आर्थिक विपन्नता के बावजूद उन्होंने बच्चों की पढ़ाई से कोई समझौता नहीं किया। रवींद्र सभी बच्चों में सबसे छोटे थे। उनके दो भाई रेलवे में कर्मचारी जबकि तीसरे भाई शिक्षक थे। माता-पिता गरीब जरूर थे मगर उन्होंने अपने बच्चों को पारिवारिक मूल्यों एवं सामाजिक मान्यताओं की उचित शिक्षा दी थी। रवींद्र करीब 9 वर्ष की उम्र में अपनी दादी के अंतिम संस्कार में शामिल होने पटना के बांस घाट आए थे जहां उन्होंने पहली बार गंगा डॉल्फिन को देखा था जिसे लोग सूँस मछली भी कहते हैं।

रवींद्र कुमार की तीसरी कक्षा तक की शिक्षा गांव में ही हुई और उसके बाद सातवीं तक की पढ़ाई उन्होंने मध्य विद्यालय मखदुमपुर और फिर 12वीं तक की पढ़ाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मखदुमपुर से पूरी की। तब बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा आयोजित उच्चतर माध्यमिक परीक्षा 1970 में अपने स्कूल से प्रथम श्रेणी लाने वाले वे एकमात्र विद्यार्थी थे। इसके बाद बी.एससी पार्ट वन की पढ़ाई उन्होंने बी.एन.

कॉलेज पटना से जबकि बी.एससी (ऑनर्स) की शिक्षा प्राणि विज्ञान विषय के साथ 1973 में पटना साइंस कॉलेज से पूरी की। ऑनर्स में उन्हें पूरी यूनिवर्सिटी में चौथा स्थान मिला। इसके बाद उन्होंने पटना यूनिवर्सिटी से ही प्राणि विज्ञान में एम.एससी की। उनका बैच 1973-75 का था मगर देश में जयप्रकाश आंदोलन चल रहा था जिसके कारण स्नातकोत्तर का उनका रिजल्ट 1977 में आया। उनकी शैक्षणिक प्रतिभा का प्रदर्शन इसमें भी जारी रहा और उन्होंने यूनिवर्सिटी में तीसरा स्थान हासिल किया। एम.एससी का परिणाम आने के कुछ समय बाद ही 30 मार्च, 1978 को उन्हें मुरारका कॉलेज सुल्तानगंज में प्राणिशास्त्र के व्याख्याता के रूप में नौकरी मिली। हालांकि कुछ ही महीने बाद उनका स्थानांतरण आर डी एंड डी जे कॉलेज मुंगेर में कर दिया गया। इस बीच 6 जून, 1978 को उनकी शादी भी हो गई। शादी के एक साल के अंदर उनका चयन पटना विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के व्याख्याता के लिए हो गया और उन्होंने पटना साइंस कॉलेज में 17 अप्रैल, 1979 को पदभार ग्रहण कर लिया। इसके बाद रवींद्र कुमार सिन्हा ने फैसला कर लिया कि वे अपनी पीएचडी. भी पर्यावरण एवं वन्यप्राणी संरक्षण के क्षेत्र में करेंगे।

उन्होंने पीएचडी. थीसिस के लिए गंगा नदी से संबंधित विषय चुना। इसी शोध के दौरान उन्हें गंगा डॉल्फिन के बारे में कई नई जानकारियां मिलीं। जब वे गंगा में डॉल्फिन की संख्या कम होने के कारणों की तह में गए तब पता चला कि दरअसल मछुआरे डॉल्फिन की हत्या कर उसके शरीर से तेल निकालते हैं और उस तेल का इस्तेमाल दो अन्य प्रजाति की मछलियों को पकड़ने में किया जाता था। उनके लिए यह बिल्कुल नई जानकारी थी। इसके बाद पटना यूनिवर्सिटी के कुलपति के आदेश पर उन्होंने 1983 में गंगा नदी के बारे में एक इंटरडिसिप्लिनरी शोध प्रस्ताव बना कर उनके समक्ष रखा जिसे केंद्रीय योजना आयोग को भेजा गया। इसके बाद 1985 में भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के तीन विशेषज्ञों की एक टीम पटना यूनिवर्सिटी में इस शोध प्रस्ताव पर विचार-विमर्श के लिए आई। इस मीटिंग में विशेषज्ञों, कुलपति एवं अन्य सभी विभागाध्यक्षों, प्राचार्यों के समक्ष रवींद्र सिन्हा ने अपने शोध प्रस्ताव पर एक प्रेजेंटेशन दिया। केंद्रीय टीम इससे इतनी प्रभावित हुई कि इस प्रेजेंटेशन के सिर्फ दो सप्ताह बाद 19 मार्च, 1985 को तीन वर्ष के लिए उनकी शोध परियोजना को स्वीकृति मिल गई। तब इस परियोजना का कुल बजट 19 लाख रुपये के करीब था जो बाद में 28 लाख से अधिक हो गया। इस परियोजना में पटना यूनिवर्सिटी के केवल चार विभागों-प्राणिशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, रसायन शास्त्र एवं भूगर्भ शास्त्र को शामिल किया गया।

यह प्रो. सिन्हा के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इस शोध परियोजना के तहत गंगा जल की भौतिक-रासायनिक



प्रो. रवींद्र कुमार सिन्हा | 85





गुणवत्ता, गंगा नदी एवं गंगा के किनारे की जैव विविधता, गंगा का भूगर्भीय अध्ययन तथा गंगा नदी में भारी धातु पर शोध शामिल था। परियोजना के तीन साल पूरे होने पर 1988 में फाइनल टेक्निकल रिपोर्ट पेश की गई जिसमें प्रो. सिन्हा ने अन्य विषयों के अलावा गंगा डॉल्फिन पर आधारित सभी प्रकार की सूचनाओं एवं तस्वीरों को भी शामिल किया।

उन दिनों गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टोरेट के डायरेक्टर डॉ. एम. के. रणजीत सिंह थे जिन्हें वन्य प्राणियों से काफी लगाव था। उन्होंने प्रो. सिन्हा से डॉल्फिन कंजर्वेशन प्रोजेक्ट विकसित करने का अनुरोध किया। प्रो. सिन्हा ने यह गंगा प्रोजेक्ट विकसित कर जल्द ही गंगा प्रोजेक्ट डायरेक्टोरेट, भारत सरकार, नई दिल्ली को भेज दिया। 1991 में उनकी इस परियोजना को भी केंद्र सरकार की मंजूरी मिल गई और काम शुरू हो गया। प्रो. सिन्हा ने इस दौरान गंगा डॉल्फिन पर इतना शोध किया कि विदेशी विशेषज्ञ भी उनके साथ काम करने लगे थे। 1992 से 1995 तक जापान की एहिमे यूनिवर्सिटी के प्रो. आर. तत्सुकावा ने प्रो. सिन्हा के साथ मिलकर गंगा डॉल्फिन के शरीर में भारी धातु एवं अन्य प्रकार की क्लोरीनेटेड कीटनाशक दवाओं की मात्रा और इनसे होने वाली बीमारियों के बारे में शोध किया। अन्तरराष्ट्रीय संस्था, अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ के चेयरमैन डॉ. स्टेफेन लेडरबुड ने प्रोफेसर सिन्हा के कार्य से प्रभावित होकर उन्हें सिटैसिअन स्पेशलिस्ट ग्रुप का सदस्य बनाया। इस समूह द्वारा एशियाई नदियों में डॉल्फिन के संरक्षण की योजना बनाई गई और इसके लिए गठित कमेटी में भी उन्हें शामिल किया गया।

1990 के पूरे दशक में उन्होंने विदेशी विशेषज्ञों के साथ मिलकर बहुत-सा शोध कार्य किया। अगस्त 1994 में उन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ़ मेनचेस्टर, इंग्लैंड में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस ऑफ़ इकोलॉजी में दो व्याख्यान-गंगा डॉल्फिन एवं गंगा कार्य योजना के ऊपर देने के लिए आमंत्रित किया गया। गंगा डॉल्फिन के ऊपर किए गए उनके काम की गुणवत्ता और महत्व को देखते हुए अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ के सिटैसिअन स्पेशलिस्ट ग्रुप ने 1994 में प्रकाशित कंजर्वेशन ऐक्शन प्लान में पटना विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग में गंगा डॉल्फिन के लिए एक रिसर्च केंद्र बनाने के लिए प्रस्ताव शामिल किया। 1995 में डॉ. सैयद जहूर क़ासिम के नेतृत्व में योजना आयोग की एकटीम ने फैसला लिया कि पटना विश्वविद्यालय में डॉल्फिन रिसर्च केंद्र की स्थापना की जाए। इस समय तक प्रो. सिन्हा डॉल्फिन संरक्षण को लेकर पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हो चुके थे और विदेशी पत्रकार उनकी जिंदगी में दिलचस्पी लेने लगे थे। फ्रांस के एक बड़े पत्रकार क्रिस्चियन गैलिसिआन 1995 से लेकर 2007 तक लगातार हर वर्ष कुछ समय उनके साथ गुजारकर उनके कामों को शूट करते रहे और 2008 में उन्होंने दो डॉक्यूमेंट्री फिल्म-एक

इंग्लिश में 52 मिनट की 'मिस्टर डॉल्फिन सिन्हा-थिंक ग्लोबली ऐंड ऐक्ट लोकली' और दूसरी फ्रेंच भाषा में 26 मिनट की 'अलर्ट ऑन द गंगेज' रिलीज की।

वैसे इन दोनों डॉक्यूमेंट्री की रिलीज से पहले जनवरी, 1996 में उन्हें विश्व की पहली बायोलॉजिकल सोसाइटी (1788 में स्थापित)-लिनियन सोसाइटी ऑफ़ लंदन का फेलो चुना गया। यह सम्मान पाने वाले वे भारत से 16वें और बिहार से पहले वैज्ञानिक थे। फरवरी 1997 में उन्हें बांग्लादेश में आयोजित द्वितीय एशियाई रिवर डॉल्फिन समिति का चेयरमैन चुना गया। यह सम्मान हासिल करने वाले वे पहले भारतीय थे। जुलाई 1999 में गंगा डॉल्फिन और गंगा की जैवविविधता के लिए किए गए उनके कार्यों को देखते हुए उन्हें नीदरलैंड्स के हिज रॉयल हाइनेस प्रिंस बर्नहार्ड द्वारा देश के सर्वश्रेष्ठ सम्मान 'द आर्डर ऑफ़ द गोल्डन आर्क' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान हासिल करने वाले वे 12वें भारतीय हैं जबकि भारत के पहले यूनिवर्सिटी शिक्षक हैं। वर्ष 2000 में उन्हें नेशनल अकादमी ऑफ़ साइंसेज इंडिया की 70वीं वार्षिक जयंती के अवसर पर बेस्ट रिसर्च पेपर प्रेजेंटेशन के लिए अकादमी के बायोलॉजिकल साइंसेज का स्वर्ण जयंती पुरस्कार दिया गया। गंगा डॉल्फिन संरक्षण

के हित में उनके द्वारा किया गया सबसे अहम कार्य 2009 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के द्वारा गंगा डॉल्फिन को राष्ट्रीय जलीय जंतु घोषित करवाना था। इसके अलावा तत्कालीन पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश और बाद में केंद्रीय योजना आयोग के जरिये उन्होंने पटना में एक राष्ट्रीय डॉल्फिन रिसर्च केंद्र खुलवाने का अनुरोध किया और इसके लिए विस्तृत प्रस्ताव भी बनाकर केंद्र सरकार को भेजा। 2013 में इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई और अब उम्मीद है कि वर्ष 2019 में इस केंद्र का उद्घाटन हो जाएगा। सितंबर 2011 में टाइम्स नाउ टीवी चैनल ने उन्हें अमेज़िंग इंडियन का खिताब दिया तो 2013 में सीएनएन टीवी चैनल ने उन्हें पॉजिटिव इंडियन का सम्मान दिया। 2013 में ही उन्हें तीन महीने के लिए विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क जाने का मौका मिला। उन्होंने अमेरिका की कई यूनिवर्सिटीज में व्याख्यान दिए हैं। केंद्र सरकार ने उनकी सेवाओं को देखते हुए 2016 में उन्हें देश के चौथे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया। 2017 में बिहार के राज्यपाल ने उनकी नियुक्ति नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति के रूप में की। फिलहाल प्रो. सिन्हा इसी पद पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।





ई.रबिन्द्र सिंह

## कठिनाइयों से हासिल किया मुकाम

बिहार के वैशाली जिले के मूल निवासी ई.रबिन्द्र सिंह की कहानी आम लोगों के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं! अगस्त 1967 को वैशाली जिले के महनार में जन्मे रबिन्द्र की शिक्षा आसाम के गुवाहाटी से हुई! ई. बनने के पश्चात रबिन्द्र को भारतीय वायु सेना, इंडियन आयल कॉर्पोरेशन और कॉलेजों में लेक्चरर बनने के ऑफर मिले जिसे उन्होंने ठुकरा दिया क्योंकि वो कुछ अलग और बड़ा करना चाहते थे! उस दौर में रबिन्द्र ने टॉफेल और जी.आर.ई की परीक्षा भी पास की और कनाडा यूनिवर्सिटी से दाखिले का ऑफर आया लेकिन वित्तीय हालात ठीक न होने के कारण रबिन्द्र उच्च शिक्षा हासिल करने विदेश न जा सके!

एक मेधावी छात्र के रूप में पहचान रखने वाले रबिन्द्र ने दिल्ली का रुख किया और सिविल सर्विस की तैयारी आरम्भ की एवं संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रिलिम्स की परीक्षा में सफल हुए लेकिन ट्रांसपोर्ट के व्यवसाय में कदम रख देने के कारण उनकी आगे की पढ़ाई अधूरी रह गई! आगे आने वाले कुछ ही सालों में रबिन्द्र सिंह ट्रांसपोर्ट के व्यवसाय का एक बड़ा चेहरा बन कर उभरे और फिर देखते ही देखते इनके व्यवसाय ने उद्योग का रूप ले लिया! ई. रबिन्द्र सिंह हाजीपुर स्थित ओवल एग्रीटेक इंडस्ट्रीज के चेयरमैन हैं और बिहार के उद्योग जगत में इनकी अपनी एक अलग पहचान है।

बिहार के वैशाली जिले के महनार में जन्मे ई.रबिन्द्र सिंह की न केवल व्यवसाय और उद्योग जगत में अच्छी पकड़ है बल्कि राज्य की राजनीति में भी लोग उनका लोहा मानते हैं! रबिन्द्र बताते हैं कि उनकी प्रारंभिक शिक्षा असम के गुवाहाटी में हुई और श्री गुरुनानक नेशनल हाई स्कूल से 1983 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की! गुवाहाटी के आर्य विद्यापीठ से 1985 में इन्होंने इण्टर की परीक्षा पास की और असम के जोरहाट इन्जिनियरिंग कॉलेज से 1990 में फर्स्ट क्लास ऑनर्स के साथ दूसरा स्थान प्राप्त कर डिब्रूगढ़ असम यूनिवर्सिटी में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया!

पढ़ाई के दौरान रबिन्द्र सिंह को इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, भारतीय वायुसेना के अलावा असम यूनिवर्सिटी से लेक्चररशिप का ऑफर आया लेकिन रबिन्द्र इन नौकरियों के लिए तैयार



नहीं हुए! वे इसी साल टॉफेल और जी.आर.ई की परीक्षा में भी पास हुए और उन्हें कनाडा यूनिवर्सिटी से दाखिले का ऑफर मिला लेकिन माली हालत कमजोर होने के कारण रबिन्द्र को इस ऑफर का त्याग करना पड़ा और फिर सिविल सर्विसेस की परीक्षाओं की तैयारी को ध्यान में रखकर नवम्बर 1990 में वे असम से दिल्ली आ गए!







रबिन्द्र ने पैसों की तंगी के बीच 14 दिसम्बर, 1990 को दिल्ली से ट्रांसपोर्ट का व्यवसाय आरम्भ किया और खाली समय में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित की जा रही परीक्षाओं की तैयारी में भी जुट गए! 1992 में लोक सेवा आयोग द्वारा जारी प्रिलिम्स परीक्षा पास तो हुए लेकिन व्यवसाय में व्यस्त होने के कारण वे मैन्स की परीक्षा में सफल न हो सके! 1994 में उनका विवाह साधना सिंह के साथ संपन्न हुआ और विवाहोपरांत उन्होंने व्यवसाय ने जोर पकड़ा! साल 1995 में रबिन्द्र ने बिहार के अलावा नार्थ ईस्ट, बंगाल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और गुजरात में अपने ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को बढ़ाया और सभी राज्यों में कंपनी के कार्यालयों की शुरुआत हुई!

रबिन्द्र कहते हैं कि 1998 का दौर व्यापार जगत के लिए भारी मंदी लेकर आया, व्यापार में भारी नुकसान हुआ और बाज़ार में पूंजी फंस जाने के कारण यह साल काफी परेशानी भरा रहा। बाबजूद इसके हमारी कंपनी का सालाना टर्न ओवर 12-13 करोड़ रुपए का रहा!

रबिन्द्र आगे बताते हैं कि वर्ष 2002 में जब नीतीश कुमार भारत सरकार में रेल मंत्री बने तो उन्होंने ट्रांसपोर्ट के लिए रेलवे द्वारा लीज पार्सल वैन की नई योजना शुरू की इसके तहत

यदि रबिन्द्र की मानें तो पोल्ट्री उद्योग उनदिनों बिहार में काफी पीछे था। साथ प्रदेश में हैचिंग एक्स का उत्पादन और ब्रीडिंग फार्म भी नहीं था! रबिन्द्र ने इस बावत सर्वे कराया तो पता लगा कि बिहार में प्रतिमाह ढेड़ करोड़ चूजों की जरूरत थी और इन चूजों का बिहार में आयात किया जाता था! रबिन्द्र सिंह ने बगैर देरी किये योजना बनाई कि यदि इनका उत्पादन बिहार में शुरू किया जाए तो राज्य को काफी फायदा होगा! साल 2012 में रबिन्द्र ने ओवल एगरोटेक प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी की स्थापना की और 6 लाख चूजों के प्रतिमाह उत्पादन का लक्ष्य बना 8 करोड़ की लागत से हैचरी एवं बिहार के पहले ब्रीडिंग फार्म की शुरुआत की! हाजीपुर औद्योगिक इलाके में शुरू हुए इस उद्योग में सभी आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और वातावरण का पूरा ध्यान रखते हुए इसे शुरू किया गया! बिहार के पोल्ट्री उद्योग के सिरमौर कहे जाने वाले ई. रबिन्द्र सिंह ने इस व्यवसाय में लाखों लोगों को आगे बढ़ाया और आज प्रदेश में 30 लाख लेयर एक्स यानी खाने वाले अण्डों का उत्पादन हो रहा है! साथ ही बिहार के सैकड़ों करोड़ रुपए की रकम जो प्रदेश के बाहर जा रही थी, अब वही रकम प्रदेश के विकास में काम आ रही है!

राज्य के जाने-माने उद्योगपति ई.रबिन्द्र सिंह कहते हैं कि बिहार में लेयर एक्स की जरूरत 3 करोड़ प्रतिदिन से है और इस हिसाब से राज्य को 900 करोड़ अंडे प्रतिवर्ष चाहिए! यदि हम शरीर के पोषण को केंद्र में रखकर इस बात को समझें

सरकार द्वारा लीज पार्सल वैन और लीज एस.एल.आर को 3 साल के लिए टेंडर पर देने की योजना पर काम शुरू हुआ। ऐसे में हमारी कंपनी टी एंड एस लॉजिस्टिक प्राइवेट लिमिटेड आगे आई और हमने रेलवे से हाथ मिलाकर नार्थ ईस्ट को ट्रेन से मुंबई, दिल्ली, बेंगलोर, चेन्नै एवं कोलकता को एक दूसरे से जोड़ दिया! काम ने रफ़्तार पकड़ी और 2006 आते-आते कंपनी का टर्न ओवर 30 करोड़ रुपए पहुँच गया साथ ही ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को रेल और हवाई मार्ग से जोड़ देने के कारण हमारी लोकप्रियता बढ़ने लगी!

बदलते समय के साथ में कंपनी का टर्न ओवर भी लगातार बढ़ रहा था, साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर काम करने के कारण कंपनी को पूंजी की जरूरत महसूस होने लगी। ऐसे में रबिन्द्र सिंह और उनकी कंपनी को किसी पार्टनर की जरूरत थी! 2009 आते-आते कंपनी का टर्न ओवर 30 करोड़ से बढ़कर 80 करोड़ रुपए तक जा पहुँचा। ऐसे में रबिन्द्र ने सालाना 200 करोड़ के टर्न ओवर की योजना पर काम शुरू किया और बैंक से वित्तीय सहायता ली, लेकिन पार्टनरों के कारण कंपनी को भारी घाटे के दौर से गुज़रना पड़ा! 2011 में रबिन्द्र ने पार्टनरों से अलग होकर पुनः ट्रांसपोर्ट के इस व्यापार को खड़ा किया और अपने भाईयों को जमा जमाया व्यापार सौंप कर वापस पटना आ गए!



तो राज्य में प्रतिव्यक्ति 210 अण्डों की खपत होनी चाहिए जबकि राष्ट्रीय स्तर पर यदि हम देखें तो केवल 66 अण्डों की ही खपत है और इस स्थिति में भी बिहार सबसे निचले पायदान पर है जहाँ केवल 11 अण्डों की ही खपत है और इस स्थिति में राज्य को करीब 3 करोड़ अण्डों की अभी भी जरूरत है! यही वे आँकड़े हैं जिसकी वजह से हमने इस क्षेत्र में कदम रखा और आज बिहार में इससे सम्बंधित सभी उधोगों को मिलाकर प्रतिदिन 30 लाख लेयर एक्स और प्रतिमाह 6 लाख हैचिंग एक्स का उत्पादन हो रहा है। इस काम में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि हमें देखकर ही इस व्यवसाय में काफी लोग आगे आए जिनका हमने मार्गदर्शन किया! रबिन्द्र सिंह का कहना है कि इस उद्योग में असीम संभावनाओं को देखते हुए हमने एक और उद्योग लगाने का निर्णय लिया है

जिसपर तेजी से काम चल रहा है! रबिन्द्र की कंपनी ने इसी साल वैशाली जिले के लालगंज में 12 एकड़ ज़मीन पर 21 करोड़ रुपए की लागत से बिहार के सबसे बड़े लेयर एग के उत्पादन की योजना पर काम शुरू किया है जो न केवल सभी प्रकार के अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से लैस होगा बल्कि अण्डों का संग्रह भी स्वचालित फीडिंग के द्वारा किया जाएगा! जून 2020 में शुरू होने जा रहे इस उद्योग में प्रतिदिन 1 लाख 80 हजार अण्डों के उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है!

एक सफल उद्योगपति और राजनीतिक के तौर पर रबिन्द्र सिंह के जीवन का सफर शानदार रहा है! अपनी व्यावसायिक सोच के जरिए सिंह ने जिस प्रकार अपने राज्य को सशक्त बनाया है, उसी प्रकार राजनीति में रहकर वे बिहार को और

मजबूत बनाना चाहते हैं! जानकारों का मानना है कि यदि रबिन्द्र उद्योग के जरिए अण्डों के आयात को कम कर बिहार को आर्थिक तौर पर सशक्त बना सकते हैं तो ऐसा व्यक्ति राजनैतिक तौर पर क्या कुछ नहीं कर सकता! रबिन्द्र सिंह द्वारा इसी साल 25 फरवरी को पटना के ऐतिहासिक गौंधी मैदान में आयोजित राष्ट्रीय सामान अधिकार यात्रा महारेली में पूरे प्रदेश से लाखों लोगों का गौंधी मैदान पहुंचना रबिन्द्र की राजनैतिक लोकप्रियता के साथ-साथ उनकी बेहतर सोच को भी दर्शाता है! आउटलुक हिंदी में 5 नवम्बर, 2018 को प्रकाशित एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था कि मेरा राजनैतिक सोच तुष्टीकरण की राजनीति को छोड़कर जात-पात और बगैर धर्म की बात किये मानव समाज के निर्माण का है ताकि सभी को सामान रूप से विकास का अवसर मिल सके! इसके लिए हमें समान

शिक्षा व्यवस्था, समान पाठ्यक्रम को पूरे देश में लागू करना होगा ताकि सभी वर्ग,जाति, सम्प्रदाय के अलावा गरीब और अमीरों के बच्चे भी एक ही छत के नीचे शिक्षा ग्रहण कर सकें! इसी प्रकार स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक प्रखंड में मल्टी स्पेशलिटी अस्पतालों का निर्माण हो ताकि लोगों को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं मिल सकें! किसानों को सही निति के तहत उन्हें अपने उत्पादों का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार मिले, जिसके तहत प्रखंड स्तरीय एक ऐसे कृषि बाजार का निर्माण हो जिसमें वे अपनी फसल को बेच सकें और उसी बाज़ार से व्यापारी या फेक्टरी मालिक खरीद भी सकें ताकि मूल्यों पर नियंत्रण रखा जा सके, यदि ऐसा होता है तो बेरोजगारी स्वतः समाप्त होगी और देशवासी स्वरोजगार शुरू कर सकेंगे!

शिक्षा व्यवस्था, समान पाठ्यक्रम को पूरे देश में लागू करना होगा ताकि सभी वर्ग,जाति, सम्प्रदाय के अलावा गरीब और अमीरों के बच्चे भी एक ही छत के नीचे शिक्षा ग्रहण कर सकें! इसी प्रकार स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक प्रखंड में मल्टी स्पेशलिटी अस्पतालों का निर्माण हो ताकि लोगों को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं मिल सकें! किसानों को सही निति के तहत उन्हें अपने उत्पादों का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार मिले, जिसके तहत प्रखंड स्तरीय एक ऐसे कृषि बाजार का निर्माण हो जिसमें वे अपनी फसल को बेच सकें और उसी बाज़ार से व्यापारी या फेक्टरी मालिक खरीद भी सकें ताकि मूल्यों पर नियंत्रण रखा जा सके, यदि ऐसा होता है तो बेरोजगारी स्वतः समाप्त होगी और देशवासी स्वरोजगार शुरू कर सकेंगे!

शिक्षा व्यवस्था, समान पाठ्यक्रम को पूरे देश में लागू करना होगा ताकि सभी वर्ग,जाति, सम्प्रदाय के अलावा गरीब और अमीरों के बच्चे भी एक ही छत के नीचे शिक्षा ग्रहण कर सकें! इसी प्रकार स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक प्रखंड में मल्टी स्पेशलिटी अस्पतालों का निर्माण हो ताकि लोगों को आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं मिल सकें! किसानों को सही निति के तहत उन्हें अपने उत्पादों का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार मिले, जिसके तहत प्रखंड स्तरीय एक ऐसे कृषि बाजार का निर्माण हो जिसमें वे अपनी फसल को बेच सकें और उसी बाज़ार से व्यापारी या फेक्टरी मालिक खरीद भी सकें ताकि मूल्यों पर नियंत्रण रखा जा सके, यदि ऐसा होता है तो बेरोजगारी स्वतः समाप्त होगी और देशवासी स्वरोजगार शुरू कर सकेंगे!





पद्मश्री डॉ. रबींद्र नारायण सिंह

## स्वास्थ्य और समाज को समर्पित

डॉ. रबींद्र नारायण सिंह बिहार के चिकित्सा क्षेत्र का एक प्रसिद्ध नाम हैं। उन्होंने चिकित्सा और परोपकार दोनों क्षेत्रों में व्यापक काम से एक अलग पहचान बनाई है। वे देश के प्रसिद्ध रोटेरियन और ऑर्थोपेडिक विशेषज्ञ हैं। डॉक्टर सिंह ने अपने कैरियर के शुरुआती दौर में बहुत संघर्ष किया और पटना के कदमकुआं इलाके में एक छोटे से कार गैराज से अपने क्लिनिक की शुरुआत की। समय के साथ उनकी शोहरत बढ़ती गई। बाद में उन्होंने कंकड़बाग में अनूप इंस्टीट्यूट ऑफ ऑर्थोपेडिक एंड रिहैबिलिटेशन की स्थापना की। इसके अलावा पटना में उन्होंने सभी अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त सवेरा कैंसर एंड मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के नाम से एक बहुत बड़े अस्पताल की शुरुआत की है जिसका उद्घाटन हाल ही में हुआ है। उन्होंने बिहार के सहरसा स्थित अपने गोलमा गांव में भी एक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की शुरुआत की है। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए आउटलुक पत्रिका समूह ने 2018 में उन्हें 'आइकन्स ऑफ बिहार' अवार्ड से सम्मानित किया है।



बिहार के सहरसा जिले के गोलमा गांव में जन्मे डॉ. रबींद्र नारायण सिंह ने 1970 में पटना मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ाई की और 1976 में उसी कॉलेज से एमएस की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड का विकल्प चुना और नॉटिंगहम में क्वींस मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग में शिक्षक के रूप में काम करने के अलावा और भी कई संस्थानों में काम किया। उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने से पहले डॉक्टर सिंह पटना के नालंदा मेडिकल कॉलेज में एनाटॉमी के शिक्षक थे।

1976 में डॉ. रबींद्र ने एडिनबर्ग के रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन्स (एफआरसीएस) की फैलोशिप प्राप्त की। वे लंबे समय तक इंग्लैंड में रहे और लिवरपूल विश्वविद्यालय से

आर्थोपेडिक्स में एमसीएच डिग्री प्राप्त की। एक प्रतिभाशाली छात्र के रूप में विख्यात डॉ. रबींद्र को विदेशों से नौकरियों के कई प्रस्ताव मिले। लेकिन उनके पिता, जो कि अपने समय के मशहूर जिला जज थे, की इच्छा थी कि रबींद्र लौटकर अपने देश की सेवा करें।

देश लौटने के बाद से डॉ. रबींद्र पटना के कंकड़बाग क्षेत्र में 27 साल पुराने राधा वल्लभ हेल्थ केयर ऐंड रिसर्च फाउंडेशन और अनूप इंस्टीट्यूट ऑफ ऑर्थोपेडिक्स ऐंड रिहैबिलिटेशन के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। उनके साथियों के अनुसार, डॉ. रबींद्र द्वारा चलाए जा रहे 100 बेड वाले इस अस्पताल में अति आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। देश में इस मॉडल पर संचालित हो रहे केवल

चार ही बड़े अस्पताल हैं- संचेती अस्पताल, पुणे; कुलकर्णी संस्थान, मिराज; गंगा अस्पताल, पुडुचेरी और भट्टाचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ ऑर्थोपेडिक्स, कोलकाता। डॉ. रबींद्र नारायण सिंह का झुकाव हमेशा से सामाजिक कार्यों की तरफ रहा। यही कारण है कि वे 1983 में पटना में रेडक्रॉस सोसाइटी के साथ जुड़ गए। लगभग तीन दशक पहले उन्होंने हर मंगलवार को 20 मरीजों को मुफ्त इलाज देना शुरू किया और आज भी यह क्रम जारी है। वर्ष 1990 तक डॉ. रबींद्र पटना के राजेंद्र नगर इलाके के एक अनाथालय किशोर दल शिशु भवन से जुड़ चुके थे। डॉ. रबींद्र के परोपकार के कार्यों में उत्साह और प्रतिबद्धता को महसूस करते हुए शिशु भवन के तत्कालीन व्यवस्थापक रंजीत भाई को उनसे बहुत अधिक उम्मीदें थीं। डॉ. रबींद्र रंजीत भाई की उम्मीदों पर खरे

उतरे और उनकी मदद से भवन में करीब 30 अनाथ बच्चियों को आश्रय मिला। बाद में इन लड़कियों के लिए पास के रबींद्र बालिका विद्यालय में मुफ्त शिक्षा का इंतजाम किया गया। आखिरकार, उन्होंने न केवल इन लड़कियों की शादी अपने खर्च पर करने में मदद की बल्कि उन्हें अपने निजी अस्पताल में रोजगार भी दिया। डॉ. रबींद्र 1994 से ही पटना के कुम्हारर स्थित एक संस्था अंतरज्योति बालिका विद्यालय के सदस्य के रूप में भी जुड़े हुए हैं। डॉ. रबींद्र की एक अन्य परोपकारी पहल भारत में लड़कियों के घटते अनुपात और उनकी शिक्षा की चुनौती पर केंद्रित है। इन मुद्दों का हल निकालने के लिए उन्होंने अपनी मां स्वर्गीय इंदु देवी की याद में ‘इंदु देवी छात्रा प्रोत्साहन राशि’ की शुरुआत की। इस पहल के तहत उनके पैतृक गांव गोलमा की मेधावी छात्राओं को छात्रवृत्ति दी जाती है, ताकि वे बिना किसी बाधा के अपने अध्ययन को पूरा कर सकें और एक स्वस्थ तथा प्रगतिशील राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकें। 2003 में उनकी तीसरी बेटी पुष्पांजलि सिंह की असामयिक और आकस्मिक मौत ने डॉ. रबींद्र और उनकी पत्नी कविता सिंह को गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा और छात्रवृत्ति देने के लिए एक और पहल शुरू करने के लिए प्रेरित किया। ‘पुष्पांजलि शिक्षा केंद्र’ नाम से शुरू इस संस्थान की जिम्मेदारी कविता सिंह खुद संभालती हैं। यह केंद्र गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले दर्जनों लड़के और लड़कियों को मुफ्त शिक्षा देता है। डॉ. आर.एन. सिंह का मानना है कि किसी को सशक्त बनाने में शिक्षा से



डॉ. आर.एन. सिंह के पुत्र और प्रसिद्ध नी एंड हिप रिप्लेसमेंट विशेषज्ञ डॉ. आशीष सिंह



अधिक किसी चीज का योगदान नहीं है। इसीलिए अपने कई प्रयासों से वे खुद संतुष्ट नहीं होते और अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद ‘हर एक को एक सिखाए’ के सिद्धांत का प्रचार करना जारी रखते हैं। इसके तहत डॉक्टर सिंह समाज के अच्छे लोगों से एक कन्या को अपनाने और उसकी शिक्षा की जिम्मेदारी लेने की अपील करते हैं, ताकि वह समाज की मुख्यधारा में आ सके।

2009 में बिहार के तत्कालीन राज्यपाल आर.एल. भाटिया ने डॉ. रबींद्र को रेडक्रॉस में उनके काम के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया था। 2010 में, उन्हें सामाजिक कार्यों और चिकित्सा क्षेत्र में उनके योगदान के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया। पद्मश्री डॉ. रबींद्र न केवल पटना में बिहार नेत्रहीन परिषद के अध्यक्ष के रूप में काम कर रहे हैं, बल्कि नेत्रहीन लोगों को मुख्यधारा में लाने के उनके प्रयास सभी के लिए एक सशक्त उदाहरण हैं। डॉ. रबींद्र के जीवन पर दिनेश आनंद द्वारा निर्देशित एक फिल्म ‘ए डॉक्यूमेंट्री ऑन डॉ. रबींद्र’ यू-ट्यूब पर सर्च करके देखी जा सकती है।



डॉ.रविशंकर उर्फ बच्चन सिंह

## संघर्ष ने दिलाई सफलता की राह

छात्रों द्वारा शिक्षकों को दिए जाने वाले आदर और सम्मान को देखते हुए डॉ.रविशंकर सिंह उर्फ बच्चन सिंह ने छात्र जीवन में ही शिक्षा के क्षेत्र में करियर बनाने का फैसला ले लिया था! रविशंकर कहते हैं कि पूर्व में विश्वविद्यालयों में जितनी नियुक्तियां हुआ करती थीं, वे राज्य सरकार या कुलपति द्वारा गठित कमिटी द्वारा की जाती थीं लेकिन जब मेरा छात्र जीवन समाप्त हुआ उस दौरान यूनिवर्सिटी सर्विस कमीशन बहाल हुआ और इस कमीशन को छात्रों के दाखिले का अधिकार मिला! दो बार हुए इंटरव्यू में भी मेरा चयन न हो सका लेकिन शिक्षा के प्रति मेरे गहरे लगाव के कारण 1989 में मैंने बॉटनी के प्रख्यात शिक्षक डॉ. ( प्रो ) अशोक कुमार सिन्हा ( अब दिवंगत ) के माध्यम से कोचिंग जगत में कदम रखा और छात्रों के बीच अपनी एक अलग पहचान बनाई! उन्होंने 90 के दशक में पटना के कंकड़बाग इलाके से गाइडेंस नाम से एक निजी कोचिंग संस्थान की शुरुआत की और आगे आने वाले वक़्त में उन्हे वह सब कुछ मिला जिसे रुपयों से खरीदा जा सकता है और वह भी मिला जिसे पैसों से कभी खरीदा नहीं जा सकता!







इस दौरान यूनिवर्सिटी कमिशन द्वारा लिए गए एक इंटरव्यू में बच्चन को अविभाजित बिहार ( अब झारखंड ) से नौकरी का ऑफर मिला लेकिन उन्होंने इस नौकरी का परित्याग कर दिया ! बिहार के शिक्षा जगत में अपनी अलग पहचान बना चुके डॉ.रविशंकर ने 2012 में पटना के निसरपुरा में गाइडेंस इंटर कॉलेज की स्थापना की और 2014 में गाइडेंस नर्सिंग ऐंड एलाइड साइंसेस के अलावा दीक्षा पारामेडिकल की भी शुरुआत की ! आज बच्चन द्वारा स्थापित इन संस्थानों में करीब 1500 छात्र-छात्राओं के अलावा 100 से अधिक अधिकारी और कर्मचारी काम कर रहे हैं ! 24 जनवरी, 2018 को प्रकाशित इंडिया टुडे के अंक में डॉ.रविशंकर के सफलता की कहानी को प्रमुखता से प्रकाशित किया जा चुका है !

5 अप्रैल, 1963 को पटना में जन्मे डॉ.रविशंकर सिंह उर्फ बच्चन सिंह का नाम आज बिहार के शिक्षा जगत में बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है ! पटना विश्वविद्यालय से 1986 में एमएससी की डिग्री हासिल करने के पश्चात बच्चन ने 1988 में एलएलबी किया और फिर इसी यूनिवर्सिटी से 1989 में पीएचडी की डिग्री ली ! पटना साइंस कॉलेज के छात्र रहे रविशंकर लगातार 3 वर्ष तक कॉलेज स्थित कॉमन रूम के सचिव रहे और इस दौरान उन्होंने कॉलेज के छात्र-छात्राओं के अलावा अपने शिक्षकों के दिलों में एक अलग जगह बनाई !

उनके परिवार के सदस्य बताते हैं कि बच्चन आरम्भ से ही न केवल मेधावी छात्र थे बल्कि एक कुशल समाजसेवी होने के साथ-साथ एक कुशल मोटिवेटर भी थे। बच्चन के पिता और प्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनानी स्व.शत्रुघ्न प्रसाद सिंह उन दिनों पालीगंज स्थित मसौढ़ा मिडिल स्कूल के प्रधानाध्यापक थे और वे चाहते थे कि बच्चन डॉक्टर बने लेकिन तबतक बच्चन ने अध्यापन के क्षेत्र में उतरने का मन बना लिया था ! यह वो दौर था जब रविशंकर को न केवल एक पेट्रोलियम कंपनी से उच्च पद पर नौकरी का ऑफर मिला बल्कि अविभाजित बिहार ( अब झारखंड में ) के एक प्रसिद्ध कॉलेज से लेक्चररशिप का ऑफर भी आया लेकिन अपने दिल की सुनने बात वाले इस शख्स ने एक बार फिर अपने दिल की ही सुनी और इन दोनों ही ऑफरों को ठुकरा दिया !

रविशंकर के कई मित्र बताते हैं कि स्कूल के दिनों से ही बच्चन की खेलों में गहरी रुचि थी और बैडमिंटन, वॉलीबाल एवं क्रिकेट के बेहतरीन खिलाड़ियों में उनका नाम शुमार था। यदि वे चाहते तो खेल जगत में भी अपना कैरिअर बना सकते थे लेकिन बच्चन ने शिक्षा जगत की तरफ अपने कदम बढ़ाये और सफल हुए !

1987 में डॉ.रविशंकर उर्फ बच्चन सिंह पटना के बी.एम. दास रोड स्थित एक निजी कोचिंग संस्थान के सहयोग से



अपने विषय बायोलॉजी के साथ छात्रों के सामने आये और एनाटॉमी, हिस्टोलॉजी और फिजिओलॉजी पढ़ाना आरम्भ किया ! उन्होंने 1987 के अंतिम माह में पटना के कंकरबाग इलाके में गाईडेन्स नाम से एक छोटे- से कोचिंग संस्थान की शुरुआत की और फिर देखते ही देखते इस संस्थान आकार तेजी से बढ़ने लगा ! जानकार बताते हैं कि डॉ.रविशंकर ने अपने ज्ञान, अपने विषय पर पकड़ और मोटिवेशनल क्षमता की बदौलत जिस तेजी से सफलता पायी है, वह खुद में एक मिसाल है।

नीट बायोलॉजी और आईआईटी की तैयारियों के लिए प्रसिद्ध इस संस्थान ने अभी हाल के वर्षों में जो रिजल्ट दिए हैं वे इस संस्थान के नाम की सार्थकता को सिद्ध करते हैं ! डॉ.सिंह बताते हैं कि इस संस्थान से राज्य में सबसे कम फीस और अनुशासन के साथ अच्छी पढ़ाई के लिए कि जाना जाता है, इसके साथ ही हमने गरीबी रेखा से नीचे जिन्दगी बसर कर रहे बच्चों की निशुल्क शिक्षा को ध्यान में रखकर एक मुहिम की भी शुरुआत की है जिसके तहत बी.पी.एल के बच्चों को चिन्हित कर उन्हें शिक्षा प्रदान की जा रही है ताकि वे भी समाज की मुख्यधारा में आ सकें !

बिहार के शिक्षा जगत में अपनी अलग पहचान बना चुके डॉ.रविशंकर उर्फ बच्चन सिंह ने 2012 में पटना के निसरपुरा में गाइडेंस इंटर कॉलेज की स्थापना की और इसके दो साल बाद 2014 में पटना के कंकरबाग इलाके में गाइडेंस नर्सिंग ऐंड एलाइड साइंसेस के अलावा दीक्षा पारामेडिकल की भी स्थापना की जहाँ पढ़ रहे बच्चे-बच्चियों को उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान की जा रही है !

शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित अवाइर्स अपने नाम कर चुके डॉ.रविशंकर कहते हैं कि मैं अवाइर्स के लिए नहीं बल्कि अपनी संस्था की तरक्की के लिए काम करता हूँ लेकिन अच्छे कामों के लिए अवाइर्स और रिवाइर्स का होना भी आवश्यक है ! मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि हाल के वर्षों में कुछ प्रमुख समाचार पत्रों, टीवी चैनलों के अलावा कई स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा मुझे सम्मानित किया गया ! व्यस्तता के कारण अक्सर इस प्रकार के कार्यक्रमों में मैं स्वयं शिरकत नहीं कर पाता लेकिन अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से उपस्थिति दर्ज करवाने की हरसंभव कोशिश करता हूँ।

बहरहाल, इतना तो तय है कि 30 साल पुराने इस गाइडेंस ने पीढ़ियों के अनुभव के साथ शिक्षा की गुणवत्ता को जिस प्रकार कायम रखा है, उसका श्रेय न केवल बच्चन सिंह को जाता है बल्कि इस संस्थान के छात्र-छात्राओं की भी इसमें अहम् भूमिका है !





डॉ. रिदु कुमार शर्मा

## अद्भुत और बेमिसाल शोहरत के धनी

फरवरी 1982 में पटना के नौबतपुर के कोरावां गाँव के एक किसान परिवार में जन्मे डॉ. रिदु कुमार शर्मा के संघर्ष की कहानी काफी दिलचस्प है। करीब पांच हज़ार की आबादी वाले इस गाँव में दूर-दूर तक कोई डॉक्टर न था। रिदु के पिता अरविन्द कुमार शर्मा पढ़े-लिखे किसान थे और उनकी चाहत थी कि उनका पुत्र पढ़-लिखकर चिकित्सक बने और गरीबों की सेवा करे। रिदु मेधावी छात्र थे लेकिन परिवार की आर्थिक हालत अच्छी न थी। ऐसे में पटना के महेन्द्रू इलाके में एक लॉज में रहकर उन्होंने मेडिकल की तैयारी शुरू की।

कड़ी मेहनत, संघर्ष और बुलंद हौसले के बीच रिदु की मेहनत रंग लाई और आज उनकी गिनती बिहार के प्रमुख ऑन्कोलॉजिस्ट यानी कैंसर रोग विशेषज्ञों में की जाती है।

मगध कैंसर फाउंडेशन के संस्थापक और बिहार के जाने-माने कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. रिदु कुमार शर्मा ने अल्पावधि में जो शोहरत हासिल की है वह अद्भुत है, और बेमिसाल भी। पटना के नौबतपुर के निकट त्रिभुवन हाई स्कूल से प्राइमरी शिक्षा ग्रहण करने वाले रिदु शर्मा ने इसी विद्यालय से 1997 में मैट्रिक और 1999 में नौबतपुर स्थित मालतीधारी कॉलेज से आई.एस.सी की परीक्षा पास की। डॉ. रिदु कहते हैं कि परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण निजी तौर पर शिक्षक से पढ़ पाना मुश्किल सा था, ऐसे में सारी पढ़ाई मुझे खुद ही करनी पड़ी। पिता अरविन्द कुमार शर्मा चाहते थे कि उनका पुत्र पढ़-लिखकर डॉक्टर बने। ऐसे में पिता की चाहत का सम्मान करना उनका फ़र्ज भी था और उनकी चाहत थी। इन्हीं सब परिस्थितियों के बीच रिदु 1999 में पटना आ गए





और महेन्द्र इलाके में स्थित एक लॉज में रहकर मेडिकल परीक्षाओं की तैयारियों में जी-जान से जुट गए। 2002 में ऑल इंडिया सी.बी.एस.सी/पी.एम.टी. द्वारा आयोजित परीक्षा के नतीजे काफी चौकाने वाले थे क्योंकि रिदु शर्मा ने राष्ट्रीय स्तर पर 260वां रैंक हासिल किया था। एक अत्यंत मेधावी छात्र के रूप में पहचान बना चुके रिदु शर्मा ने 2002 में मुंबई के प्रसिद्ध लोकमान्य तिलक मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया और 2002 से 08 तक इसी कॉलेज से पढ़कर एम.बी.बी.एस की डिग्री हासिल की। गाँव के लोगों और परिवार के सदस्यों की खुशी और उत्साह के बीच डॉ. शर्मा को अब अपनी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती दिखाई दे रही थीं। ऐसे में उन्होंने पी.जी.आई चंडीगढ़ का रुख किया और 2009 से 2012 तक खूब दिल लगाकर पढ़ाई की और रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएट किया।

कुछ कर गुजरने की चाहत के बीच 2013 में डॉ. शर्मा ने पटना स्थित महावीर कैंसर संस्थान में अपना योगदान दिया और ग्यारह महीने तक सेवाएं दीं। दिसम्बर 2013 में डॉ. रिदु शर्मा ने बतौर सीनियर रेजिडेंट पटना स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान यानी आई.जी.आई.एम.एस में अपना योगदान दिया और इसी साल त्रिवेन्द्रम स्थित रीजनल कैंसर सेंटर से मेडिकल ऑन्कोलॉजी में डी.एम के लिए दाखिला लिया और 2014-17 में डी.एम की डिग्री हासिल की। इस अवधि में डॉ. शर्मा ने त्रिवेन्द्रम में रहकर केमोथेरेपी, टारगेटेड थेरेपी, बोन मेरो ट्रांसप्लांट और इम्मूनो थेरेपी आदि का भी प्रशिक्षण हासिल किया और 2017 में वापस पटना आ गए। श्रीकृष्णापुरी इलाके से अपनी निजी प्रैक्टिस की शुरुआत की। पटना स्थित पारस एच.एम.आर.आई हॉस्पिटल द्वारा उन्हें बतौर कंसल्टेंट मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट के पद पर काम का ऑफर मिला जिसे डॉ रिदु शर्मा ने स्वीकार कर लिया। प्रदेश के ख्याति प्राप्त चिकित्सक, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष और डॉ.बी.सी.रॉय राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित डॉ.सहजानंद प्रसाद सिंह कहते हैं कि यदि हम डॉ. रिदु शर्मा की उम्र से नहीं बल्कि योग्यता के पैमाने पर उनके कार्यों का मूल्यांकन करेंगे तो पाएंगे कि उनके व्यक्तित्व में कुछ खास है। सफलता उम्र नहीं बल्कि, योग्यता को आधार बना आपके दरवाजे पर दस्तक देती है और आपको देश में ऐसे कई उदाहरण मिल जायेंगे।

डॉ. सहजानंद आगे कहते हैं कि ऑन्कोलॉजी बड़ा जटिल विषय है और जिस प्रकार डॉ. शर्मा हिमेटो ऑन्कोलॉजी, पेडियाट्रिक ऑन्कोलॉजी और बोन मेरो ट्रांसप्लांट फिजिशियन के तौर पर काम कर रहे हैं, ऐसे में पूरे भरोसे के साथ कहा जा सकता है कि यह शख्स प्रदेश के चिकित्सा जगत में एक नई लकीर खींचेगा। अपने पेशे से संबंधित कई विषयों में फेलोशिप हासिल कर चुके डॉ.शर्मा न केवल इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के आजीवन सदस्य हैं बल्कि



ICON और ESMO( Europaen society of medical oncology) के सदस्य भी हैं। एक कैंसर विशेषज्ञ के तौर पर डॉ.शर्मा इस बात को लेकर काफी चिंतित हैं कि बच्चों में भी यह बीमारी तेजी से बढ़ रही है विशेषकर ब्लड कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, किडनी कैंसर, सॉफ्ट टिशू सारकोमा और बोन ट्यूमर आदि।

डॉ. शर्मा की पत्नी डॉ. प्रसनता कहती हैं कि हमने मगध कैंसर फाउंडेशन की शुरुआत कैंसर रोगियों को जागृत करने के मकसद से की थी। हमारा मानना है कि रोगियों का उपचार जितना जरूरी है उतनी ही जरूरत उन्हें जागृत करने की भी है। मैं एक फैमिली फिजिशियन हूँ और मेरा भी यह दायित्व बनता है कि हम समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को उन पदार्थों से दूर रहने को कहें जो कर्क रोग के प्रमुख कारण हैं। मगध कैंसर फाउंडेशन द्वारा समय-समय पर शहरों और गांवों में जागरूकता अभियान चलाया जाता है जिसमें तम्बाकू और सिगरेट से बचाव और उपायों पर चर्चा की जाती है। डॉ. रिदु कहते हैं कि मुझे समय-समय पर बिहार और राज्य के बाहर भी फैकल्टी लेक्चर के लिए आमंत्रित किया जाता है और मैं जहाँ भी जाता हूँ, लोगों को एक बात जरूर कहता हूँ कि आम लोग जब तक तम्बाकू का बहिष्कार नहीं करेंगे, तब तक कैंसर रूपी दानव हमारे सामने से नहीं हटेगा।







पद्मश्री डॉ. विजय प्रकाश सिंह

## बिहार की चिकित्सा जगत में बिग हॉस्पिटल की दस्तक

पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी विभाग में प्रोफ़ेसर सह विभागाध्यक्ष पद्मश्री डॉ विजय प्रकाश सिंह बिहार की चिकित्सा जगत का जाना माना नाम है। 1954 को बिहार के बांका में जन्मे डॉ.विजय प्रकाश का बचपन संघर्ष और तकलीफों के दौर से गुज़रा। बिहार पुलिस में कॉन्स्टेबल और फिर सब-इंस्पेक्टर रहे विजय के पिता की मृत्यु 1972 में सरकारी नौकरी के दौरान ही हो गयी थी, ऐसे में पढ़ाई को जारी रखने में विजय को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अत्यंत मेधावी छात्र के रूप में पहचान रखने वाले विजय प्रकाश ने 1971 में रांची विश्वविधालय द्वारा आयोजित आई.एस.सी की परीक्षा में न केवल टॉपर रहे बल्कि विजय को पटना मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की डिग्री के साथ 1978 में सर्वश्रेष्ठ स्नातक के रूप में सम्मानित भी किया गया। अपनी बेहतर चिकित्सा के दम पर डॉ.विजय प्रकाश सिंह ने प्रदेश की चिकित्सा जगत में जो अमिट छाप छोड़ी है वो अब्दुत भी है और बेमिसाल भी। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की बिहार इकाई से जुड़े कई सदस्य बताते हैं की डॉ.प्रकाश ने हमेशा से कुछ बड़ा और कुछ अलग करने का प्रयास किया और इस कड़ी में डॉ.विजय प्रकाश द्वारा पटना में संचालित बिग हॉस्पिटल इसका एक बेहतरीन उदाहरण है जहाँ हर तबके से आने वाले मरीज़ों के इलाज की समुचित व्यवस्था है। डॉ.विजय प्रकाश की बेहतर चिकित्सा और कामों को ध्यान में रखकर साल 2003 में उन्हें भारत के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ.ए पी जे अब्दुल कलाम के हाथों पद्मश्री और कामों को ध्यान में रखकर साल 2003 में उन्हें भारत के तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ.ए पी जे अब्दुल कलाम के हाथों पद्मश्री देकर सम्मानित किया गया इसके अलावा डॉ.प्रकाश की उपलब्धियों को देखते हुए दिसंबर 2018 में आउटलुक पत्रिका समूह द्वारा उन्हें "आइकॉन्स ऑफ़ बिहार" अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है





कि बेहतर, सुव्यवस्थित, आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में बिहार, झारखंड और अन्य ऐसे राज्यों के मरीज दिल्ली, मुंबई और दूसरे विकसित राज्यों की ओर रुख करते हैं। इसलिए, उन्होंने एक अच्छे निजी अस्पताल की जरूरत महसूस की, ताकि मरीजों को व्यवहारिक और किफायती इलाज उपलब्ध कराकर उन्हें बड़े शहरों की ओर पलायन से रोका जा सके। इसने उन्हें पटना के अगमकुआं में मल्टी सुपर-स्पेशलिटी बिग हॉस्पिटल स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

वर्ष 1954 में बांका सदर अस्पताल में जन्मे डॉ. विजय प्रकाश सिंह को बचपन में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। बिहार पुलिस में एक कांस्टेबल और फिर सब-इंस्पेक्टर रहे डॉ. विजय के पिता की 1972 में नौकरी के दौरान ही मृत्यु हो गई। विजय के बड़े भाई को परिवार

की जिम्मेदारियां निभानी पड़ी और कठिनाइयों से जूझते हुए उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। अपने माता-पिता की तीसरी संतान विजय प्रकाश की पढ़ाई में गहरी रुचि थी और वे अपने छात्र जीवन में स्कूलों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में पहला स्थान हासिल करते थे।

परिवार के सदस्यों के अनुसार, विजय ने अपना बचपन भागलपुर के पास कहलगांव में बिताया। उन्होंने रांची के पास नेतरहाट विद्यालय की प्रवेश परीक्षा में भाग लिया और उसमें टॉप किया। चूंकि वह एक प्रतिभाशाली छात्र थे, तो उनका परिवार चाहता था कि वह एक डॉक्टर बनें। उन्होंने परिवारवालों की भावनाओं का सम्मान किया और अगले दो दशकों में एमबीबीएस, एमडी और एमआरसीपी जैसी डिग्री हासिल की।

प्रसिद्ध गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट पद्मश्री डॉ. विजय प्रकाश एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन ऑफ इंडिया, इंडियन एसोसिएशन ऑफ क्लिनिकल मेडिसिन, इंडियन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी, सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एंडोस्कोपी ऑफ इंडिया और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन जैसी विभिन्न संस्थाओं के आजीवन सदस्य हैं। उन्होंने लंबे समय तक इंडियन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी के बिहार चैप्टर में सचिव और अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। उन्हें 1986 में पटना में इंडियन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी द्वारा पटना में आयोजित एक संयुक्त संगोष्ठी के सफल आयोजन के साथ एक संयुक्त आयोजन सचिव के रूप में कार्य करने की मान्यता प्राप्त है।

विशेषज्ञों का कहना है कि डॉ. विजय प्रकाश न सिर्फ एक सफल चिकित्सक हैं, बल्कि चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान अविस्मरणीय है। एक प्रसिद्ध चिकित्सक और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की बिहार इकाई के अध्यक्ष का कहना है कि डॉ. विजय प्रकाश ने पीजीआई, चंडीगढ़ की स्थायी शैक्षणिक समिति, राष्ट्रीय परीक्षा की संचालन परिषद, भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में समिति, पटना विश्वविद्यालय में चिकित्सा संकाय और आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के निर्वाचित सदस्य के रूप में सहायक काम किया। पिछले 20 वर्षों से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं, सेमिनारों और सम्मेलनों में 16 पत्रों की प्रस्तुति के साथ स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के अध्ययन में एक प्रोफेसर के रूप में सक्रिय रहे हैं।

वैसे भी न केवल राज्यों के मरीजों बल्कि चिकित्सा जगत ने भी डॉ. विजय प्रकाश के आधुनिक बिग हॉस्पिटल के नए परिसर का इंतजार किया, जिसका हाल में उद्घाटन हुआ। यह दस मंजिला अस्पताल बिहार के चिकित्सा क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित होगा।







डॉ. वरुण कुमार

## गोली लगने से घायल मरीजों का मसीहा

बिहार की नेपाल सीमा पर स्थित सीतामढ़ी जिले में नंदीपत अस्पताल के संचालनकर्ता जनरल और लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉक्टर वरुण कुमार सीतामढ़ी और उसके आसपास के जिलों में ही नहीं, पड़ोसी देश नेपाल तक गोली लगने से घायल हुए लोगों के लिए उम्मीद की किरण बनकर उभरे हैं। 2009 में किराए के कमरे से छोटी-सी शुरुआत कर और कई साल तक संघर्ष का दौर देखने के बाद 2014 में नंदीपत अस्पताल के जरिये उन्होंने कामयाबी हासिल की। 2014 से पहले तक इस इलाके में गोली लगने से घायल हुए लोगों के इलाज की कोई सुविधा नहीं थी और उन्हें मुजफ्फरपुर या पटना का रुख करना पड़ता था मगर अब डॉक्टर कुमार ने इस कमी को पूरी कर दिया है। डॉक्टर कुमार अबतक गोली लगने से घायल हुए 100 से अधिक लोगों के शरीर से 105 गोलियां निकाल कर उन्हें जिंदगी का वरदान दे चुके हैं। 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र से एन डी ए ( जदयू ) द्वारा डॉ वरुण को प्रत्याशी बनाया गया लेकिन चिकित्सा ( सर्जरी ) के प्रति समर्पित डॉ.वरुण ने चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया





खास बात यह कि इस मामले में उनकी सफलता का प्रतिशत 100 है यानी उनके अस्पताल में आया ऐसा कोई भी मरीज अब तक मौत के मुंह में नहीं गया है। इस मामले में उनकी सफलता को देखते हुए ही उन्हें गोली डॉक्टर कहकर पुकारा जाने लगा है। सामाजिक कार्यों के मामले में भी डॉक्टर वरुण कुमार हमेशा आगे रहते हैं।

15 जनवरी, 1976 को जन्मे डॉक्टर कुमार ने एमबीबीएस की पढ़ाई किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ से की और एमएस की पढ़ाई कानपुर के जीएसबीएम मेडिकल कॉलेज से। पढ़ाई के बाद उन्होंने हल्द्वानी में नौकरी शुरू की। वहां सीनियर रेजिडेंट और सहायक प्रोफेसर के रूप में काम करने के दौरान उनका जीवन बहुत आराम से चल रहा था मगर खुद डॉक्टर वरुण और उनके पिता महेश प्रसाद लोगों को गोली लगने से होने वाली मौत की खबरों को देखकर बहुत

व्यथित रहा करते थे। महेश प्रसाद कहते हैं कि 2014 से पहले सीतामढ़ी में ऐसा कोई अस्पताल नहीं था जहां गोली लगने से घायल हुए लोगों का इलाज हो पाता। ऐसे में मरीजों को मुजफ्फरपुर के श्रीकृष्ण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल या फिर पटना के पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजना ही उपाय था। अक्सर ऐसे मरीजों की रास्ते में ही मौत हो जाती थी। तब उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वे अपने सर्जन होने का लाभ जिले को पहुंचाएं और ऐसे मरीजों की मदद करें। यह मुद्दा डॉक्टर वरुण को भी परेशान कर रहा था और इसलिए उन्होंने अपनी आरामदायक नौकरी छोड़ने और सीतामढ़ी में नए सिरे से संघर्ष करने का फैसला कर लिया। आखिरकार 2009 में उन्होंने सीतामढ़ी के डुमरा रोड इलाके में एक मकान किराए पर लेकर सिर्फ छह लोगों के साथ अपने अस्पताल की शुरुआत की और अगले चार साल यानी 2013 तक यहीं से काम करते रहे। इस दौरान उनकी पहचान एक काबिल

सर्जन के रूप में तो बनी मगर वे जो सपना लेकर आए थे, वह अभी तक पूरा नहीं हुआ था। आरंभ में उनके पास संसाधन भी नहीं थे कि वे आधुनिक उपकरणों से लैस बड़ा अस्पताल आरंभ कर पाते।

आखिरकार 2014 में सीतामढ़ी में वर्तमान स्थल स्थित पर नंदीपत मेमोरियल हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर अस्तित्व में आया। इसी दौरान नेपाल में मधेशी आंदोलन भड़क उठा। आंदोलन के दौरान एक दिन पुलिस तथा मधेशियों के बीच हुई झड़प में 17 लोग घायल हो गए जिसमें 14 लोगों को पुलिस की गोलियां लगी थीं। इन सभी 14 लोगों को नंदीपत अस्पताल लाया गया और डॉक्टर वरुण कुमार ने एक ही दिन में इन सभी लोगों का ऑपरेशन कर गोलियां निकाल कर उनकी जिंदगी बचाई! इसके बाद से उनका नाम पूरे इलाके में चमका और उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं

देखा। इस घटना के बाद से इलाके में गोलीबारी के शिकार हुए लोगों को इलाज के लिए नंदीपत अस्पताल लाया जाने लगा और डॉक्टर कुमार अबतक ऐसे 100 से अधिक लोगों का इलाज कर चुके हैं।

उन्होंने एक ऐसे मरीज की भी जान बचाई जिससे पूरे शरीर में 18 गोलियां लगी थीं। डॉक्टर कुमार के अनुसार उसकी एक किडनी और लिवर भी क्षतिग्रस्त हो गया था। पूरे शरीर, हाथ-पैर सभी जगह उसे गोलियां लगी थीं। दरअसल, इस व्यक्ति को अपराधियों ने गोलियों से भून दिया था। डॉक्टर कुमार ने सारी गोलियां निकालकर उसका ऑपरेशन किया और उसकी जान बचाई। एक गांव के मुखिया संजय कुमार को 4 गोलियां लगी थीं और उसे भी इन्होंने बचा लिया। उन्होंने इसके अलावा भी गंभीर रूप से घायल कई लोगों की जान बचाई। एक जनरल और लेप्रोस्कोपिक सर्जन होने के कारण डॉक्टर कुमार के पास सर्जरी के दूसरे मामले भी आते रहते हैं और उन्होंने अबतक अलग-अलग वजहों से जख्मी 235 से अधिक मरीजों का इलाज सफलतापूर्वक किया है। डॉक्टर कुमार को इस मिशन में अपनी पत्नी डॉक्टर श्वेता का पूरा सहयोग मिलता है। खुद एक प्रसूति, स्त्री एवं निःसंतानता रोग विशेषज्ञ डॉक्टर श्वेता नंदीपत अस्पताल का सारा प्रबंधन देखने के साथ-साथ डॉक्टर कुमार का घर भी कुशलता पूर्वक संभालती हैं।

डॉक्टर कुमार को उनकी उपलब्धियों के कारण सरकार तथा दूसरी संस्थाओं से कई सम्मान मिले हैं। स्थानीय जिलाधिकारी, जिले के प्रभारी मंत्री और सांसद ने उन्हें कई बार सम्मानित किया है। इसके अलावा नेपाल में भारतीय दूतावास ने नेपाल सरकार से सिफारिश की है कि डॉक्टर वरुण को सम्मानित किया जाए। साथ ही भारत सरकार को भी राज्य सरकार ने इसी आशय की सिफारिश भेजी है। जिले के आला अधिकारी मानते हैं कि डॉक्टर वरुण कुमार जो कार्य कर रहे हैं, वह बिलकुल अलग तरह की उपलब्धि है। प्रशासनिक अधिकारियों का मानना है कि गोली लगने से घायल हुए व्यक्ति की जान बचाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है और इस चुनौती को अभी तक डॉक्टर वरुण कुमार ने सफलतापूर्वक पूरा किया है। डॉ. कुमार को ग्लोबल हैल्थ स्टडीज न्यूयॉर्क ने बैस्ट सर्जन के अवार्ड से नवाजा है। डॉक्टर कुमार सामाजिक कार्यों में भी पूरी तरह समर्पित हैं। हर वर्ष छठ पर्व पर वे त्रितियों के बीच 200 साड़ी और पूजन सामग्री का वितरण करते हैं। उन्होंने पुरुष नसबंदी के 177 ऑपरेशन, हार्निया और हाइड्रोसिल के अनगिनत ऑपरेशन किए हैं। बाढ़ आने के दौरान वे राहत शिविर लगाकर बाढ़ पीड़ितों के बीच मदद सामग्री का वितरण करते हैं। इसके अलावा ब्लड डोनेशन, मरीजों का डायलिसिस करवाने जैसे कार्य भी डॉक्टर वरुण समय-समय पर करते रहते हैं।







विशाल आदित्य

## केमिस्ट्री ने दिलाई पहचान

बिहार के पश्चिम चम्पारण के बेतिया के पास रामपुरवा गाँव में जन्मे विशाल आदित्य का नाम आज बिहार में रसायन शास्त्र यानी केमिस्ट्री के प्रसिद्ध शिक्षकों में शुमार है! 1999 में महज़ पंद्रह सौ रुपए लेकर गाँव से पटना पहुंचे विशाल आदित्य ने सात सौ रुपए प्रतिमाह पर किराए का घर लिया और अपनी एम.एस.सी की पढ़ाई के साथ साथ कोटा से वापस लौट चुके छात्रों को घर घर जाकर पढ़ाना शुरू किया! खराब आर्थिक हालात के बीच विशाल ने ग्रुप में बच्चों को पढ़ाने का फैसला लिया और बाज़ार से कुछ ऋज लेकर 31 जुलाई 2009 को पटना के कंकड़बाग इलाके से सम्पूर्ण केमिस्ट्री नामक अपने निजी कोचिंग की शुरुआत की!







केवल 3 छात्रों के साथ शुरू हुई सम्पूर्ण कमेस्ट्री ने जल्द ही छात्रों का ध्यान अपनी ओर खींचा और कुछ ही वक़्त बाद विशाल आदित्य का नाम छात्रों की जुबान पर था! शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान को ध्यान में रखकर गायत्री परिवार की तरफ से 2015 में विशाल आदित्य को सम्मानित किया गया इसके अलावा साल 2016 में निर्धन छात्रों को शिक्षित करने एवं रसायन शास्त्र के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए भी इन्हें सम्मानित किया जा चुका है! परिवार के सदस्य बताते हैं की साल 2016 को पटना में आयोजित एक कार्यक्रम में बिहार विधान सभा के अध्यक्ष विजय चौधरी द्वारा कमेस्ट्री के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान लिए भी विशाल को सम्मानित किया जा चुका है।

शिक्षा जगत में आदित्य की लोकप्रियता को देखते हुए इंडिया टुडे के जनवरी 2018 के अंक में न केवल इनकी कहानी को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया बल्कि इसी साल दैनिक भास्कर द्वारा पटना में आयोजित शिक्षा सम्मान समारोह में केंद्रीय मंत्री रामकृपाल यादव के हाथों भी विशाल आदित्य को गुरु शिक्षा सम्मान से नवाजा गया है!

बातचीत के क्रम में विशाल बताते हैं की बचपन से ही मुझे फिल्में देखने के अलावा अभिनय का भी शौक रहा है और एक बार तो भोजपुरी सिनेमा के ऑडिशन में मेरा चयन भी हुआ था। गाँव और परिवार के लोग मेरे फिल्मों में काम करने के खिलाफ थे क्योंकि उस क्षेत्र में मेरा जाना किसी को पसंद न था। शिक्षक के रूप में छात्रों को पढ़ाते आज पुरे एक दशक हो चुके हैं और इस लम्बी अवधि में मुझे सिनेमा देखने का कभी वक़्त ही नहीं मिला। छात्रों के सामने क्लास में वक़्त पर उपस्थित रहना यह गुरु और शिष्य के बीच एक कमिटमेंट है, मुझे आज भी वो दिन याद है जब मेरी बेटी का अस्पताल में जन्म हुआ था, मैं पूरी रात सोया भी न था बाबजूद इसके अगले दिन मैं वक़्त पर अपने छात्रों के सामने था! मैं अपने छात्रों से हमेशा कहता हूँ सफलता का कोई शार्ट कट नहीं होता, इसके लिए ईमानदारी के साथ कठिन परिश्रम बेहद जरूरी है।

विशाल आदित्य के कई पूर्ववर्ती छात्र कहते हैं की मेडिकल की परीक्षाओं की तैयारियों में विशाल सर की कोई जवाब नहीं! मेडिकल की परीक्षाओं में पूछे जाने वालों

45 सवालों में इनके पढ़ाए करीब 40 से 42 सवाल आ ही जाते हैं साथ ही मेन्स की परीक्षा में आए 30 सवालों में करीब 25 से 26 का अनुमान पूर्व में ही विशाल लगा लेते हैं लिहाजा इनके छात्रों के परिणाम भी काफी बेहतर होते हैं।

देश की शिक्षा जगत में ऐसी धारणा है एक ही शिक्षक कमेस्ट्री के सभी डिसिप्लिन यानी फिजिकल, ऑर्गेनिक और इनॉर्गेनिक को अच्छी तरह नहीं पढ़ा सकता जबकि फिजिक्स और गणित के सभी डिसिप्लिन सभी शिक्षक पढ़ा सकते हैं! वर्षों से चली आ रही इस धारणा को बदला है पटना के कंकड़बाग इलाके में सम्पूर्ण कमिस्ट्री के नाम से कमिस्ट्री की क्लास्सेस का संचालन करने वाले प्राख्यात शिक्षक विशाल आदित्य ने! वी आदित्य के नाम से प्रसिद्ध बिहार के इस सपूत ने अपने गुरु बी.के. प्रियदर्शी के मार्गदर्शन में साल 2009 में महज सात सौ रुपए में किराए का एक घर लिया और केवल 3 बच्चों के साथ कमिस्ट्री क्लासेज की शुरुआत की और महज 9 सालों में ही विशाल आदित्य छात्र-छात्राओं के चहेते बन गए।

साल 1981 में पश्चिम चम्पारण के बेतिया के निकट रामपुरवा गाँव में जन्मे विशाल आदित्य का नाम आज बिहार में रसायन शास्त्र यानी कमेस्ट्री के विद्वानों में लिया जाता है! विशाल के पिता लाल बाबू प्रसाद सिंह का नाम पश्चिम चम्पारण के प्रसिद्ध शिक्षकों में शुमार था और लम्बी सरकारी सेवा देने के उपरान्त इनके पिता बतौर प्रधाध्यापक रहते बेतिया के राजकीय मध्य विधालय, कोहड़ा से सेवानुवित हो गए! शिक्षा इस परिवार की बुनियाद थी ऐसे में पिता लाल बाबू प्रसाद सिंह ने अपने दोनों पुत्रों विशाल और सत्यम आदित्य को उच्च शिक्षा देने की ठानी और पुत्रों का नामांकन पश्चिम चम्पारण स्थित बुनियादी विधालय वृन्दावन में करवाया और इसी विधालय से विशाल ने छठी तक की शिक्षा हासिल की! आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए विशाल ने राज इंटर कॉलेज से हाई स्कूल की पढ़ाई की और साल 1997 में प्रथम श्रेणी से मैट्रिक की परीक्षा पास की।

साल 1999 में विशाल आदित्य ने बेतिया के एम.जे. के कॉलेज यानी महारानी जानकी कुँवर महाविधालय से प्रथम श्रेणी में आई.एस.सी की परीक्षा पास की और फिर इसी कॉलेज से साल 2006 में विशाल ने कमेस्ट्री ऑनर्स के साथ बी.एस.सी की डिग्री भी हासिल की और फिर आगे की पढ़ाई के लिए पटना आ गए! इसी साल पटना में विशाल आदित्य एक सड़क हादसे में गंभीर रूप से ज़ख्मी हुए और लम्बे वक़्त तक पटना के एक निजी अस्पताल में इनका इलाज चलता रहा।

विशाल आदित्य की माँ हेमावती सिंह की इच्छा थी



की उनका पुत्र डॉक्टर बन मरीजों की सेवा करे ऐसे में आदित्य ने सी.बी.एस.सी मेडिकल की तैयारी प्रारम्भ की और पी.टी में पास भी हुए लेकिन मैन्स में संतोषजनक रैंक नहीं मिलने के कारण इन्होंने रास्ता बदला और रूचि के अनुरूप शिक्षक बनने का फैसला लिया।

अपने विषय कमेस्ट्री में अच्छी जानकारी और गहरी रूचि के बीच साल 2010 में विशाल आदित्य ने पटना के ए.एन.कॉलेज से प्रथम श्रेणी में एम.एस.सी की डिग्री हासिल की और इस पूरी अवधि में जीविकोपार्जन के लिए ये घर घर जाकर कोटा रितर्न छात्रों को पढ़ाते रहे! आर्थिक तंगी से गुज़र रहे विशाल को इस दौरान कुरुक्षेत्र स्थित विवेकानंद स्टडी सेंटर से छात्रों को मेडिकल एवं इंजीनीयरिंग पढ़ाने

का ऑफर आया जिसे विशाल ने स्वीकार कर लिया लेकिन कुछ ही महीने बाद परिवार के सदस्यों और मित्रों के अनुरोध पर विशाल आदित्य वापस पटना आ गए और साल 2009 में अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए सम्पूर्ण कमिस्ट्री के नाम से एक निजी कोचिंग की शुरुआत की और फिर आगे आने वाले चंद ही सालों में इनकी ख्याति तेजी से बढ़ने लगी। जानकार बताते हैं की आज विशाल के पढ़ाये सैकड़ों छात्र -छात्राएं न केवल राज्य के प्रमुख मेडिकल कॉलेजों से एम.बी.बी.एस की पढ़ाई कर रहे हैं बल्कि इनके पढ़ाये कई इंजीनियर आज देश की कई प्रमुख कंपनियों में वरिष्ठ पदों पर कार्यरत भी हैं।

बीटेक करने के उपरान्त दिल्ली में रहकर सिविल

सर्विसेस की तैयारी कर रहे विशाल के छोटे भाई सत्यम आदित्य कहते हैं की उनके भैया न केवल विलक्षण प्रतिभा के धनि हैं बल्कि आरम्भ से ही सामाजिक असमानता, बाल विवाह और दहेज प्रथा के कट्टर विरोधी भी रहे हैं! समाज में फैली इन बुराईयों के दुष्परिणामों से अपने छात्रों को न केवल ये रु-ब-रु करवाते हैं बल्कि खुद भी दहेज मुक्त विवाह कर समाज को एक अच्छा सन्देश दिया है। कमिस्ट्री के जाने माने शिक्षक विशाल आदित्य की पत्नी मेधा सिंह कहती हैं की राज्य और देश के विकास में शिक्षकों की अहम् भूमिका है, मैं चाहती हूँ की हमारे इन सुझावों को हमारी सरकारें गंभीरता से ले ताकि योग्य और अनुभवी शिक्षकों को सम्मान मिले साथ ही गुरु शिष्य परम्परा की जड़ें और गहरी हो।





श्रीमती श्यामली नारायण

## ज़िद और जुनून से मिली शोहरत

ज़िद, संघर्ष और जुनून का दुसरा नाम श्यामली नारायण है। रसोई की दुनिया में अपनी अलग पहचान रखने वाली इस महिला ने महज़ दो साल में ही अपने यू-ट्यूब चैनल के जरिए करोड़ों लोगों के दिलों पर राज़ किया और आज श्यामली किचन के नाम से संचालित उनके चैनल के न केवल 8 लाख से अधिक सब्सक्राइबर हैं बल्कि 11 करोड़ के आसपास व्यूज भी हैं

उनके बेहतर काम और चैनल की तेज़ी से बढ़ती लोकप्रियता को देखकर यू-ट्यूब द्वारा अभी हाल ही में उन्हें सिल्वर प्ले बटन देकर सम्मानित भी किया गया। भारतीय जनता पार्टी से तीन बार लोकसभा के सांसद रहे श्यामली के पिता स्व.इश्वर चौधरी की 15 मई, 1991 को बिहार के गया में हत्या कर दी गई, उस वक़्त श्यामली महज 9 साल की थीं। कमज़ोर आर्थिक हालत के बीच श्यामली की माँ नागेश्वरी देवी ने अपने सभी बच्चों को अच्छी तालीम दिलाई और बाद के सालों में श्यामली ने घर-घर जाकर ट्यूशन पढ़ाना आरम्भ किया।

गया जिले के गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका रह चुकी श्यामली का विवाह 2009 में भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारी श्रीनिवास नारायण के साथ संपन्न हुआ और सरकारी नौकरी का त्याग कर श्यामली पटना आ गयी। होम मेकर रहते हुए श्यामली में कुछ बड़ा करने की चाहत थी, ऐसे में बड़ी बहन सुशीला ने श्यामली को रास्ता दिखाया और उन्होंने मास्टरशेफ बनने का फैसला लिया। ए बी सी कुकिंग क्लास का सफलता पूर्वक संचालन कर चुकी श्यामली ने बिग मैजिक चैनल द्वारा आयोजित कुकिंग शो रसोई की रानी में प्रतिभागी के तौर पर शिरकत की और विनर भी रही। उपरोक्त चैनल ने सभी विजेताओं को फाइनल राउंड के लिए पुनः मुंबई आमंत्रित किया जहाँ प्रसिद्ध मास्टर शेफ रिपु दमन हॉंडा, श्यामली द्वारा तैयार लजीज़ व्यंजनों के कायल हुए और श्यामली एक बार फिर इस शो की विनर बनी।

दिल्ली में जन्मी श्यामली की प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली के गोल मार्केट स्थित केन्द्रीय विद्यालय में हुई लेकिन मई 1991 में क्षेत्र भ्रमण के दौरान उनके पिता की हत्या के बाद पूरा परिवार वापस मानपुर लौट आया और इसके साथ ही शुरू हुआ संघर्ष और तकलीफों का सिलसिला। 1995 में गया के एक निजी विद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास करने के उपरान्त श्यामली का दाखिला इसी शहर के प्रसिद्ध महिला कॉलेज में हुआ और इसी महाविद्यालय से आई एस सी करने के उपरान्त 2005 में श्यामली ने इतिहास में ऑनर्स किया।

परिवार की खराब माली हालत को देखते हुए श्यामली ने लम्बे वक़्त तक निजी ट्यूशन का सहारा लिया और आखिरकार उन्हें गया के गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल में बतौर शिक्षिका पढ़ाने का अवसर मिला। साल 2009 में श्यामली का विवाह भारतीय स्टेट बैंक के वरिष्ठ अधिकारी श्रीनिवास नारायण के साथ संपन्न हुआ और श्यामली सरकारी नौकरी का त्याग कर पटना आ गयी। श्यामली के पति श्रीनिवास कहते हैं कि होममेकर के तौर पर श्यामली ने इस परिवार के लिए जो कुछ भी किया, उसे शब्दों में बयां नहीं किया





जा सकता। हमारे दो पुत्रों प्रभात रंजन और राहुल रंजन के अलावा हमारी लाइली मानशी प्रिया की हर छोटी से छोटी खुशियों का ख्याल किया है श्यामली ने।

सालों से हम सभी ये महसूस कर रहे थे कि श्यामली अपने अंदर की प्रतिभा को दुनिया के सामने लाने को बेचैन हैं ऐसे में हम सभी ने उसे सहयोग करने का फैसला लिया। श्रीनिवास आगे कहते हैं कि श्यामली ने कैमरे के सामने घंटों खड़े होकर कुकिंग से सम्बंधित कई एपिसोड तैयार किये। लम्बे समय तक उन्हें सफलता हाथ नहीं लगी लेकिन हमने कभी उन्हें निराश होते नहीं देखा। शायद उन्हें खुद पर पूरा एतबार था और यही वजह है कि उनकी ज़िद के आगे वक्त ने भी घुटने टेक दिए। मुझे अपनी पत्नी पर

नाज़ है और मैं गर्व से कहता हूँ कि मैं श्यामली का पति हूँ।

श्यामली किचन को लेकर दिए गए एक सवाल का जवाब देते हुए श्यामली कहती है कि मैं इसका सारा श्रेय अपनी बड़ी बहन सुशीला नारायण, अपने पति श्री निवास नारायण और अपने परिवार के सदस्यों को देना चाहूंगी जिनके मार्गदर्शन ने मुझे इस मुकाम तक पहुँचाया। श्यामली की बहन सुशीला नारायण जानती थी कि श्यामली की स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करने में गहरी रूचि है ऐसे में सुशीला ने उनदिनों स्टार प्लस पर प्रसारित हो रहे धारावाहिक मास्टर शेफ की ओर श्यामली का ध्यान खींचा। वे चाहती थीं कि श्यामली टेलीविज़न पर दिखे। ऐसे में श्यामली ने भी जागती आँखों से सपना देखना शुरू कर दिया और देखते ही देखते

दोनों बहनों का यह सपना हकीकत में तब्दील होने लगा।

सुशीला कहती हैं कि श्यामली के भीतर ज़िद और जुनून तो हमने बचपन से ही देखा था लेकिन बदलते वक़्त के साथ वो कही दब सा गया था जिससे बाहर निकलना शायद श्यामली के लिए भी आसान न था। शुरुआती दिनों में श्यामली तीन रेसिपी प्रतिदिन याद किया करती और उसे अलग तरीके से बनाने का प्रयास भी करती। कुछ ही समय बाद श्यामली ने ए बी सी कुकिंग क्लास के नाम से स्वयं का एक प्रशिक्षण संस्थान शुरू किया और इन सभी के पीछे श्यामली की एक ही तम्मन्ना थी। स्टार प्लस पर प्रसारित हो रहे धारावाहिक मास्टर शेफ में शामिल होकर संजीव कपूर तक पहुँच बनाना और कुछ बेहतर और अलग करना।

2016 में बिग मैजिक चैनल पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम रसोई की रानी में जब श्यामली विनर बनी तब चैनल द्वारा उन्हें मुंबई आने का निमंत्रण मिला। मुंबई में चैनल द्वारा आयोजित भव्य शो में भारत के जाने-माने शेफ रिपु दमन हांडा ने श्यामली के काम को सराहा और श्यामली इस शो में एक बार फिर विनर रहीं। श्यामली कहती हैं कि इस शो में मिली सफलता के बाद मुझे कुकिंग शो से संबंधित काम के कई बड़े ऑफर मिले लेकिन परिवार को छोड़ मुंबई में काम करना मेरे लिए आसान न था, ऐसे में मुझे वापस पटना लौटना पड़ा।

जानकार बताते हैं कि बिहार जैसे राज्य में कुकिंग व्यवसाय को प्रमोट करने के लिए न तो किसी प्रकार की सरकारी योजना है और न ही इसके प्रमोशन से संबंधित इवेंट की व्यवस्था। ऐसे में यह व्यवसाय आज प्रदेश में हाशिए पर पड़ा है। बाहर के प्रदेशों में इस विषय की पढ़ाई और प्रशिक्षण की अच्छी व्यवस्था है और इसके दम पर लोग अच्छी नौकरी भी हासिल कर लेते हैं, लेकिन बिहार की इस बेटी ने आज जिस प्रकार कुकिंग क्लास और इससे संबंधित प्रशिक्षण लिए बगैर शेफ कोट और सेलिब्रिटी शेफ तक का जो सफर तय किया है वो काबिले-तारीफ़ है।

श्यामली बताती हैं कि पति और बच्चों के अलावा मैं खुद की ज़िन्दगी भी जीना चाहती थी, ऐसे में बगैर डिग्री के शेफ बनना काफी मुश्किल था। अपनी छिपी पहचान को दुनिया के सामने लाने की मेरी ज़िद मुझपर इस कदर हावी रही कि सबकुछ कैसे बदलता चला गया यह पता ही नहीं चला! श्यामली कहती हैं कि अगस्त 2017 में जब मैंने श्यामली किचन के नाम से अपने यू-ट्यूब चैनल की शुरुआत की थी उस वक़्त 100 विडियो अपलोड किये जाने तक हमारा न तो कोई व्यू था और न ही सब्सक्राइबर। पड़ोसियों से मिलने वाले तानों के



बीच यदि मेरे पास कुछ था सिर्फ परिवार का साथ और सफल होने की ज़िद और इन्हीं रास्तों पर चलते हुए आज हमारे चैनल के 8 लाख से अधिक सब्सक्राइबर और 10 करोड़ से अधिक व्यू हैं। साल 2018 में श्यामली नारायण ने इजी होम रेसिपी चैनल के नाम से एक अन्य चैनल की भी शुरुआत की है जिसके दर्शकों की संख्या में

तेजी से इज़ाफ़ा हो रहा है।

बहरहाल, छोलनी और कड़ाई को अपना हथियार बना चुकी श्यामली नारायण कहती हैं कि महिलाओं के अंदर एक छिपी हुई शक्ति होती है और यदि कोई गृहिणी कुछ करने की ठान ले तो कुछ भी नामुमकिन नहीं। मैं अपने

करोड़ों दर्शकों से यही कहना चाहूंगी कि जीत का असली मज़ा तब है जब लोग आपके हारने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हों। जो इंसान लाचार होते हुवे भी मन से नहीं हारता, उसे दुनिया की कोई ताकत हरा नहीं सकती। मैं रहूँ या न रहूँ लेकिन अपने काम, अपनी शकल और आवाज़ के रूप में मैं सदैव अपने दर्शकों के सामने रहूंगी।





डॉ. श्रवण कुमार

## बिहार में 'नियोनेटाल केयर के जनक'

डॉक्टर श्रवण को नवजात बच्चों से संबंधित समस्याओं में आधुनिक देखभाल प्रणाली ( नियोनेटाल केयर ) को बिहार में सबसे पहले लाने का श्रेय जाता है और इसलिए उन्हें राज्य में नियोनेटाल केयर का जनक माना जाता है। अपने संघर्ष भरे बचपन, पिता की बीमारी, खेती का भार आदि संभालते हुए उन्होंने डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी की और आज उनका नाम बिहार के चिकित्सा जगत में आदर से लिया जाता है। उन्होंने पटना में एक इनक्यूबेटर की सहायता से राज्य के पहले नियोनेटाल आईसीयू 'न्यू बॉर्न केयर सेंटर' की स्थापना की थी और आज यह सेंटर अत्याधुनिक उपकरणों से लैस है जहां डॉक्टर श्रवण कुमार ने 800 ग्राम तक के बच्चे की जान बचाई है। नृत्य एवं नाटक के शौकीन डॉक्टर श्रवण अपनी पत्नी नीना मोटानी के साथ मिलकर रंगमंच पर अभिनय भी करते हैं और इसके जरिये लोगों में स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने का काम करते हैं

बिहार के पश्चिम चंपारण के बेतिया में एक किसान परिवार में 1954 की 7 जनवरी को जन्मे श्रवण कुमार आरंभ से ही मेधावी छात्र थे और उनका लक्ष्य भी स्पष्ट था। उन्हें डॉक्टर ही बनना था, हालांकि पढ़ाई के दौरान ही उनके किसान पिता को गंभीर हार्ट अटैक से जूझना पड़ा और इससे श्रवण कुमार की योजनाओं को तगड़ा झटका लगा। उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ घर की ज़िम्मेदारियां भी उठानी पड़ीं। पिता की बीमारी के कारण उन्हें खेती संभालनी पड़ी। उनके खेत उनके घर से 10 किलोमीटर दूर थे। डॉक्टर बनना उनका सपना था मगर परिस्थितियों ने उन्हें ऐसा घर रखा था कि वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पा रहे थे। इसके बावजूद उन्होंने दिन-रात मेहनत की और अंततः उनका चयन एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए दरभंगा मेडिकल कॉलेज में हो गया। घर की स्थिति को देखते हुए उनके पिता शुरुआत में उन्हें डॉक्टरी की पढ़ाई करने देने के पक्ष में नहीं थे मगर

परिवार के दूसरे सदस्यों के समझाने पर वे मान गए और इस तरह श्रवण कुमार ने एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उनका चयन कोलकाता के प्रसिद्ध रामकृष्ण सेवा प्रतिष्ठान में हो गया, उन्होंने यहां से सफलता पूर्वक डी.सी. एस. पूरा किया। यहां अपने प्रशिक्षण के दौरान वे ये देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि नवजात बच्चों की देखभाल के लिए वहां कितना बेहतर प्रबंधन किया जाता है और समयपूर्व पैदा होने वाले कई बच्चों की जान यहां बहुत ही आसानी से बचा ली जाती है पर बिहार में ऐसी कोई सुविधा नहीं थी।

यह देखने के बाद उन्होंने नवजात बच्चों की देखभाल से संबंधित अपने शिक्षण-प्रशिक्षण को और भी गंभीरता से पूरा करना शुरू कर दिया, हालांकि कोलकाता से लौटने के बाद भी उन्हें पूरी संतुष्टि नहीं मिल पा रही थी इसलिए उन्होंने पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल से शिशु रोग में एमडी की



पढ़ाई की मगर उन्हें यह देखकर निराशा हुई कि पीएमसीएच में भी नवजात बच्चों की देखभाल की उचित व्यवस्था नहीं थी। ऐसे में डॉक्टर श्रवण दिल्ली के लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज पहुंचे और वहां उन्होंने नवजात बच्चों की देखभाल के अपने अनुभव को और भी समृद्ध किया। यहां उन्होंने नवजात बच्चों में पीलिया से संबंधित गंभीर स्थिति में ब्लड ट्रांसफ्यूजन के जरिये बच्चे की जान बचाने की तकनीक सीखी। बिहार में इस तकनीक का इस्तेमाल कोई नहीं करता था। उन्होंने सोच लिया कि वे पटना में बिहार का पहला नियोनेटाल आईसीयू स्थापित करेंगे।

घर लौटने के बाद डॉक्टर श्रवण ने अपने पिता को बताया कि वे पटना में नियोनेटॉलॉजी की शुरुआत करने जा रहे हैं तो उनके पिता ने पूछा कि आखिर ये होता क्या है। डॉक्टर श्रवण कुमार ने उन्हें बताया कि यह चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा होती है जिसमें सिर्फ एक महीने से कम उम्र के बच्चों का इलाज किया जाता है। उनके पिता ने पूछा कि तुम शिशुरोग विशेषज्ञ हो जिसमें 12 वर्ष तक के बच्चों का इलाज किया जाता है। अब तुम कह रहे हो कि तुम सिर्फ एक महीने तक के बच्चों का इलाज करोगे, अगर तुम बाकी 11 साल 11 महीने के बच्चों को छोड़ दोगे तो ऐसे में तुम्हारा घर कैसे चलेगा? तब डॉक्टर श्रवण कुमार ने बताया कि बिहार में अभी तक गंभीर स्थिति वाले नवजात बच्चों की

जान बचाने के लिए नियोनेटाल आईसीयू नहीं है। ऐसे में यहां इस क्षेत्र में विकास करने के लिए बहुत अच्छा अवसर है। इसके बाद डॉक्टर श्रवण ने पटना में एक कमरा किराए पर लेकर और सिर्फ एक इनक्यूबेटर की सहायता से बिहार के पहले नियोनेटाल आईसीयू की स्थापना की जिसका नाम उन्होंने 'न्यू बॉन केयर सेंटर' रखा तब पटना के डॉक्टरों को उम्मीद नहीं थी कि इस सेंटर में नवजात बच्चों की जिंदगी बचाई जा सकेगी मगर लगातार सफलताएं हासिल कर वे नियोनेटॉलॉजी के क्षेत्र में शिखर पर पहुंच गए। उनकी पत्नी नीना मोटानी ने हर कदम पर उनका साथ दिया।

वैसे आरंभ में डॉक्टर श्रवण को कई परेशानियों का सामना करना पड़ा, चूंकि यह पटना में अपनी तरह का पहला केंद्र था इसलिए इसके लिए जरूरी प्रशिक्षित स्टाफ वहां उपलब्ध नहीं था। डॉक्टर श्रवण को तब खुद बच्चों की साफ-सफाई, उनके मल-मूत्र आदि को साफ करना पड़ता था पर इसके साथ ही उन्होंने उपलब्ध मेडिकल स्टाफ को अपनी जरूरत के हिसाब से प्रशिक्षण देना जारी रखा। उनकी मेहनत रंग लाई और वे खुद भी तब आश्चर्यचकित रह गए जब उनके केंद्र पर समय पूर्व पैदा हुए 800 ग्राम वजन तक के बच्चों को बचाया गया। ऐसा ही एक बच्चा उनके सहयोगी डॉक्टर पीपी गुप्ता का बेटा भी था जिसकी जान तब इस केंद्र में बची थी। यह बच्चा आज पूरी तरह स्वस्थ जीवन

जी रहा है और इंजीनियरिंग करने के बाद बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहा है। यह वो दौर था जब एक किलो से कम वजन के बच्चों का बचना असंभव माना जाता था।

उन्होंने आने वाले समय में शिशु रोग विशेषज्ञों के बीच नवजात शिशु की देखभाल के सिद्धांत को फैलाया और चूंकि उन्होंने बिहार में सबसे पहले यह काम आरंभ किया था इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित नियोनेटॉलॉजी फोरम में उन्हें बिहार में नियोनेटॉलॉजी का पिता कहकर उनके काम की सराहना की गई। इसके अलावा उन्हें नियोनेटॉलॉजी के क्षेत्र में फेलोशिप भी प्रदान की गई, वैसे किसी भी इलाके में नियोनेटाल आईसीयू का खर्च बेहद अधिक होता है, ऐसे में इस खर्च को कम करने और इसे घर आधारित बनाने के लिए डॉक्टर श्रवण ने बिहार में सबसे पहले 'कंगारू मदर केयर' की शुरुआत की, इसके तहत मांओं को अपने समयपूर्व जन्मे नवजात बच्चों को अपने स्तनों के बीच रखना और वहीं से दूध पिलाना सिखाया जाता है ताकि बच्चे को मां की त्वचा से गर्मी और उचित देखभाल मिल सके। इस केएमसी केयर को अब आईसीयू केयर से भी बेहतर माना जाता है। देश के सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े राज्यों में इस तकनीक को नियोनेटॉलॉजी के क्षेत्र में एक क्रांति माना जाता है। डॉक्टर श्रवण कुमार ने माताओं और डॉक्टरों को प्रशिक्षित करने के लिए कंगारू मदर केयर से संबंधित वीडियो तैयार किए हैं और इन्हें सोशल साइट यू-ट्यूब पर उपलब्ध कराया गया है, इन वीडियो को एनबीसीसी पटना के जरिये संचर किया जा सकता है, यहां बीमार और स्वस्थ बच्चों की देखभाल से संबंधित 20 वीडियो अपलोडेड हैं।

डॉक्टर श्रवण समाज सेवा में भी बहुत सक्रिय रहते हैं। नई पहल की खूंटी के तहत वे अपने परिवार और मित्रों के साथ मिलकर गरीबों में कपड़े बांटते हैं, और रोटरी तथा अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय योगदान देते हैं। रोटरी में ऐसी ही एक परियोजना है गिफ्ट ऑफ लाइफ जिसके तहत हर साल ऐसे 100 बच्चों का निःशुल्क ऑपरेशन किया जाता है जिनके दिल में छेद होता है। इसके अलावा डॉक्टर श्रवण कुमार मां वैष्णो देवी सेवा समिति (एनजीओ) के साथ मिलकर 51 जरूरतमंद युगलों का विवाह भी करवाते हैं। डॉक्टर श्रवण नृत्य एवं नाटक में भी दक्ष हैं, अपनी पत्नी श्रीमती नीना मोटानी के साथ मिलकर वे पिछले कुछ वर्षों से बड़े रंगमंचों पर प्रस्तुतियां दे रहे हैं। यू-ट्यूब चैनल पर उनके हजारों प्रशंसक हैं, मंच पर उनकी प्रस्तुतियों में सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि कैंसर और ऑटिज्म जैसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं पर जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रम भी होते हैं। डॉक्टर श्रवण हमेशा कहते हैं: तुम अपना काम बेहतरीन तरीके से करो और बाकी सबकुछ ईश्वर पर छोड़ दो।





संजय चौधरी

## पानी को बनाया मनोरंजन का हथियार

तक्षशिला सीज एंड रिसोर्ट प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन और पटना के संपतचक स्थित फैंटेसिया वाटर पार्क की शुरुआत करने वाले संजय चौधरी का पूरा जीवन संघर्षमय रहा है। बिहार में डुमरांव के निकट एकरासी गाँव के मूल निवासी संजय का जन्म उनकी ननिहाल समस्तीपुर में हुआ। संजय के पिता महेंद्र चौधरी पतरातू थर्मल प्लांट में फोरमैन के तौर पर कार्यरत रहे, ऐसे में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा समस्तीपुर स्थित केंद्रीय विद्यालय में हुई और उन्होंने यहीं से मैट्रिक और फिर बारहवीं तक की पढ़ाई की। 90 के दशक में संजय चौधरी ने कलकत्ता स्थित डी एमईटी यानी डायरेक्टर ऑफ़ मेरीन इंजीनियरिंग में अपना नामांकन करवाया और 1995 में बी टेक की डिग्री हासिल कर मेरीन इंजीनियर बने। इसी साल इंग्लैंड के ग्लासगो स्थित प्रसिद्ध शिपिंग कंपनी एक्कोमेरिट से संजय को नौकरी का ऑफर मिला और वे 6 माह के कॉन्ट्रैक्ट के साथ इस कंपनी के मालवाहक जहाज़ एम वी पोनी पर सवार हो गए

संजय कुमार चौधरी, बिहार के उभरते युवा व्यवसायी हैं। उन्होंने अपनी बी-टेक (मरीन इंजीनियर) की डिग्री डी. मेट कोलकता से प्राप्त की। बिल्कुल साधारण परिवार से संबंध रखने वाले चौधरी, प्रारंभ से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। इनकी माता रेश्मा देवी एक सामान्य गृहणी हैं, जबकि पिता पतरातू थर्मल पावर स्टेशन से रिटायर फोरमैन हैं। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अपने मामा श्री महेन्द्र चौधरी, जो समस्तीपुर रेलवे स्टेशन के एसएसएम थे वहाँ रह कर पुरी की।

स्वावलंबन इनके जीवन का मूल मंत्र रहा है। डीमेट में पढ़ाई करते हुए उन्होंने पढ़ाई का खर्च अपने उपाजन से पूरा किया। बी टेक डिग्री प्राप्त करने के पश्चात वे अलग अलग शिपिंग कंपनियों में उन्होंने अपनी सेवा दी और चीफ

इंजीनियर की उँचाई तक पहुँचे, पर नौकरी करना उन्हें पसंद नहीं था, वे दूसरों को नौकरी देना पसंद करते थे। मानसिक स्तर पर व्यवसाय को अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया। यहीं से उनके संघर्ष की कहानी शुरू होती है। 2008 में प्रोफेशनल शिपिंग मैनेजमेंट के रूप में उन्होंने एक कंपनी की शुरूवात की। यह कंपनी सेवा-प्रदायी कंपनी थी। इस क्रम में इस कंपनी ने पॉयलट बोट की सेवा प्रदान करने हेतु स्वयं बोट निर्मित की। श्री चौधरी ने अपने इनोवेशन के द्वारा बोट निर्माण की लागत बहुत कम कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इस कंपनी के प्रारंभ करने से संचालित करने तक उन्हें आर्थिक संसाधनों की कमी से झुझना पड़ा, पर उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा। संघर्ष एक जीवन दृष्टि देती है, साथ ही मानवीय तथा सामाजिक मूल्यों को परखने







का एक अन्तर्दृष्टि भी देती है। श्री चौधरी ने इस संघर्ष से जो जीवन दृक्षत होता है। व्यवसाय इनके लिए लाभ का फलसफा नहीं है बल्कि इनके लिए आर्थिक निर्माण का साधन है। इसी का परिणाम है 'फंटेशिया वाटर पार्क' जो बिहार एवं झारखण्ड जैसे पिछड़े हैं। फंटेशिया वाटर पार्क 'बिहार तथा समीपवर्ती राज्य के लोगों के लिये मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन तो है ही, साथ ही साथ यह कई महिलाओं तथा बालिकाओं को विशेष छूट इसके अन्य आयाम हैं। रोजगार सृजन में इस पार्क के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। चौधरी अपनी व्यावसायिक गतिविधि को झारखण्ड में भी जीवंत करने के लिए प्रयासरत है।

पटना के ललित नारायण मिथिला इंस्टीट्यूट से एमबीए और मानव संसाधन में पीएचडी कर चुकी संजय चौधरी की पत्नी नूतन कुमारी और उनकी दो बेटियाँ वियंका एवं वाणी उनके इस संघर्ष में हमेशा साथ रही विशाल वाटर पार्क का प्रबंधन एवं सुरक्षा को देखकर इतना तो कहा ही जा सकता है कि वह सफल प्रबंधक तथा इस इलाके के लिए जिम्मेवार अभिभावक की भूमिका सशक्त रूप से निभा रहे हैं। निश्चय ही श्री चौधरी बिहार के मिट्टी के लाल हैं और बिहारी होने पर उन्हें गर्व है।





डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह

## गरीब मरीजों का मसीहा

बिहार के नालंदा में जन्मे और पले-बढ़े डॉक्टर सहजानंद प्रसाद सिंह ने नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल से एमबीबीएस और उत्तर प्रदेश के मेरठ स्थित लाला लाजपत राय मेडिकल कॉलेज से एमएस ( जनरल सर्जरी ) किया। साधारण किसान परिवार से आने वाले डॉ. सिंह अपने छात्र जीवन में साइकिल से स्कूल और कॉलेज आया जाया करते थे। कई साल तक पटना के फुलवारी शरीफ के ईएसआई अस्पताल में मेडिकल ऑफिसर और सुपरिंटेंडेंट के रूप में उन्होंने गरीब और दिहाड़ी मजदूरों के लिए बहुत काम किया। बाद में बिहार लोक सेवा आयोग की अनुशंसा पर उन्हें पटना मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में लेक्चरर के रूप में नियुक्त किया गया जहां उन्होंने कई वर्ष तक अपनी सेवाएं दीं। हाल ही में डॉ. सिंह को चिकित्सा जगत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित डॉ. बी.सी राय राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया गया है

वर्तमान में डॉक्टर सिंह नालंदा के पावापुरी स्थित वर्धमान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में जनरल सर्जरी विभाग के प्रमुख और एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। यह अस्पताल मेडिकल शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र है और बिहार सरकार की ओर से भगवान महावीर, पावापुरी और नालंदा को समर्पित है। डॉक्टर सिंह बिहार के सबसे लोकप्रिय शिक्षक और काबिल सर्जन के रूप में जाने जाते हैं।

डॉक्टर सिंह को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए), बिहार और नेशनल आईएमए में उनके कामों की वजह से एक अलग पहचान मिली जहां उन्हें डॉक्टर के

रूप में किसी और ने नहीं बल्कि दिवंगत डॉक्टर ए.के.एन. सिन्हा ने सभी चिकित्सकों से डॉ. सिंह का परिचय कराया था। डॉक्टर सिन्हा खुद मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष और वर्ल्ड मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे थे। डॉक्टर सिंह को ऐसा ही स्नेह डॉक्टर एन. अप्पा राव और डॉक्टर केतन देसाई जैसे लीडर्स से भी हासिल हुआ।

आईएमए में डॉ. सिंह कई पदों पर रहे। अब वे आईएमए बिहार के पूर्व अध्यक्ष हैं, नेशनल आईएमए के मुख्य चुनाव आयुक्त, नेशनल आईएमए की सेंट्रल वर्किंग कमेटी और सेंट्रल काउंसिल के सदस्य हैं। डॉ. सिंह पटना में आयोजित



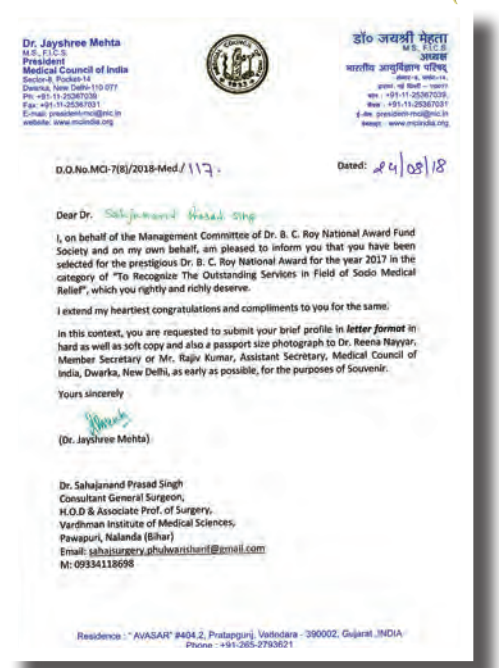


आईएमएकॉन-2006 के बेहद सफल आयोजन के ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी थे। इसी प्रकार 1988 में आईएमए की गोल्डन जुबली कॉन्फ्रेंस में डॉ. सिंह ज्वान्ट ऑर्गनाइजिंग सेक्रेटरी थे। डॉक्टरों और मरीजों की आवाज डॉक्टर सहजानंद प्रसाद सिंह ने बिहार में आईएमए के सहयोग से भारत सरकार के 15 से अधिक राष्ट्रीय मेगा स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए हैं। डॉ. सिंह 'आओ गांव चलें', 'बेटी बचाओ', 'स्तनपान', 'एड्स / एचआईवी', 'तपेदिक' और 'कुष्ठ रोग' नियंत्रण जैसे आइओए के सभी सामाजिक-

चिकित्सा कार्यक्रमों में आगे बढ़कर भागीदारी करते रहे हैं। उनके नेतृत्व में बिहार में कई बाढ़ राहत शिविर और नेत्र शिविर आयोजित किए गए। डॉ. सिंह स्वास्थ्य नीतियां बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में सरकार के साथ सहयोग करते हैं, लेकिन जब भी उन्हें लगता है कि ये नीतियां चिकित्सा पेशे और आम लोगों के पक्ष में नहीं हैं तो वह विरोध की आवाज उठाते हैं। डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह कई वर्षों से मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य हैं। वे बिहार काउंसिल ऑफ मेडिकल रजिस्ट्रेशन

के सदस्य और रजिस्ट्रार हैं और उन्होंने चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता, नैतिकता और व्यवहार को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत की है। डॉ. सिंह तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर की सीनेट और बिहार रेड क्रॉस सोसाइटी के भी सदस्य हैं।

डॉ. सिंह लायंस क्लब के अध्यक्ष रह चुके हैं। इसके अलावा उन्हें सर्वश्रेष्ठ आईएमए सचिव पुरस्कार, राष्ट्रपति प्रशंसा पुरस्कार, चिकित्सा रत्न पुरस्कार (2006),



भारत ज्योति अवार्ड (2009) और आईएमए कॉलेज ऑफ जनरल प्रैक्टिशनर्स के सर्वश्रेष्ठ राज्य फैकल्टी से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें बिहार और देश की कई आईएमए शाखाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। मंगलौर के मणिपाल विश्वविद्यालय ने भी उनका सम्मान किया है। डॉ. सिंह नालंदा मेडिकल कॉलेज छात्र संघ के सचिव और नालंदा मेडिकल कॉलेज एलुमनी एसोसिएशन के सचिव/संरक्षक रहे हैं। गरीबों के चिकित्सक डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह डॉक्टर परामर्श और शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं के लिए बहुत ही कम फीस लेते हैं। उनके क्लिनिक पर हर दिन गरीब और ग्रामीण लोगों की भारी भीड़ देखी जा सकती है जो उनसे इलाज करवाकर उन्हें आशीर्वाद देती हैं। उनके बच्चे भी डॉक्टर हैं और उन्होंने उनमें उसी संस्कृति और दर्शन को विकसित किया है। उनका एक बेटा यूरोलॉजिस्ट और जनरल लेप्रोस्कोपिक सर्जन और दूसरा ऑर्थोपेडिक सर्जन है। उनकी बहुएं ईएनटी और रेडियोलॉजी की विशेषज्ञ हैं। उनके बच्चे भी उसी तरह से गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करते हैं जैसे डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह करते हैं।

डॉ. बी.सी. रॉय अवार्ड फंड की प्रबंध समिति ने डॉ. सहजानंद प्रसाद सिंह की सेवाओं और उनके किए कार्य की सराहना की है और उनकी सेवाओं को देखते हुए वर्ष 2017 के लिए 'सामाजिक चिकित्सा राहत में उत्कृष्ट सेवा' श्रेणी के तहत उन्हें पुरस्कृत किया है। देश की प्रतिष्ठित पत्रिका *आउटलुक* ने उनकी उपलब्धियों को मान्यता देते हुए उन्हें वर्ष 2018 में 'आइकन ऑफ बिहार' अवार्ड प्रदान किया।



